ग्रन्थकार–परिचय

जाके प्रानन संग प्रेम की पीड़ा आई।
प्रानन ही में रमी कछुक नैनन में छाई ।।
पीड़ा ही में प्राणनाथ के दरशन पाये।
जुग-जुग के प्यासे नैना छवि देखि सिहाये ।।
सह्यो सराहि-सराहि कै, कठिन प्रेम की पीर।
बिक जान्यौ बिनु मोल ही हित भोरी मति धीर ।।

श्री भोलानाथ जी का जन्म वर्तमान मध्य प्रदेश के भेलसा नगर में संवत् १९४७ के आषाढ़ कृष्णा ६ को हुआ था। भगवत मुदित जी के रसिक अनन्यमाल में गोस्वामी दामोदरवर जी (सं० १६३४-१७१४) के शिष्य जिन रसिकदास जी का चरित्र दिया हुआ है, वे भेलसा के ही रहने वाले थे और आज भी वहाँ इस सम्प्रदाय के अनेक अनुयायी विद्यमान हैं।

भोलानाथ जी के पिता का नाम छेदालाल जी था। वे सक्सेना कायस्थ थे। इनके एक भाई बैजनाथ जी सब-जज हो गये थे और दूसरे शम्भूनाथ जी वकील थे। भोलानाथ जी को बाल्यकाल से ही भगवत-प्राप्ति की धुन थी और किशोरावस्था में ही वे योग्य गुरु की खोज में घर से निकल पड़े थे। उस समय उनके बड़े भाई बैजनाथ जी कोलारस, जिला शिवपुरी में नाजिर थे। दस-बारह दिन की खोज के बाद भोलानाथ जी नरसिंहपुर जिले के जंगलों में भटकते हुए मिले और अपने भाई के पास कोलारस लाये गये। बैजनाथ जी ने उनको कोलारस के गोपालजी के मन्दिर के अन्यतम सेवाधिकारी पण्डित गोपीलाल जी से श्री राधावल्लभीय सम्प्रदाय की दीक्षा दिलवा दी। अपने गुरु की आज्ञा से उन्होंने गृहस्थ जीवन व्यतीत करना स्वीकार कर लिया और विवाह करने को सहमत हो गये।

भोलानाथ जी ने प्रारम्भ में, मट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की और फिर बजरंगगढ़ में अध्यापक हो गये। अध्यापन कार्य करते हुए उन्होंने इण्टर और बी. ए. पास किया। इसी काल में उन्होंने अखिल भारतीय रामायण प्रतियोगिता में भाग लेकर 'मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम' शीर्षक निबन्ध लिखा और उस पर प्रथम पुरुस्कार प्राप्त किया।

उनकी प्रतिभा से आकृष्ट होकर छतरपुर नरेश राजा विश्वनाथ सिंह जी ने उनको अपने पास बुला लिया और वहाँ वे कई वर्ष तक राजा साहब के धार्मिक परामर्शदाता के रूप में काम करते रहे। अधिकांश समय एकान्त भजन एवं पद रचना और निर्दिष्ट समय पर राजा साहब के पास जाकर धार्मिक चर्चा करना, यही उनका वहाँ कार्य था। राजा विश्वनाथ सिंह प्राचीन ग्रन्थों के प्रसिद्ध संग्राहक थे और उन्होंने राधावल्लभीय

वाणी ग्रन्थों का भी अच्छा संग्रह अपने पास कर लिया था। भोलानाथ जी को छतरपुर में रहते हुए अध्ययन का बड़ा संयोग मिला और उन्होंने उस काल में वाणियों के साथ विभिन्न भारतीय दर्शनों का भी विस्तृत अनुशीलन कर लिया। वहाँ रहते हुए ही उन्होंने वकालत पढ़ी और कुछ दिन बाद राज्य की नौकरी छोड़ कर भेलसा चले गये।

भेलसा में कुछ दिन वकालत करने के बाद वे कोलारस गये और वहाँ अपने भाई के पास रहकर वकालत करनी चाही किन्तु उनका मन नहीं लगा और राजा साहब के निमन्त्रण पर पुनः छतरपुर चले गये। इस बीच उनके पुत्र और पत्नी का देहान्त हो गया और थोड़े दिन बाद उनके पिताजी भी चल बसे। अब उनका कोई गार्हस्थिक बन्धन शेष नहीं रह गया और वे वृन्दावन आकर यहाँ स्थाई रूप से निवास करने लगे।

वृन्दावन में कुछ दिनों तक तो इनके भाई शम्भुनाथ जी इनको खर्च भेजते रहे किन्तु अल्प काल में भाई का भी देहान्त हो गया और उनसे प्राप्त होनेवाली आर्थिक सहायता बन्द हो गई। इस स्थिति में पड़कर कुछ दिनों तक भोलानाथ जी ने सेवाकुञ्ज में बन्दरों के द्वारा छोड़ी हुई चने की ठुड्डियाँ चबाकर जीवन यापन किया और शान्ति पूर्वक भजन करते रहे। बाद में श्रीराधावल्लभ जी के मन्दिर में उनके रहने और भोजन का प्रबन्ध होगया और यहीं उन्होंने ४२ वर्ष की अल्पायु में आषाढ़ शुक्ला ६, सं० १९८९ को निकुञ्ज-गमन किया।

हम कह चुके हैं कि भोलानाथ जी वृन्दावन आने से पूर्व भी पद रचना करते थे और उनके उस काल के लगभग ६०० पद लेखक को कोलारस से प्राप्त हुए हैं। इनमें से अधिकांश पद 'विनय' के हैं और इनमें एक सच्चे भक्त हृदय की महान आकुलता भरी हुई है। वृन्दावन निवास काल के पद अधिक प्रौढ़ और शान्त हैं। किन्तु प्रेम की नैसर्गिक पीड़ा उनमें भी व्यक्त हुई है। राधावल्लभीय सम्प्रदाय में नित्य संयोग की उपासना है किंतु उसके साथ पूर्ण अतृप्ति भी विद्यमान रहती है। भोलानाथ जी के पदों में यह अतृप्ति उभर आई है और इसी ने उनके पदों में पीड़ा की गहरी छाया डाल दी है।

पद रचना के अतिरिक्त भोलानाथ जी ने वृन्दावन में दो बड़े ग्रन्थों की भी रचना की जिनमें से एक 'सुधर्म बोधिनी' की विपुल टीका है और दूसरा ब्रह्म सूत्र पर हिन्दी में भाष्य है।

※ श्रीहित राधावल्लभो जयति ※

।। श्रीहित हरिवंशचन्द्रो जयति ।।

श्री गुरु वन्दना

रस घन गुरु पादा: व्यास पुत्रस्तथैव,
जयति रसिक नाथो राधिका वल्लभश्च ।
वन हिम कर मुख्यो नाद बिन्दु स्वरूप:
रसिक-नृपति-वंशो मे गतिः सर्वदास्तु ।।

।। दोहा ।।

मेरे जीवन प्राण धन, श्री गुरु चरण सरोज ।
ध्यान धरत प्रगटत हृदय, दम्पति केलि मनोज ।।१।।
गुरु पद नख की चाँदनी, मेटत भव अँधियार ।
कोटि - कोटि चिन्तामणी, जिन पर डारौं वार ।।२।।
भली - भली सब लेत हैं, वस्तु परखि कै ठीक ।
खोटे दास अनाथ के, तुम ही गाहक नीक ।।३।।
श्री राधा जानूँ नहीं, नहिं जानूँ घनश्याम ।
तव पद पङ्कज बिन कहूँ, मोहि न सूझत ठाम ।।४।।
श्रीजी सन्मुख कहत जे, विनय गीत प्रति द्यौस ।
तेई इत संग्रह करों, करुणा कोर भरोस ।।५।।
श्री गुरु गोपीलाल मम, श्री गोवर्धन लाल ।
इष्ट देव हरिवंश हित, पोच पतित प्रतिपाल ।।६।।

(७)

श्री गुरु चरण रेणु बलि जाऊँ ।
श्रीहित रूप प्रकट गोवर्धन लाल, चरण युग पंकज ध्याऊँ ।
तुमसों मोहि मचलिबौ अब तौ, ज्यौं त्यों श्री हित दर्शन पाऊँ ।।
भरि-भरि नयन माधुरी पी-पी, मत्त मुदित बलिहारी जाऊँ ।
भोरी हित कृपाल करुणा निधि, तुम बिनु और न दूजौ ठाऊँ ।।

(८)

श्री गुरु चरण रेणु चित लाऊँ ।
श्री हित गोपीलाल कृपा पर, बार - बार बलि जाऊँ ।।
पामर पोच पतित अति दुखिया, तुम्हरौ तदपि कहाऊँ ।
कबहूँ चरण कमल की महिमा, निरखि-निरखि सचु पाऊँ ।।
श्री हरिवंश कृपालु दरस कौं, बार - बार ललचाऊँ ।
कौन भाँति भरि नयन देखि कैं, दुर्बल बाँह गहाऊँ ।।
तुम्हरौ बल हियरा में मेरे, तुम्हें पुकारि सुनाऊँ ।
भोरी हित जग विदित रावरौ, पोच निबाहन पाऊँ ।।

श्रीहित हरिवंश वन्दना

(९)

जय-जय श्री हरिवंश गुसाईं ।
जय मोहन कर कमल युगल पर, वेणु रूप श्रुति गाई ।।
जय-जय लीला ललित मनोहर, मानस राज मराला ।
जय सुख सागर रूप उजागर, कारण रहित कृपाला ।।
आरति हरण शरण सुख दायक, करुणा सिन्धु दयाला ।
जय-जय-अधम उधारण रसनिधि, रसिक सभा प्रतिपाला ।।
जय शरणागत वत्सल हित वपु, रहसि केलि विस्तारी ।
माया मानुष रूप मनोहर, हरण मोह भ्रम भारी ।।

अशरण शरण सहज करुणानिधि, राधा चरण उपासी ।
राधा प्राण देह तन सरबस, कुञ्ज केलि सुख रासी ।।
जद्यपि मोहन अधर सुधा रस, पान करत सुख पाई ।
तद्यपि राधा नाम रटत नित, गुप्त रीति प्रगटाई ।।
महिमा अमित कहा मुख वरणौं, शारद पार न पावैं ।
हौं तो चरण शरण करुणानिधि, तासौं कछु कहि आवैं ।।
यह जानत हौं अवसि कृपा करि, कबहूँ पार लगै हौ ।
यह माँगत दै दरशन कबहुँक, हँसि - हँसि जूठन दैहौ ।।
तब जो करो भलो सो सबही, अब तौ यह मन भावैं ।
भोरी जूठन खाइ उदर भरि, बैठि विमल गुन गावैं ।।

(१०)

और न राधा, श्याम न दूजे ।
सब विधि दोउ प्रसन्न करुणानिधि, श्रीहरिवंश चरण रज पूजे ।।
प्रीति रीति बिनु व्याकुल भोरी, ठौर ठीक नहिं अब कहुँ सूझै ।
व्यास सुवन बिनु को अस दुजौ, जो अब पीर हिये की बूझै ।।

(११)

का जानों कब भाग जागि है ।
श्री हरिवंश चरण रज उर धरि, जुगल रूप रस पागि है ।
रसिकन सों नित मिलबौ-जुलबौ, विमुख संग हठ त्याग है ।।
बढ़ि है नित उर मिलन चटपटी, चरण कमल अनुरागि है ।
भोरी रसिक कृपा सों कबहूँ, प्रीति अनोखी लागि है ।।

(१२)

ऐसी तुमहिं कि बूझिये हरिवंश कृपाला
हौं तो लगी चरण से, उर आस विशाला ।।
अवलम्ब इक तिहारौ, कोऊ न और मेरौ ।
पुण्य नहीं गाँठ कछू, पाप तौ घनेरौ ।।

जो कछु अब होइ-होइ, हौं न कछू मागौं ।
ऐसौ मन मेरौ करौ, चरणन अनुरागौं ।।
रिपु सम सब लगै जगत, पंकज पग प्यारे ।
दिन तौ कटै गुणन गनत, रात गिनत तारे ।।
जुगल मिलन चटपटी, उर में अधिकावै ।
असन बसन जगतप्रीति, नेक ना सुहावै ।।
सहज कृपा सिंधु बेगि, मेटहु भव भारी ।
भोरी हिय प्रेम देहु, चरणन बलिहारी ।।

(१३)

क्यौं न द्रवहु हरिवंश कृपाला ।
बहुत बेर भई करत बीनती, आरत हरण दयाला ।।
हौं तौ दामन लगी तिहारे, सुनहु अधम प्रतिपाला ।
भोरी बलि अब वेर न कीजिय, तन मन होत बिहाला ।।

(१४)

व्यास कुँवर हँसि कहौ लाड़िले, यह कैसे बनि आवै ।
शिव सनकादि विष्णु ब्रह्मादिक, जेहि पद रज सिर लावै ।।
सो मोहन जेहि मुख रस बतियां, सुनिवे नित ललचावै ।
किस विधि सो कृपालु अलवेली, हँसि मोसौं बतरावै ।।
पापी अधम पतित अति खोटी, तौहू धीर न आवै ।
भोरी की यह भोरी आसा, तुम बिन कौन पुजावै ।।

(१५)

उमड़त रस पयोधि अँखियन में ।
श्रीहित सखी कृपाल सुनों अब, तुम तौ श्रेष्ठ सभी सखियन में ।।
सब पर सहज कृपा रस बरसत, कृपा सुदृष्टि कनखियन में ।
क्यों न पुकार सुनों, रस प्यासी भोरी टेर रही दुखियन में ।।

(१६)

श्री हरिवंश कृपा बलि कीजै ।
निज सरबस भरि नयन दिखावहु, मो सरबस सब लीजै ।।
ऐसो मो हिय करहु कृपानिधि, छिन-छिन उमगि पसीजै ।
बिनु देखे पल धीर न आवै, विरह ताप तन छीजै ।।
लोचन छके रहैं वा मुख पै, हियौ रंग सों भीजै ।
बिनु हित बदन न और सुहावै, नित नव माधुरि पीजै ।।
तुम बिनु कछु न सुनै नहिं देखै, देख-देख छवि जीजै ।
भोरी दीन दुखारी याचक, रीझ दान यह दीजै ।।

(१७)

श्री हरिवंश चरन चित धरि हौं ।
तुम्हरे बल कृपाल करुणा निधि, सब ही शंक बिसरि हौं ।
कबहूँ भाग जगैं हौ ऐसे, उमगत पाँव पकरि हौं ।।
मत्त मुदित डोलत रस छाको, सब की लाज निदरि हौं ।
भोरी हित बल चरण कमल के, गरजत-गरजत मरि हौं ।।

(१८)

ऐसी हौंस बढ़त उर माहीं ।
हित हरिवंश कृपालु कृपानिधि, कबहुँ गहौ हँसि बाहीं ।।
जद्यपि पोच पतित शठ मोसौ, दूजौ त्रिभुवन नाहीं ।
गरजत तदपि फिरौंगी निर्भय, पग पंकज की छाहीं ।।
त्रिभुवन वैभव तृनलौं गनिहौं, शिव अज भाग सराहीं ।
भोरी हित पद कंज गहे बिनु, जीवन जनम वृथाहीं ।।

(१९)

हौं हरिवंश के द्वार डरी ।
काहू के न उठाये उठि हौं, इन सों मचल परी ।।
कोटि जन्म लगि रगर कृपानिधि, हौं हठ करि जु अरी ।

बनिहै जो पै बनैहौ तुम ही, बात नतर बिगरी ।।
काहू सों नहिं काज कछू अब, हौं जु भई तुम्हरी ।
भोरी हित रस प्यासो याचक, विलपत द्वार खरी ।।

श्री राधावल्लभ लाल

(२०)

श्री राधावल्लभ रंग भरे लाल ।
कबहूँ मोहि कृपा करि हेरौ, चरण शरण प्रतिपाल ।।
कबहूँ हरौ हृदय कठिनाई, कोमल चित्त कृपाल ।
ऐसी प्रीति हिये में दीजै, जरहुँ विरह की ज्वाल ।।
त्रिभुवन विदित किशोर-किशोरी, परम उदार दयाल ।
भोरी हृदय प्रीति हँसि दीजै, विलपत द्वार विहाल ।।

(२१)

जय-जय राधावल्लभ रसिक रसीले ।
कोटि मदन-मन-मथन मनोहर, राका कोटि चन्द्र शरमीले ।।
करुणा धाम किशोर कृपानिधि, रसिक शिरोमणि रंग रँगीले ।
युगल एक वपु दुगुणित शोभा, कृपा अपार छबीले ।।
हित हरिवंश लाड़िले प्यारे, दीन जनन के दिल दरदीले ।
भोरी ओर कृपा करि हेरौ, चरण शरण की लाज लजीले ।।

(२२)

मेघ श्याम मुकुन्द कृपाला ।
मधुर-मधुर आनन्द मूर्ति तुम, छवि निधि रूप रसाला ।
गाढ़ो प्रीति हिये में दीजै, करुणा सिंधु दयाला ।।
प्रिय पद दरश चटपटी लागै, बाढ़ै विरह विशाला ।
भोरी श्री हरिवंश वचन बल, याचत तोहि गुपाला ।।

(२३)

कोमल चित मन मोहन, कबहू मेरी सुरति करैहौ ।
सहज कृपाल दयानिधि प्यारे, जब-तब अवसर पैहौ ।
सहज द्रवन की बान सदा हो, दिल दरदीले कहैहौ ।।
आरत हरण दीन दुखिया की, बिनय सुनत चित लैहौ ।
भोरी बलि-बलि जाइ चरण पै, सोयो भाग जगैहौ ।।

(२४)

सुन्दर मोहन रसिक रसीले ।
अखिल लोक चूड़ामणि प्यारे, कोटि कलानिधि बदन छबीले ।।
ब्रह्मा विष्णु शंभु सनकादिक, महिमा रहे बिचार बिचारी ।
हारे वेद पुराण शास्त्र सब, गुनगन गिनत न पावत पारी ।।
परब्रह्म परमारथ प्यारे, मुरलीधर कृपाल रस दानी ।
अधम उधारण रसिक शिरोमणि, प्यारी चरण सहज रति मानी ।।
शीश किरीट श्रवन मनि कुंडल, पीताम्बर ओढ़ै चटकीलौ ।
नीलाम्बुद सुन्दर तन प्यारे, चंचल चितवन चारु हँसीलौ ।।
भोरी भाल कु अंक मिटावौ, प्रणत पाल दिल के दरदीले ।
नव-नव नेह प्रिया पद दीजै, चतुर मुकुट मणि रंग रँगीले ।।

(२५)

श्री हरिवंश किशोर तिहारे नयन कृपा रस बरसै ।
जिहि दिस छिन करि कृपा विलोकौ, हृदय प्रेम रस सरसै ।।
कारण रहित कृपा पतितन पै, हिये माधुरी दरसै ।
कठिन अभाग कौन विधि कहिये, भोरी अब लग तरसै ।।

(२६)

श्री हरिवंश किशोर लाड़ले तुम सौं भाँवर पारी ।
तुम्हरे संग कटी सब जग ते सब विधि भई तिहारी ।।
अब तौ काज न कछु काहू सों लोक-लोक सों न्यारी ।
त्रिभुवन चरण कमल पर वारौं कोटि प्राण बलिहारी ।।

तुम बिनु को मम आस पुजावै कहिहौं काहि पुकारी ।
जो रुचि होइ करौ करुणानिधि मैं मुख कहौं कहारी ।।
पोच प्राण की भेंट चढ़ावत, लाज लगत अति भारी ।
दृग भरि रूप माधुरी पीवौं माँगत गोद पसारी ।।
नातर गाढ़ी पीर विरह की, मिलन चटपटी भारी ।
बन-बन देहु भटकिबौ भोरी, टेरत नाम सदारी ।।

(२७)

हित हरिवंश किशोर लाड़िले, तुम्हरे द्वार अरी ।
टारे टरत न बरजौ मानत, तुम सौं मचल परी ।
कब की रूप माधुरी प्यासी, टेरत द्वार खरी ।।
लै लै नाम विनय बहु भाखी, भनक न कान परी ।
अब तौ ठान लई वरु जन्मन, बिनती करहुँ ररी ।।
तुम सों रगर जन्म कोटिन लगि, आस एक तुम्हरी ।
जो कछु होइ सु होइ कृपानिधि, रहि हों द्वार डरी ।।
तुम पर मोहि फकीरिन हौनौ, टेक यही हमरी ।
भोरी श्री हरिवंश स्वामिनी, कृपा पियूष भरी ।।

(२८)

कबहूँ मोहि उमगि अपनैहौ ।
हित हरिवंश किशोर लाड़िले कब ढिग टेर बुलैहौ ।
सजल पौंछि दृग बाँह पकरि कै मन्द-मन्द मुसिकैहौ ।।
पूछत कुशल कृपाल लाड़िले हिय कौ शूल मिटैहौ ।
रँग भरौ रूप दिखै हौ नित-नित अँखियन माहि समैहौ ।।
दैहौ बास पांव पंकज में लोचन कोर चितैहौ ।
भोरी हित अति दीन दुखी की कब बिनती चित लैहौ ।।

(२९)

व्याकुल मन कबहूँ समुझावौ ।
हित हरिवंश किशोर कृपानिधि, सपने दरस दिखावौ ।
धीरज देहु अधीर दुखी कौं, सब ही शंक मिटावौ ।।
नातौ सत्य करौ अपने मुख, चरणन सुवस बसावौ ।
भोरी दीन दुखी याचक की, अब विनती चित लावौ ।।

(३०)

तुम्हरौ बल हिय मेरे रँगीले ।
मो सम पतित पोच नहिं कोऊ, तुम जैसे न वसीले ।
मो सम दीन दुखारी को है, तुम सम दिल दरदीले ।।
मो सम निलज न तुम सम प्यारे, निज जन लाज लजीले ।
भोरी हित शरणागत वत्सल, प्रिय पद रसिक रसीले ।।

(३१)

श्री हरिवंश किशोर लाड़िले, बिनती कबहुँ विचारौगे ।
दीन दुखी भुज गहन कृपानिधि, कोमल बाँह पसारौगे ।।
निज मुख सत्य करौगे नातौ, सूल हिये की टारौगे ।
सब विधि पामर नीच निबल अति, पोच पतित प्रतिपारौगे ।।
उमगत सहज कृपा कौ सागर, लै-लै नाम पुकारौगे ।
भोरी बिलपत द्वार दुखी तन, करुणा कोर निहारौगे ।।

श्री प्रिया वन्दना

(३२)

लटकि रहै मन लटकी लट सों ।
रंग भरौ छिन अनत न जावै, रंग भरे जमुना तट सों ।।
मान करत रँग भरी वधूटी, रंग भरे नागर नट सों ।
पिय कर जोर निहोरत भोरी, छ्वै-छ्वै चरण मुकट सों ।।

(३३)

महिमा अमित कही न परै ।
शिव अज पद रज चाहत जाकी, सो तेरे पाँव परै ।
एक सबल सर्वोपरि प्यारी, श्रुति नित सुयस ररै ।।
कोटि पतित पल-पल निस्तारत, सब भव ताप हरै ।
भोरी सठ की सब बनि आवै, जो छिन चित्त धरै ।।

(३४)

जयति नव नागरी, रूप छवि आगरी ।
कृपा चितवन भरी, नेह जल निधि हिलोरै ।।
जयति करुणा भरी, सहज सोभा भरी ।
मन्द मुसिकान में श्याम कौ चित्त चोरै ।।
जयति चन्द्राननी, सुधा-धारा धनी ।
माधुरी नित नई बरसि तिहुँ लोक बोरै ।।
जयति जग वन्दनी, हास मृदु चंदनी ।
जीति आधीन किये, श्याम नैना चकोरै ।।
जयति हित स्वामिनी, श्याम घन दामिनी ।
भोरी द्वारे खरी, याचती नैन कोरै ।।

(३५)

बिधे विलोचन चोर किशोरी,
मोहन चन्द्र चकोर किशोरी ।
बरबस विवस किये मन मोहन,
नेंक निरखि मुख मोरि किशोरी ।
त्रिभुवन मोहन मन अलि राखे,
कनक कमल कुच कोर किशोरी ।
पिय दृग चपल जुगल खग खंजन,
बाँधे अलकन डोर किशोरी ।
जय-जय नवल नागरी राधा,
बरसत प्रेम अथोर किशोरी ।

लाज लगत निज ओर निहारे,
कस देखहुँ तब ओर किशोरी।
देखहु मन की उमँगैं मेरी,
कैसी बढ़त बर जोर किशोरी।
इतनी विनय मानिये मेरी,
श्री हरिवंश किशोर किशोरी।
तोहि तजि मैं निज ओर न देखौं,
तुम तौ लखौ मम ओर किशोरी।
मो हिय तप्त कीजिये सीतल,
नेक सींच दृग कोर किशोरी।
मन कुरंग बन विषय भुलानौ,
दीजिय तेहि रंग बोर किशोरी।
मन मेरो बाँधि राखिये लट सों,
बिषय डोर सों छोर किशोरी।
जानी दृग कृपाल उमड़ेंगे,
बाढ़त कृपा हिलोर किशोरी।
हा कृपालु कब प्रगट दिखैहौ,
मुख मृदु मुसिकन थोर किशोरी।
भरि दृग देखि वारि कब डारौं,
कोटि प्राण तृण तोरि किशोरी।
ढरिहौ बान आपनी कबहूँ,
करिहौ भावती मोर किशोरी।
तेरे चरण कमल सों लागी,
हौंसें भोरी करोर किशोरी।

प्रिया स्वभाव

(३६)

नवल वयस योवन मतवारी ।
व्रज नव तरुणि कदंब नागरी, कृपा सिंधु सुकुमारी ।
रूप रुचिर अङ्ग-अङ्ग माधुरी, कोक कलानिधि प्यारी ।।
छिन-छिन कुशल सुधंग अङ्ग में, पोच पतित अधिकारी ।
मत्त करिनि गति ढरत किशोरी, अङ्ग-अङ्ग छवि न्यारी ।।
काहू भलै जानि नहिं पाई, श्री हित कृपा बिना री ।
भोरी हित जन्मन की याचक, ललकत गोद पसारी ।।

(३७)

पतित पावनी प्यारी हमारी ।
जब सुभाव हिय समझत तेरौ, हर्ष होत अति भारी ।।
पतित शिरोमणि मैं अघ खानी, तजत सुभाव न जैसे ।
त्रिभुवन विदित कृपालु स्वामिनी, आपुन तजिय कि तैसे ।।
हौं चलि हौं हठ पंथ नरक को, बरबस आइ बचैहौ ।
करि हौं पातक पुंज कोटि विधि, सकल मेटि मुसिकैहौ ।।
विषय पंक मोहि मग्न देखि कै, लैहौ दौरि उबारी ।
सहज कृपालु बान पर भोरी, बार - बार बलिहारी ।।

(३८)

सर्वोपरि म्हारी महरानी ।
जीत लियौ घनश्याम लाड़लौ, स्ववस एक रस दानी ।।
ललितादिक संग सखी सहचरी, वृन्दावन रज धानी ।
ब्रह्मा विष्णु शंभु सनकादिक, महिमा नेकु न जानी ।।
वेद पुराण सबै पचि हारे, श्री हरिवंश बखानी ।
भोरी ओर कृपा करि हेरौ, अलबेली ठकुरानी ।।

दिल दरदीली भानु दुलारी ।
कोमल चित्त सहज करुणानिधि, पोच निबाहन हारी ।।
जब-जब सुमिरत मृदुल सुभाऊ, हर्ष होत हिय भारी ।
कहा भयौ तजि शास्त्र वेद पथ, लोक रीति हठ टारी ।।
कहा भयौ जो सन्त जनन की, आयसु सीस न धारी ।
कहा भयौ नहिं भजन कियो जो, खोई आयु वृथा री ।।
कहा भयौ जम नरक द्वार पै, देखत बाट हमारी ।
कौन की शंक परी जो सिर पर, समरथ राखन हारी ।।
गरव गहेली अति अलबेली, अखिल लोक-पति प्यारी ।
भोरी तो बल गिनत न काहू, सोवत पाँव पसारी ।।

(४०)

तेरी नेह निबाह की बान सुहाई ।
छलिया ढीठ महारस लंपट, कपटी चोर कन्हाई ।।
तासों प्रीति की रीति निबाहत, नित नव नेह सवाई ।
यही कृपा के भरोसे भोरी, चरण शरण चलि आई ।।
युक्ति वचन सों विनती ठानी, ऊँचे टेर सुनाई ।
सो सुनि चितै लाल के मुख तन, श्यामा मृदु मुसिकाई ।।

(४१)

करुणाधाम कृपालु किशोरी ।
अधम उधारण पतित पावनी, कोमल चित नव गोरी ।।
आरत हरण दयालु दयानिधि, दृष्टि कृपा रस बोरी ।
सहज कृपालु दोष भय भंजन, बेगि लखौ दृग कोरी ।।
शरणागत प्रति पाल लाड़िली, सदा सुखद सबको री ।
भोरी भाग्य हीन पर तौहू, नहीं निठुरता थोरी ।।

(४२)

कोमल चित्त लाड़िली प्यारी ।
कपटी कुटिल सबै अपनावत, सहजहि भुजा पसारी ।।
गनत न अवगुण कोटि दयानिधि, कृपा सिंधु सुकुमारी ।

पातक पुंज कोटि जन्मन के, मेटत नेक निहारी ।।
सहज कृपा की बान सुहाई, सबकों सुखद सदारी ।
प्रीति रीति जानत दरदीली, अधम निबाहन हारी ।।
तेहि दै पीठ विषय मन दीन्हे, तकत धाम धन नारी ।
भोरी सठ उपजाइ जननि जड़, लाजन मरत बिचारी ।।

(४३)

जानत प्रीति की रीति किशोरी ।
कोमल चित कृपालु करुणा निधि, सदय हृदय ब्रज गोरी ।।
ताकौं त्यागि विषय मन दीन्हौ, जीवन यों ही गयौ री ।
कोटिक भाँति कुकर्म कमाये, छिन नहिं नाम जप्यौ री ।।
भोरी धृग-धृग वृथा मातु कौ, तव तारुण्य हरचौ री ।

(४४)

रूप भरी रँग भरी रँगीली ।
रसभरी गुणभरी भरी दया सौं, सुखभरी छबिसौं भरी छबीली ।।
भरी भाग अनुराग सुहागिन, लाज सँकोच भरी सरमीली ।
करुणा मृदुता भरी कृपा सौं, कोमलता सौं भरी रसीली ।।
गरब भरी वात्सल्य भरी री, नेह भरी जन दिल दरदीली ।
भोरी आरत टेर पुकारत, चरण शरण की लाज लजीली ।।

(४५)

कब मेरी सुधि करि हौ वृषभानु लड़ैती राधा ।
कोमल चित्त किशोरी प्यारी, करुणा सिंधु अगाधा ।।
अधम उधारणि पतित पावनी, हरन सकल भव बाधा ।
धर्म कर्म तजि कोटि पाप किय, साधन कछू न साधा ।।
टेर सुनत ऐसेहु पतितन की, विरमत नहिं पल आधा ।
भोरी अब सब भाँति भरोसौ, चरण कमल सौं बाँधा ।।

(४६)

कोमल चित्त स्वामिनी प्यारी ।
कोमल चित्त सहचरी आली, जे सँग रहत सदारी ।।

कोमल चित्त कृपालु लाड़िलौ, मोहन गिरवर धारी ।
कोमल चित्त श्री कीरति रानी, श्री वृषभान बबा री ।।
श्री हरिवंश सबहिं में कोमल, जस गावत श्रुति चारी ।
कोमल चित सब सिखवन हारे, कोमल चित सुकुंवारी ।।
तौहू इती निठुरता मोपै, यह इक अचरज भारी ।
कठिन अभाग्य मिटत नहिं भोरी, टेर - टेर कै हारी ।।

(४७)

कृपा सिंधु दृग लेत हिलोर ।
ऐसी कृपा करहु नित यह तनु, जरै विरह सौं मोर ।।
विरह विकल जब प्राण चलैं हठ, तन सौं नातौ तोर ।
सहज कृपालु उमगि चलि आवौ, बरषत कृपा अथोर ।।
सब तन ताप हरहु हँसि राखौ, सुधा माधुरी बोर ।
मुख मयंक मृदु हास चाँदनी, मम दृग करहु चकोर ।।
प्रेम मगन अटकी वा छबि पै, लखौं न काहू ओर ।
भोरी दीन द्वार पै ठाड़ी, याचत लोचन कोर ।।

(४८)

प्यारी मैं तो तिहारी दासी,
तरसत अजहुँ दरस की प्यासी ।
बार - बार लोचन अकुलावैं,
मन अधीर नहिं धीरज आवैं ।
अब तौ देहु कृपालु किशोरी,
सहज कृपा कर कुंज खवासी ।
निशि दिन बदन सरोज निहारौं,
सहज रूप पर तन मन वारौं ।
सपनेहुँ और न देखहुँ कोऊ,
चरण सरोज अनन्य उपासी ।

नैन बरस सुख निशि दिन लूटैं,
सहज प्रीति कौ तार न टूटै।
कौन की संक कीजिये भोरी,
सिर पर अलबेली राधा सी।

(४६)

सकुचत कहत कहावत दासी।
कहँ में अधम नीच अति पामर, कहँ तुम नवल निकुंज निवासी।।
निज कारण देखौं जग माहीं, नित सब करत रावरी हाँसी।
याही सोच जरत निज छाती, व्यापी रहत हृदय चिन्ता सी।।
भूषण भार असन विष लागत, सुखद सेज जनु जरत चिता सी।
भोरी दुख सब हरहु कृपानिधि, करि पद कंज अनन्य उपासी।।

श्री प्रिया-चरण कमल

सजल जलज सुन्दर प्यारी पद नीके,
साधन और लगत अति फीके।
सीतल मकरंद भरे सुख रस भीने,
श्याम मधुप जिन रस बस कीन्हे।
सुन्दर श्याम प्यारौ दावानल पीकें,
जियत आसरे मनु इनहीं के।
प्रेम विवस निसि दिन इनहि हिय लावें,
नाग राज विष ताप मिटावें।
चूमि - चूमि इनकौं इनके रस पाग्यौ,
तुरत पूतना विष सब भाग्यौ।
जब घुमड़ि मैन सैन बाँकी आवै,
तब मोहन शरण यहाँ पावै।
सुर तरु पतितन के अधमन उद्धारण,
मो अभाग्य मिटबे के कारण।

सरबस श्री हरि के दाता सब केरे,
आशा धन जीवन गति मेरे।
इतनौ नित टेर-टेर माँगै भोरी,
राखिये मोहि चरण रस बोरी।

(५१)

कौन भाग्य पद पंकज पावौं।
सजल जलज मृदु सुन्दर शीतल, उर धरि ताप बुझावौं॥
मृदु सहराय लाय हिय राखौं, हुलरावौं दुलरावौं।
दृग चकोर नख चंद महा छबि, माधुरी पान करावौं॥
दृग भरि-भरि अवलोकत निशिदिन, देह गेह बिसरावौं।
छोड़ौं बहुरि न कबहूँ भोरी, दृढ़ गहि हृदय बसावौं॥

(५२)

बड़े भाग्य पग पंकज पेखौं।
मुक्ति भुक्ति सुख-दुख सम लागैं, आपनि और न देखौं॥
डोलत मस्त दिवानी बन-बन, डगर-बगर नहिं पेखौं।
तन मन पल-पल वारौं भोरी, नित नव जोवन लेखौं॥

(५३)

जीवन सफल कमल पग पेखे।
कौन काज श्रुति मारग संजम, साधन बहुत परेखे॥
संपति भोग मुक्ति स्वर्गादिक, करि विचार सब देखे।
भोरी बिनु पद कंज छटा के, सपनेहु सुखद न लेखे॥

(५४)

चरण कमल पर तन मन वारौं।
कोटि कलप लगि छिन न बिसारौं, जो भरि नयन निहारौं॥
दृढ़ ले हिये बसावौं निसि दिन, मन की उमँग निकारौं।
भोरी छिन इक दरसन आसा, कोटि प्राण तजि डारौं॥

(५५)

अधम उधारण पद रज प्यारी ।
त्यों पद कंज, चंद नख तैसे, त्यौं नख चन्द छटा री ॥
मृदु मुसिकान मनोहर चितवन, अङ्ग-अङ्ग द्युति न्यारी ।
कोटि पतित पल पार लगावत, राधा नाम सदारी ॥
जेते पतित उधारन सिर पर, गिनत-गिनत हठ हारी ।
भोरी जो अब भव निधि डूबै, तौ इक अचरज भारी ॥

(५६)

सो पद कमल छटा मन भावै ।
जेहि पद कंज महावर दैवे, मोहन नित ललचावै ॥
जेहि पद कंज हिये धर गोपी, रसिक प्राण पति पाये ।
जे पद कोमल कमल मनोहर, रहत रसिक चितलाये ॥
जे पद मोहन प्राण जीवन धन, चाँपत नित हिय लाई ।
जे पद धरि-धरि मुकुट लाड़िले, मानिनि मान मनाई ॥
जिन पद रज ब्रह्मादिक जाँचत, बड़े भाग जो पावैं ।
जिन पद नख की विमल चाँदनी, हिय कौ तिमिर नसावैं ॥
जे पद कमल रास में प्यारी, नव-नव गति प्रगटावैं ।
जिन पद लोभ रसिक जग-सम्पति, श्रुति पथ चित्त न लावैं ॥
जे पद पंकज हिये धरि प्यारी, मन्मथ ताप निवारै ।
सेवत नित हरिवंश चरण जे, सुभग सिंगार सिंगारै ॥
ते पद नूपुर-कलरव संयुत, जीवन धन नित मेरे ।
भोरी जो छिन एक दिखावौ, वारौं प्रान घनेरे ॥

(५७)

कोटिक प्राण चरण पर वारौं ।
कैसे हैं सो चरण लाड़िली, सपने नेंक निहारौं ॥
त्रिभुवन सोभा धाम लाड़िले, जेहि नित हिये लगावैं ।
कैसे सीतल सजल जलज सो, तेरे चरण सुहावैं ॥

श्रीहरिवंश स्व सरबस भाख्यौ, अधिक प्राण ते प्यारे ।
पिय दृग अटक रहे जहँ प्यारी, सो शुभ चरण तिहारे ॥
शिव श्रीहरि अज पद रज चाही, गोपिन सिर पर धारे ।
कैसे सरस चरण सो प्यारी, नित रस बरसत हारे ॥
श्रवनन सुनत लगत अति प्यारे देखन दृग ललचावै ।
भोरी कृपा करहु अलबेली, बार-बार बलि जावैं ॥

श्री प्रिया कर कमल

तेहि कर छाँह राखिवै प्यारी ।
जेहि कर पिय कर पेलहु मानिनि, मान भरी सुकुमारी ॥
जेहि कर लिये रंग पिचकारी, रँग भरी खेलत होरी ।
जेहि कर कमल लाल की प्यारी, हँसत मुरलिया चोरी ॥
गिरत नागरी दास जौन कर, रोक लिये रँग भीने ।
जिहि कर, कर गहि रस बस मोहन खैंचि भुजा भर लीन्हे ॥
जेहि कर कमल कृपा कर बाँधत, पिय सिर मुकुट सँभारी ।
जेहि कर कंज धरत अंसन पै, पुलकत कुञ्ज बिहारी ॥
जेहि कर कमल करत जल केली, जल कन अधिक उड़ावैं ।
जेहि कर कमल फेरि करुणानिधि, निज गुन शुकन पढ़ावैं ॥
जेहि कर बैठि जुगल कुच पिय कौं, रस बस चित्र बनावैं ।
तेहि कर मोहि कृपालु किशोरी, बांह पकरि अपनावैं ॥
बार-बार हठ बिनती ठानौं, विलग भये दुख पावौं ।
भोरी बेगि कृपा अब कीजे, चरण कमल बलि जावौं ॥

(५६)

जलज-दाम सुन्दर भुज प्यारी ।
जिहि भुज बाँधि जीति बस कीन्हे, मोहन गिरवर धारी ॥
सकल लोक चूड़ामणि प्यारौ, सो भयौ आज्ञाकारी ।
सहज प्रीति की डोर बँध्यौ नित, डोलत रहत पिछारी ॥

सो ऐसी भुज परम मनोहर, केहि विधि देखिय प्यारी ।
याही सोच जरत निज छाती, दृग ललचात सदारी ।।
ऐसौ भाग्य कौन दिन जागै, रहत बिचार बिचारी ।
भोरी प्यारी कुञ्जन डोलै, भुजा कण्ठ सोई डारी ।।

(६०)

सुधि करत कमल कर पोरन की ।
वीणा कर लै ग्रीव ढुरैबौ, भरि-भरि तान झकोरन की ।
भौंह विलास तिरीछी चितवन, हँसि-हँसि पिय चित चोरन की।।
आनन्द कन्द मन्द मुख हाँसी, पिय मुख चन्द चकोरन की ।
तन मन अति अकुलात किशोरी, भोरी बलि दृग कोरन की ।।

(६१)

रँग भरे कोमल अँगुरिन पोरैं ।
जो गड़ि रहे श्याम हियरा में, रस बस लेत हिलोरैं ।
नख उजियार कौंध दृग चौंधत, दीप लियें चित चोरैं ।।
परम निशंक करत मन भायौ, निगम श्रृङ्खला तोरैं ।
शिव अज मति परसत हू नाहीं, छबि बरनैं कवि कोरैं ।।
देखैं एक श्याम नैना भरि, सो देखत भये बौरैं ।
काहू भाँति भेद नहिं पायौ, अमित जतन करि छोरैं ।।
सुधि-बुधि सकल चतुरई हारे, नव मधु छके झकोरैं ।
चञ्चल मधुर अरुण अति कोमल, मनौ प्रेम रँग बोरैं ।।
हौं अति पतित तदपि करुणानिधि, इनकी आसा मोरैं ।
भोरी हित कब तलक बिलोकौं, टेरत अपनी ओरैं ।।

श्री प्रिया मुख-कमल

प्यारी तेरौ मुख चन्द नयौरी ।
कैसौ सो शशि जाहि देखि कैं, हरि दृग भये चकोरी ।।
तीन लोक इक मदन किये बस, सहज चाप टंकोरी ।

कोटि मदन बल दलन मनोहर, सो यह जीत लयौरी ।।
ललकत दृग छिन दरसन आसा, करुणा धाम किशोरी ।
एक झलक हँसि नेंक दिखावौ, बार-बार बलि भोरी ।।

(६३)

हँसि-हँसि मोहि किन घायल कीजं ।
जोपै इतनी कृपा कृपानिधि, तौ यह मांगे दीजं ।
छिन इक भरि-भरि लोचन प्यारी रूप माधुरी पीजं ।।
पुनि निशिवासर विरह तापसौं, यह तनु पल-पल छीजं ।
भोरी सहज कृपाल किशोरी, अब बिलम्ब नहिं कीजं ।।

(६४)

तुमने आज लों बात न पूछी, को द्वारे चिल्लात न पूछी ।
जीवन बीत्यौ गोद पसारे, कहा लोभ ललचात न पूछी ।।
मैं नित हौंस मरी कहिवे की, हँसि कबहू कुसलात न पूछी ।
कोटि उपाय किये पै तुमने, का सोचत दिन रात न पूछी ।।
दृग-सर घाव फूलि कं सहिवे, कस हियरा अकुलात न पूछी ।
नित प्रति कुटिल अलक में फँसिवे,कस लोचन ललचात न पूछी ।।
कंसे कटत दिवस-निशि तेरे, का दुख सूखत गात न पूछी ।
भोरी दीन दुखी आरत सौं, बिहँसि हृदय की बात न पूछी ।।

(६५)

अधर मधुर राजत मुसिकान ।
कुञ्ज भवन बंठी अलबेली, कुल दीपक वृषभान ।
रँग भरे नयन, रँग भरयौ आनन, रँग भीजी बतरान ।।
रँग भरे श्याम चन्द्र मुख हेरत, करत सुधारस पान ।
भोरी याचक विलपत द्वारे, हा-हा कृपा निधान ।।

(६६)

ठग मुसिकान चोर चित केरी ।
लूट लेत हित सरबस बरबस, ऐसे चोर सुनेरी ।।

दन्त कौमुदी जग विस्तारत, चाँदनी चारु घनेरी ।
तेहि प्रकास तम हरन हरत मन, ढीठ निसंक बड़ेरी ।।
तिहूँपुर बान विदित यह इनकी, मैं नित लटकत टेरी ।
भोरी हित चित चोरत क्यों ना, दीन दुखी की बेरी ।।

(६७)

सुन्दर बदन मन्द मृदु हँसिबौ ।
छिन इक भरि दृग देखन दीजै, हिल-मिल सुधा बरसिबौ ।।
श्याम गौर भुज केलि परसपर, नयन-नयन में फँसिबौ ।
भोरी हित छिन देखन ललकत, भुज भरि हिये हुलसिबौ ।।

श्री प्रिया नयन–कमल

नयनन सो नित देखिबौ कीजै ।
कर सौं चरण सरोरुह चाँपत, श्रवन माधुरी पीजै ।
नयन पुतरि लौं चखन बसैये, लाय-लाय हिय लीजै ।
असन बसन सुधि-बुधि परिहरिये, देखि-देखि कै जीजै ।
भोरी विमल युगल छबि ऊपर, बारि-बारि जल पीजै ।

(६९)

नैनन कोटि मनोज बसाये ।
ना मानहु मोहन सों बूझहू, जिन्हें जीत कै आये ।
चंचल भौंह भाल पर राखीं, करत सदा मन भाये ।
ठग मुसिकान ओंठ पर राजत, मन हर लेत पराये ।
औरहु मुख का कहौं किशोरी, अंग-अंग चोर सुहाये ।
चञ्चल चपल चोर मन मेरौ, रुकत न कोटि उपाये ।
भोरी घटत कहा करुणानिधि, एक याहि अपनाये ।

(७०)

सुधि करत कमल दल लोचन की ।
लाज छकी महि ओर विलोकन, नई-नई भेंट सकोचन की ।।

रूप छकी छकि द्वार रहन की, कर गहि ढिग लैजैबे की ।
कुसुम सेज पै नवल लाल ढिग, हठ कर लाइ बिठैबे की ।।
कहि-कहि मृदु बतियाँ रस भींजी, अधिक प्रेम सरसैवे की ।
रस सौं रसिक रसीली स्वामिनि, हँसि हँसि तोहि हँसैबे की ।।
कुञ्जरंध्र तोहि देखन हू की, नूपुर धुनि सचु पैवे की ।
कहँ लौं कहौं किशोरी प्यारी, मुख सों कछू न कहिवे की ।।
तरसत दरस लालची लोचन, हौंस बढ़त कहुँ पैवे की ।
प्रगट कृपालु करहु किन बातें, भोरी आस पुजैवे की ।।

(७१)

वा चितवन पर तन मन दीजै ।
बरसत सहज कृपा रस धारा, भृकुटी कुटिल नयन रस भीजै ।।
तोरि-तोरि तृन त्रिभुवन बारिय, पी-पी रूप माधुरी जीजै ।
भोरी कौन भाग्य सौं प्यारी, रँग भरी नयन कोर तेरी लीजै ।।

(७२)

सो दृग कब गड़ि हैं उर मेरे ।
जिनकी कोर ललित लीला सौं, उपजत छिन-छिन मदन घनेरे ।।
जिनके हाथ बिकाने मोहन, परम प्रवीन भये तेरे चेरे ।
जे नित अधमन पै रस बरसत, सहज कृपा रस सौं उमड़ेरे ।।
जे नित सोयौ भाग जगावत, भाल कु अंक मिटत जिन हेरे ।
भोरी कौ यह भाग्य कृपानिधि, फिर है एक इन्हीं के फेरे ।।

(७३)

जय-जय राधा दृग की कोरैं ।
खञ्जन कञ्ज मीन मृग जिन पै वारौं कोटि चकोरैं ।।
बरसत सहज माधुरी धारा, त्रिभुवन रस में बोरैं ।
बंक विलोकन चञ्चल मानहुँ, करुणा सिंधु हिलोरैं ।।
इनकों ही अवलम्ब किशोरी, एक सदा हिय मोरैं ।
भोरी प्रीति-रीति सौं रीती, विनय करत कर जोरैं ।।

जय-जय राधा नयन सुरंग ।
जिनके चपल दृगंचल ही सौं, उपजत कोटि अनंग ।
जिनकी बंक बिलोकन मानों, उमड़त प्रेम तरंग ।।
निज जन हृदय सिंधु उमगावत, नित नव नेह उमंग ।
भोरी कौं इक आस रावरी, दीजै प्रेम अभंग ।।

(७५)

अशरण शरण प्रिया दृग तेरे ।
मदन मथन मोहन भय भागै, कोटिन-कोटि मनोज बसेरे ।।
नील कमल सर वर्षत मानों, सहज बंक अवलोकन प्रेरे ।
जीत लिये श्री मधुरिपु मोहन, रस बश किये आपने चेरे ।।
मोकौं एक आसरौ इनकौ, यह तौ कृपा सिंधु उमड़ेरे ।
कहा कहौं किन दोषन भोरी, अजहूँ मो तन नैक न हेरे ।।

(७६)

करुणा भरे प्रिया दृग तोरैं ।
सहज कृपा की उठत तरंगें, त्रिभुवन रस में बोरैं ।।
उमड़त कृपा सिन्धु परि पूरण, दिस - दिस लेत हिलोरैं ।
भोरी परम अभागी तोहू, इनकौ आसरौ मोरैं ।।

(७७)

कहाँ छुपाये प्यारी लोचन चपल शिकारी हो ।
जेहि देखत हिय बेधत ताकौ, सब जग कहत पुकारी हो ।
अखिल लोक चूड़ामणि मोहन, चपल चतुर गिरधारी हो ।।
बरबस पकरि जकरि छबि राख्यौ, डोलत नित जु पिछारी हो ।
चंचल चित्त कुरंग हमारौ, हौं तासौं अति हारी हो ।।
गगन-पताल गिनत नहिं कछुवै, डोलत विषय मँझारी हो ।
जो तेहि वेधि बाँधि कै राखौ, कर निज आज्ञाकारी हो ।।
सब विधि सबल नवल अलबेली, मानौं जीत तिहारी हो ।
भोरी आस इनहिं अँखियन सों, चितवन पर बलिहारी हो ।।

(७८)

जो अलि होत प्रिया दृग मेरे ।
तौ उड़ि क्यों न करत करुणानिधि, पंकज पाँव बसेरे ।।
मुदित मत्त नित छके एक रस, गिनत न सांझ सबेरे ।
लव निमेष छिन होत विलग ना, छबि ही मनों पगेरे ।।
लौट न मोहि देखते कबहूँ, मुसिकन फंद परे रे ।
हा प्यारी कछु बन न परी तब, हठ थकि हार रहे रे ।।
उड़न चह्यौ उड़िबो नहिं आयौ, तरसत विकल भये रे ।
का अब कहौ कृपालु लाड़िले, सालत अधिक हियेरे ।।
ता पर और निलजता ऐसी, अजहुँ विषय के चेरे ।
भोरी हित फूटत तक नाहीं, वादि कहावत मेरे ।।

(७९)

ललकत नयन-नयन में फँसिवे ।
वा छवि छके मुदित मतवारे, पी-पी सुधा हुलसिवे ।।
हिय अकुलात धीर नहिं आवत, पंकज पांव परसिवे ।
राखे प्राण बारिवे तुम पै, ते अब चहत निकसिवे ।।
रँग बरसात रँगीली आवौ, कबहूँ हियरे धसिवे ।
भोरी पोच पतित ललकत है, हित बल कुंजन बसिवे ।।

(८०)

खंजन खग दृग चपल तिहारे ।
छिन ठहरात समात नहीं कहुँ, कमल श्रेणि सित बरसन हारे ।।
उलट-पलट चहुँ चलत दृगंचल, बंक निशंक अरुण अनियारे ।
करुणा कोर बोरिहै सहजहि, बिलपत दुखी देखि निज द्वारे ।।
हौं तजि शंक आजहू सोवत, यही आस निज जीवन हारे ।
भोरी हित उमड़त रस सागर, हरत दोष दारुण दुख भारे ।।

सुरतांत

॥छन्द बारी॥

(८१)

नव छवि भोर निहारों, तन मन जीवन वारों।
तन मन जीवन वारों जब ही, आलस वस अँगरावौ॥
झुक-झुक परत परस्पर अंसन, मंद-मंद मुसिकावौ।
लटकि-लटकि पग चलन मनोहर, देखि-देखि मन हारौं॥
कबहूं भाग जगावहु ऐसो, नव छवि भोर निहारौं।

(८२)

पलटे विमल दुकले, देखि-देखि मन भूले।
देखि-देखि मन भूलें प्यारी, अटपट बचन उचारौ॥
शिथिलित गिरा देह गति शिथिलित, डगमग मग पग धारौ।
निशि जागर लोचन मद माते, अरुण कमल से फूले॥
प्रात समय कुंजन सों आवत, पलटे विमल दुकूले।

(८३)

अलक कपोलन छाई, जनु अलि रहे भुलाई।
जनु अलि रहे भुलाई आनन, पंकज के रस भीने॥
बिनु गुन हार कुसुम झर लागी, गंड ललाई लीने।
देखि चिन्ह रजनी के सजनी, नैनन में मुसिकाई॥
कुच रस - कलसन मृग मद छूट्यौ, अलक कपोलन छाई।

(८४)

मदन मनोहर वेषा, विथुरित सुन्दर केशा।
विथुरित सुन्दर केशा स्वामिनी, नख छत हृदय सुहाये॥
अधरन रंग दृगन कों दीनौ, अंजन पलटे पाये।
माँग गिरा जमुना कच डूबी, भाल तिलक रुचि लेशा॥
कौन भाग नित प्रात निहारों, मदन मनोहर वेषा।

जय-जय नवल नागरी राधा ।
प्रात समय जागी रस माती, सखियन कौ सुख साधा ।
लाल-लाल लोचन के कोये, बरसत प्रेम अगाधा ।।
शिथिलित गात अलक लट छूटी, तिलक भाल पर आधा ।
भोरी सहज कृपालु कृपा करि, हरहु सकल भव-बाधा ।।

(८६)

नित नव दरस भोर कब पैहौं ।
शिथिल गात नव कुंज भवन सों, भोर उनीदी ऐहौं ।।
छाके नयन देह सब थाकी, बुधि बल सुरत दुरैहौं ।
हँसि-हँसि झुक-झुक परत किशोरी, झुकि-झुकि हँसि-हँसि जैहौं ।।
विलुलित शिथिल लसैं लट छूटी, कच सों कुसुम गिरैहौं ।
भोरी नित नव दरशन पाऊँ, कब मेरी आस पुजैहौं ।।

(८७)

रँग भरी टहल कौन विधि पावौं ।
प्रात भये नव कुंज भवन में, सोवत जाइ जगावौं ।
बिथुरे कच शिर सुभग बनाऊँ, काजर दृगन लगावौं ।।
टूटे हार कंठ पहिरावौं, माथे तिलक बनावौं ।
बहुरि मांग भरि सेंदुर रेखा, भूषन वसन सजावौं ।।
ओठन रँग कुच चन्दन चर्चित, रति के चिन्ह दुरावौं ।
भोरी रँग भरी नवल किशोरी, देखि-देखि बलि जावौं ।।

(८८)

कैसे रहस-दास्य हौं पावौं ।
भोर उनींदी उठी किशोरी, देखत नैन सिरावौं ।
निशि जागर आलस तनु छायौ, मज्जन बेगि करावौं ।।
सजि तन नील बसन आभूषण, मधु मेवा लै आवौं ।
किसलय शयन सँभारि किशोरी, हँसि-हँसि लै पौढावौं ।।
भाग्य भरी हौ बैठि पाँयते, मृदु तरुवा सहरावौं ।
भोरी सोवत नवल नागरी, देखि-देखि बलि जावौं ।।

सोच-सोच पुनि-पुनि अकुलावौं ।
भोरहि कौन भाग्य सौं प्यारी, रंग भरे कुञ्जन आवौं ।।
अंग राग अंगन सौं छूटे, लै निज अंग लगावौं ।
टूटे परे हार मालावलि, निज तनु सुभग बनावौं ।।
तुम कौं उवट न्हवाय किशोरी, नव शृङ्गार सजावौं ।
भूषन बसन प्रसादी माला, बड़े भाग्य सौं पावौं ।।
कीजै कृपा कृपालु किशोरी, चरण कमल बलि जावौं ।
भोरी यह सुख सोचि-सोचि के, बार-बार ललचावौं ।।

(६०)

रँग भरे दरसन नित-नित दीजै ।
लटकत आवैं भोर कुंज सों, बचन कहत रस भीजै ।
आलस भरे नैंन लट छूटी, देखि-देखि छबि जीजै ।।
हँस-हँस कहत अटपटी बतियाँ, श्रवन माधुरी पीजै ।
भोरी मन या सुख पै भूल्यौ, कहा मुक्ति लै कीजै ।।

स्फुट—लीला

ऐसी लीला की सुधि आवै, मन मेरौ बार-बार अकुलावै ।
लिये आरसो निज छबि देखत, प्यारी मृदु मुसिकावै ।।
ताही छिन रचि रास लाडिलौ, मुरली मंद बजावै ।
सुनि धुनि आतुर चलत निकुंजन, रस बस पंथ भुलावै ।।
तब हठ हाथ गह्यौ अलबेली, सो लखि हँसि सकुचावै ।
धरि भुज अंस लाड़सौं चलिबो, लटकि चाल अति भावै ।।
मृदु-मृदु बैन अमी रस बरसत, हँसन दसन चमकावै ।
कंकण किंकिणि नूपुर बाजत, आगम सरस जनावै ।।
कीजै कृपा कृपाल किशोरी, तन मन अति अकुलावै ।
भोरी छिन यह सुख की आशा, बार - बार ललचावै ।।

सुधि आवत खेल खिलैबे की ।
नवल निकुंज भवन में प्यारी, हिल मिल ब्याह रचैबे की ।।
बन विहरन यमुना तट चलिबौ, झूला डार झुलैबे की ।
हिलमिल चौपर खेल खेलिबौ, भूषण मुरलि चुरैबे की ।।
रंग भरी होरी खेलत दोऊ, मुखन अबीर लगैबे की ।
जब-जब होड़ परत दोउन में, तब-तब न्याव चुकैबे की ।।
यह अभिलाष अटपटी लागत, छिन ऐसे हियौ सिरैबे कौ ।
भोरी बातैं प्रगट करहु अब, बाँह पकरि अपनैबे की ।।

(६३)

कब बाट हेरिहौं तेरे आवन की ।
सोचत करुणाधाम किशोरी, ललित-ललित गति धावन की ।
फहरत अंचल अंग झलकिबो, मुख पर छवि मुसिकावन की ।।
हँसि-हँसि करुणा कोर हेरिबौ, मधुर-मधुर बतरावन की ।
भोरी हिय अकुलात किशोरी, हौंसन हियौ सिरावन की ।।

(६४)

कब आवत जानि किशोरी प्यारी, तेरे पथ में नैन लगैहौं ।
नूपुर धुनि सुनिवे के लोभन, श्रवन दिये चित लैहौं ।
सोच-सोच मुसिकान माधुरी, छिन-छिन प्रति अकुलैहौं ।।
नित-नित नाम रटत करुणानिधि, नैनन नीर बहैहौं ।
ऐसौ भाग जगैं कब भोरी, रँग भरे द्यौस बितैहौं ।।

(६५)

सुधि आवत मान मनैबे की ।
चंचल दृग थिर किये किशोरी, अवनी ओर चितैबे की ।।
कर दै विमल कपोलन प्यारी, भृकुटी कुटिल लचैबे की ।
कंज बदन मूँदे करुणानिधि, सुन्दर ग्रीव झुकैबे की ।।
परि-परि पाँव मनावन हू की, कर सों ठेलि हटैबे की ।
भोरी हौंसन मरत किशोरी, कहि रस बैन हँसैबे की ।।

रँग भरे नयन रंग भरी भौंहैं ।
रँग भरे भवन विराजत प्यारी, रँग भरे श्याम सुन्दर मुख जोहैं ।।
रँग भरे वचन कहत हँसि दोऊ, रँग भरे चितवत कछु तिरछौंहैं ।
रँग भरी कुसुम सेज सखि निर्मित, रँग भरे दृग राजत अलसौंहैं ।।
रँग भरी छबि-लव विमलछटा सौं, रँग भरे तिहुँपुर कौ मन मोहैं ।
भोरी याचक द्वार पुकारत, दरस लोभ लोचन ललचौंहैं ।।

शयन

सुधि करत कमल दल शयनन की ।
हियरा अकुलत जब सुधि आवै, मधुर मनोहर बैनन की ।।
झुकि-झुकि झूमि भवन कौं चलिबौ, अद्भुत शोभा नैनन की ।
भोरी बलि-बलि जाइ किशोरी, सुभग तिरीछी सैनन की ।।

(९८)

कब ऐसौ भाग्य जाग है प्यारी ।
फूले फूल पँखुरियन रस बस, शैय्या रचौं सुधारी ।।
कुञ्ज रंध्र रस केलि विलोकत, हर्ष होत हिय भारी ।
करहु कृपा बलि भोरी स्वामिनि, बहुत बिनय करि हारी ।।

(९९)

किसलय शयन पधारौ किशोरी ।
रजनी ढुरी गयौ ढुरि चन्दा, समय भयौ अब पौढ़न कौरी ।।
लटकत चलिये कुञ्ज भवन कौं, झूमत मोहन अंसन कोरी ।
आलस बलित शिथिल मुख वाणी, छाई नयन अरुणई थोरी ।।
नवल सेज नव दलन सँवारी, सफल मनोहर सुन्दर जोरी ।
भोरी परम कृपालु कृपानिधि, पौढ़ि हिये सुधि कीजिये मोरी ।।

(१००)

कुञ्जनि चलौ नवल अलबेली ।
सुर तरु कुञ्ज कमल दल सैय्या, पौढ़ि करहु किन केली ।।
चलत मोहि भरि नयन निहारौ, छबि निधि गरव गहेली ।
तुम बिनु कछु अवलम्ब न मेरैं, विलपत बिकल अकेली ।।

सहज कृपालु कृपा करि राखौ, निगम - नीति - हठ ठेली ।
भोरी हित चरनन सों लागी, ज्यों तरुवर सों बेली ॥

(१०१)

नव निकुञ्ज नव सेज सुहाई ।
दोऊ नवल किशोर रूप निधि, पौढ़ि करौ मन भाई ॥
नवल सखी मिल करत बधाई, आरती गावत गीत बधाई ।
श्यामल गौर गात मिल उरझन, उर उमंग अधिकाई ॥
ललकत दृग छिन देखन कारन, लीला ललित लुभाई ।
भोरी हित अलबेली स्वामिनि, दीजे आस पुजाई ॥

(१०२)

किसलय शयन पधारो प्यारे ।
हिल मिल करौ भावती बतियाँ, रूप सुधा मतवारे ।
हौंतौ दीन दुखारी पामर, आरत बिलपत द्वारे ॥
मेरीहूँ हँसि चरचा कीजो, श्याम मोरपछ बारे ।
भोरी हित दरदीले मोहन, पोच निबाहन हारे ॥

चौसर

प्रेम की चौसर खेलें पिया प्यारी ।
हारे मोहन जीती प्रिया तू, वे जीते तू हारी ।
दोऊ हारे दोऊ जीते, कोधों कहों बिचारी ॥
हार-जीत मिल एक भये री, गौर श्याम सुखकारी ।
एक देह इक प्राण एक वपु, सलिल-तरङ्ग न न्यारी ॥
तन मन प्रान दुहूँ नें हारे, ऐसे अजब खिलारी ।
दोऊ कोटि गुणित करि पाये, प्रीति रीति रिझवारी ॥
तुम सम प्रीति रीति को जानैं, मैं मुख कहों कहारी ।
भोरी को भुज गहौ लाड़िली, नेह निबाहन हारी ॥

(१०४)

प्रीति की बाजी खेलिये प्यारी ।
हो तौ काची प्रीति लै आई, साँची प्रीति लाउ सुकुँवारी ।

हौं तौ बाजी अवसि हारिहौं, जीति करौ निज आज्ञाकारी ।।
ऐसी चेरी करौ आपनी, छिन न होउ चरणन सौं न्यारी ।
तेरी सहज बान पै भोरी, बार-बार जाऊँ बलिहारी ।।

(१०५)

प्रीति की बाजी रची, अब खेलौ प्यारी ।
जोपै हारौं तौ दासी हौं तेरी, चरणन सौं न करौ छिन न्यारी ।
जोपै जीतौं तौ बसौ हिय मेरे, कोमल चित्त कृपानिधि प्यारी ।।
नित प्रति दरस मोहि देहु कृपानिधि,प्रीति रीति हिय नैन खुमारी ।
विनती एती मानो कृपालु किशोरी, भोरी चरण कमल पर वारी ।।

वेणी

पीठ बिराजत सुन्दर बैनी ।
फूलन सों पिय प्यारे ने गूँथी, लाँबी भली बनी सुख दैनी ।।
मोतिन सों कच प्यारे सँवारे, बीच विराजत सैन्दुर ऐनी ।
भाग्य सौं चौंर ढुराइहौं भोरी, तौ हियकी मिट जैहै कुचैनी ।।

(१०७)

भौंरन लौं बैनी पर अटकै ।
यह वर देहु रीझि कै प्यारी, मन मेरौ अनत न भटकै ।।
यह अति चंचल रुकत न क्यौहूँ, विषयन में सिर पटकै ।
भोरी तौ थिर होइ छिनक में, जो अलबेली हटकै ।।

जावक

जावक लौं पाँयन सौं लागै ।
नूपुर लों गुन गाय निरन्तर, पद रज लों अनुरागै ।
कुंजन लों हिय सदन बसावै, किंकिन लों रस पागै ।।
छाया लों बन डोलत प्यारी, मन छिन पास न त्यागै ।
यह मेरी आस पुजावहु भोरी, प्रीति अटपटी जागै ।।

(१०९)

रसिक रँगीली गोरी। नागरि नवल किशोरी ।।
नागरि नवल किशोरी प्यारी, नवल लाल गिरधारी ।
कोटि काम अभिराम लाड़िले, करत केलि सुख कारी ।।
चरण महावर दैन रसिक, भरि लाये रंग कटोरी ।
बैठी मृदु मुसिकावत देखौं, रसिक रँगीली गोरी ।।
भरि रंग अँगुरिनु माहीं। पिय पग परसन चाहीं ।।
पिय पग परसन चाहीं जौलौं, बीच भई चित चोरी ।
दोऊ चन्द चकोरी है गये, अरुझि नैन की कोरी ।।
पियैं रूप मधु छके खुमारी, तन मन की सुधि नाहीं ।
इक टक बदन विलोकत प्यारे, भरि रँग अँगुरिन माहीं ।।
प्रेम पगी हौं आवौं। म्हावर पगन लगावौं ।।
म्हावर पगन लगावौं हँसि-हँसि, दोऊ नेंक न जाने ।
टेर कहौं पुनि रसिक लाड़िले, काधौं रहे भुलाने ।।
प्रेम गहर सौं काढि किशोरी, हँसि-हँसि दुहुन हँसावौं ।
कबधौं रहसि कुंज अलबेलो, प्रेम पगी हों आवौं ।।
बार - बार मुसकावैं। तन की तपन बुझावैं ।।
तन की तपन बुझावत दोऊ, लगे महावर देखी ।
रुक-रुक हँसि-हँसि परत लाड़िले, पुनि-पुनि मो मुख पेखी ।।
हास चाँदनो छिटकी चहुँ दिशि, हृदय उमँग रसावैं ।
भोरी देत रीझि कै माला, बार - बार मुसिकावैं ।।

(११०)

रुचिर बधू नव कुंज किशोरी ।
निज कर दैन महावर बैठी, रंग अँगुरियन बोरी ।।
निज पद मुकुर मनोहर मूरति, देखत बैठि सराहैं ।
पुनि-पुनि रंग अंगुरियन बोरत, छाकी अमित उछाहैं ।।
पिय की छबि सों निज छबि तोलत, जबहि अचक रहि जावो ।

दैन महावर लगौं आइ तब, सो लखि मृदु मुसिकावौ ।।
हँसि-हँसि मो मुख देखौ, जब-जब, छवि छकि-छकि रहि जावौ ।
बार-बार बलि जाउँ लाड़िलो, यह मेरी आस पुजावौ ।।

अभिसार

ऐसी हौंस बढ़ै हिय माहीं ।
श्री यमुना तट बैठे नागर, कल्प वृक्ष की छाहीं ।।
अति अनुराग भरे दृग मूँदै, टेर - टेर पुलकाहीं ।
हौं लै आउँ कृपालु किशोरी, आतुर तोहि तहाँहीं ।।
वे टेरैं तुम ढाँप तबै दृग, मंद हँसौ तेहि ठाँहीं ।
भोरी मन यह लोभ लुभानौ, देखन दृग अकुलाहीं ।।

स्वप्न

ऐसौ स्वप्न मोहि अति भावै ।
नैन समीप मोहिनी मूरत, मंद - मंद मुसिकावै ।।
कोटि चन्द छवि सुन्दर आनन, रूप सुधा बरसावै ।
भोरी रंग भरी अलबेली, हिय में आइ समावै ।।

(११३)

प्यारी हो, मोहि ऐसो सपनौ भावै ।
उर धरि पंकज पांव लाड़िलौ, मंद - मंद सहरावै ।।
बार-बार हिय माँहि लगावत, तन की ताप बुझावै ।
बैठि पांयते सरस रागिनी, मंजु मधुर धुनि गावै ।।
हरस माधुरी देखत छिन-छिन, अपने नैन सिरावै ।
भोरी रूप सुधा रस छाको, छिन सम रैन बितावै ।।

सखी

ललिता ललित रूप तनु श्यामा ।
जुगल माधुरी पियत निरन्तर, कुंज भवन अभिरामा ।

सहज कृपालु उदार सुन्दरी, कोमल तनु नव बामा ।।
आरत हरन चरन सुखदायक, पोच पतित बिश्रामा ।
अखियाँ जासु बड़ी दरदीली, उमगत करुणा धामा ।।
श्री बन वास विलास विलोकत, निशि दिन आठौ जामा ।
कबहूँ द्रवौ कृपानिधि मोपै, तोहि करहुँ परनामा ।।
इतनी सुधि कराउ हित जू कौं, कोउ इक भोरी नामा ।
पोच पतित बिलपत प्रतिपारौ, जद्यपि परम निकामा ।।

(११५)

सखी विशाखा अति सुकुमारी ।
छोटी वयस बड़ी-बड़ी अखियाँ, उमगत कृपा अंबुनिधि प्यारी ।।
पोच पतित प्रतिपाल सुन्दरी, अति उदार रिझवार महारी ।
कोमल तन कोमल मन नागरि, मृदुल स्वभाव रूप उजियारी ।।
करुणा धाम कहा कहि बरणौं, आरत टेर सकत सहि नारी ।
श्री बन वास रास रस छाकी, छिन न होत प्यारी सौं न्यारी ।।
मेरी ओर कृपा करि हेरौ, निरवलंब अति देखि दुखारी ।
कुंज वास है तेरो सजनो हित जू कौं सुधि मेरी करा री ।।
कहियत सहज कृपालु लाड़िली, अधम उधारन बान तिहारी ।
पूछत क्यों न कुशल भोरी सौं, विलपत आरत द्वार पुकारी ।।

(११६)

जय राधा चरनन की दासी ।
ललितादिक जे सखी संग की, प्रिय पद कंज निवासी ।।
शिव ब्रह्मादिक वंदत पद रज, राधा चरण उपासी ।
जिनकौं जोर-जोर कर बिनवत, मोहन कुंज-विलासी ।।
महिमा अमित अपार अगोचर, सहज नेह की रासी ।
सिध-निधि कोटि-कोटि की दाता, आरत कल्पलतासी ।।
श्री दम्पति मन लिये रहत नित, निश दिन करत खवासी ।
हित नाते सुध करहु-करावहु, भोरी सठ रस प्यासी ।।

नख-सिख

लाड़िली प्यारी हो ऐसौ रूप मोहि भावै।
बयस किशोर रस भरी प्यारी, तनु छवि कोटि मनोज लजावै।
अंग-अंग द्युति झलकत नीकी, चौंधि-चौंधि दृग ठहर न पावै॥
सिर सीमंत सुभग कच गूँथित, बैनी भुवंग पीठ छबि छावै।
बरसत नैन कमल सित श्रैनी भृकुटि मरोर न बरणी जावै॥

(११८)

सुन्दर सहज कृपानिधि प्यारी।
पूरण कोटि शरद शशि सुन्दर, मुख चन्दा उजियारी।
खंजरीट द्वय खेलत तामें, भृकुटि धनुष छवि न्यारी॥
ओठ दन्त द्युति युत मृदु हाँसी, उपमा कहाँ कहारी।
मनु अनुराग अमी मिलि बरसत, चाँदनी अति सुखकारी॥
आनँद में तिहुँ लोक डुबोये, कोर कटाक्ष छटारी।
जन हिय प्रेम सुधा रस सागर, उमगन अमित अपारी॥
संत शास्त्र श्रुति सब ही गावत, सबकौं सुखद सदारी।
भोरी शठ पर इती निठुरता, सपनेहु नाहि निहारी॥

(११६)

कैसे देखिये भरि-भरि नैन।
चंचल नयन खये थिर दुहुँ दिशि, टारे नैंक टरैं न।
जनु चकोर रस उमँग अटक रहे, मुख मयंक छबि ऐन॥
भूषण बसन देह सुधि बिसरी, घटिका याम गिनैं न।
दें भुज अंस बदन अवलोकत, इक टक पलहु लगैं न॥
बार-बार मृदु-मृदु मुसिकावत, मुख कछु कहत बनै न।
भोरी किशोरी अति अलबेली, श्याम सुन्दर सुख दैन॥

(१२०)

कबहुँ देखि हौं भरि-भरि नैन।
नर्तन रास दिये गलबाहीं, विमल शरद की रैन।

अरुझे नील निचोल पीत पट, सैनन अरुझी सैन ।।
श्यामल गौर गात मिल अरुझे, मुख आवत नहीं बैन ।
प्रेम उमंग देह सुधि बिसरी, नव-नव उलहत मैन ।।
हिल मिल दोऊ एक भयेरी, सो क्यों हूं सुरझैं न ।
भोरी दृग अकुलात किशोरी, पल छिन धीर धरैं न ।।

(१२१)

कुंवर दोऊ ऐसे बसौ दृग मेरे ।
इक रस मगन रहौं वा छवि पै, गिनौं न सांझ सबेरे ।।
सुन्दर सुखद मनोहर जोरी, हिय में करहु बसेरे ।
मंद - मंद मुसिकान महा छबि, दैदै बांह गरे रे ।।
ता छबि मांहि फँसें दोऊ अँखियाँ, टारी नाहिं टरैं रे ।
भोरी नैन दरस रस प्यासे, करहु आपने चेरे ।।

(१२२)

सुन्दर स्वामिनि प्यारी हमारी, छबि निधि सहज रूप उजियारी ।
मुख छबि कोटि चन्द सौं नीकी, हँसन दसन द्युति भाँवती जीकी ।
चितवन बरसत वृष्टि अमी की, रंग भरी छबि सुखद सुखारी ।।
लोचन रहत रूप ललचाने, सपनेहु तुम बिनु और न जाने ।
शिशु लौं बार-बार हठ ठानै, चहुँ दिशि रहत निहार निहारी ।।
हँसि कृपाल बिधु बदन दिखावौ, सहज माधुरी पान करावौ ।
भोरी हिय की आस पुजावौ, तन मन रहौं चरण पर वारी ।।

(१२३)

विनती मेरी तुम्हारे तलक, दृग नेक दिखावो रूप झलक ।
मोतिन लौं कच सौं लगि लटकै, मधुकर लौं मुख पंकज अटकै ।
मन मेरौ अनत कहूं नहिं भटकै, रहै बुलाक ज्यों अधर हलक ।।
काजर लौं दृग कमल समावै, मृग मद सरस भाल पर छावै ।
पांयन जावक रूप सुहावै, यही आस नित रहहु ललक ।।
दरसन देहु लाड़िली प्यारी, आस पुजावहु नव सुकुमारी ।
भोरी तन मन जीवन वारी, देखत दृग न लगाऊँ पलक ।।

जय-जय राधे रूप उजारी ।
जय अलबेली सहज सुन्दरी, श्री वृषभान दुलारी ।।
जय रस दाइन स्ववश बिहारिनि, सर्वोपरि सुखकारी ।
जाकी भ्रू विलास बस मोहन, लाग्यौ रहत पिछारी ।।
जय मंगल धुनि गावत किंकिन, पग नूपुर झंकारी ।
गुन गन अमित पार नहिं पायौ, पचि हारे श्रुति चारी ।।
त्रिभुवन विदित भानु कुल-दीपक, सबकौं सुखद सदारी ।
भोरी शठ पर परम निठुरता, टेरत - टेरत हारी ।।

(१२५)

जय-जय नवल निकुञ्ज नागरी, निज सर मनु जग जीत त्याग री ।
मदन विमोहन कौ मन मोह्यौ, गावत किंकिन विजय राग री ।।
मोहन मंत्रन उघटत नूपुर, छवि निधि सहज सरूप आगरी ।
भोरी ओर कृपा करि हेरौ, सोबत स्वप्न जगाउ भाग री ।।

(१२६)

बिनु छिन दरसन पाये क्यों धीरज धारौं ।
पद नख चंद्र चंद्रिका ऊपर कोटि - कोटि चिन्तामणि वारौं ।।
कोटि मराल चाल पर वारौं, चरण कमल पर कोटिक कंजन ।
कोटि-कोटि केहरि कटि ऊपर, दृग पर कोटि-कोटि वर खंजन ।।
कोटि-सुमेर दिव्य कुच ऊपर, कोटि-कोटि मन्मथ धनु भौंहन ।
कोटिक चन्द्र मन्द हाँसी पै बरबस विवस किये मन मोहन ।।
कोटिक कुंद दन्त पर वारौं, बैनी ऊपर कोटि भुवंगन ।
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड सुभगता, बार डारिये अंगन-अंगन ।।
कोटिक प्राण छिनक दरसन पै वारौं, सहज कृपालु किशोरी ।
नैक कृपा करि दरसन दीजै, आरत टेर पुकारत भोरी ।।

(१२७)

वे अधर मधुर वैसे मृदु-मृदु बैन ।
वैसी छिटको हँसन चाँदनी, वैसे रँग भरे नैन ।

वैसी बैनी लसत पीठ पै, त्रिभुवन सुखमा ऐन ।
वैसी झुकन बजन नूपुर की, वैसो गति सुख दैन ।।
सोच-सोच अकुलावत हियरा, पल छिन धीर धरै न ।
मणिबिनु फणिज्यों व्याकुल भोरी,पलछिन परत न चैन ।।

(१२८)

वह छटा छिन हू दिखावौगी कहौ,
माधुरी हँसि-हँसि पियावौगी कहौ ।
मन कुटिल अलकन में मेरौ घेरि कै,
सब कुटिलता कब मिटावौगी कहौ ।।
अपने कोमल पाँव धरि मेरे हिये,
सब कठिनता कब नसावौगी कहौ ।
ओठ पै अनुपम लसै अनुराग रस,
हँसि सुधा धारा झरावौगी कहौ ।।
हौं तौ तेरे पंथ में व्याकुल पड़ी,
लाड़ सौं नूपुर बजावौगी कहौ ।
है हियौ मम तप्त तीनहुँ ताप सौं,
अपने पद सौं कब सिरावौगी कहौ ।।
हौंजु सोती दै दरस कब स्वप्न में,
भाग्य सोये कौं जगावौगी कहौ ।
अपने कच के संग मो मन बाँधिहौ,
अपनी छवि में दृग फँसावौगी कहौ ।।
नयन कोयन सौं बरसि कै माधुरी,
मेरौ मन रँग में डुबावौगी कहौ ।
मेरी भोरी कहिकै हँसि-हँसि लाड़िली,
सब सौं कब नातौ छुड़ावौगी कहौ ।।
हौं तौं व्याकुल टेर नित द्वारे करत,
अब तौ मेरे हिय समावौगी कहौ ।

वा अलक में चित्त फँसि रहि है कभू,
पीर साँचे प्रेम की सहि है कभू ।।
लेत साँसें बैठि दुख सौं लाड़िली,
दौं विरह की देह यह दहि है कभू ।
जैसे चातक मेघ कौं टेरत सदा,
तैसी हठ यह जीभ हू गहि है कभू ।।
वा सुधा मुसकान भरि दृग पान कौं,
दृग चकोरी से विकल चहिहैं कभू ।
भोरी नित-नित द्वार पै बिनती करै,
रीझ तेरी लाड़िली लहि है कभू ।।

(१३०)

अलक कुटिल मन मेरौ फँसावौ, नयन कोर हिय माहि धँसावौ ।
हौं तौ बिलपत बिकल अकेली, आइ हँसौ छिन मोहू हँसावौ ।।
जाकौं ठीक-ठौर नहिं कितहूँ, तेहि भुज गहि बरसाने बसावौ ।
चरण धूर लगि धूर मिलौ में, अब न कृपालु बहुत तरसावौ ।।
लोचन मृदु मुसकान लुभाने, छिन इक छटा विहँसि दरसावौ ।
भोरो चातक दीन पुकारत, हँसि-हँसि क्यों न सुधा बरसावौ ।।

(१३१)

नवल वयस झूमत रँग भीनी ।
कौन भाग भरि नयन निहारौं, शोभा नित्य नवीनी ।।
चंचल चखन तिरीछी चितवन, कुण्डल लोल कपोला ।
अधर बिंब मृदु हास मनोहर, सुधाधार मधु बोला ।।
चंपक कनक बरन तन शोभा, अंग-अंग छवि न्यारी ।
झूमत चलत ढरत करनी लौं, नव यौवन मतवारी ।।
गूँथित चिकुर रुचिर सिर सेंदुर, मुक्ता पंक्ति सुहाई ।
भाल विशाल तिलक मोहत मन, भृकुटि बंक छबि छाई ।।
चिबुक चारु सुन्दर भुज ग्रीवा, मूरति रंग रँगीली ।

करुणा धाम किशोरी राधे, दीन दुखी दरदीली ॥
श्रवनन सुनत बिकानी छवि पै, अँखियाँ धरत न धीरा ।
कभू उमगि करुणानिधि पूछौ, हँसि-हँसि हिय की पीरा ॥
ये अँखियाँ रिझवार बड़ी री, इनकौ भरोसौ भारी ।
भोरी हित इत नजर जो फेरौ, तौ बड़ बात कहा री ॥

(१३२)

करिवर चाल चलत मतवारी ।
नवल वयस यौवन मदमाती, झूमत झुकत ढुरत सुकुमारी ।
फहरत अञ्चल चञ्चल कुण्डल, किंकिणि कल नूपुर झंकारी ॥
नवल निकुंज चलत अति आतुर, नवल वधू वृषभान दुलारी ।
भोरी हित मग कबहुँ ठहरि हौ, बूझन कुशल कृपानिधि प्यारी ॥

सेवा–अभिलाषा

नयनन सौं नित देखिबौ कीजै ।
कर सौं चरण सरोरुह चाँपत, श्रवन माधुरी पीजै ।
नयन-पुतरि लौं चखन बसैये, लाय-लाय हिय लीजै ॥
असन-बसन सुध-बुध परि हरिये, देखि-देखि कै जीजै ।
भोरी विमल जुगल छबि ऊपर, वारि-वारि जल पीजै ॥

(१३४)

रचि-रचि अर्पहुँ कंठन माला ।
हिलमिल डोलहुँ लगि-लगि पीछै, गावत गीत रसाला ।
रचि-रचि रास लाड़िले नाचत, सोभा विशद विशाला ॥
कंकन किंकिनि नूपुर बाजत, लाजत मोर मराला ।
वारौं तन मन जीवन कोटिन, देखि-देखि तिहि काला ॥
लै - लै पंखी पीछे डोलहुँ, हरि श्रम होत निहाला ।
यह मम आस पुजाइय भोरी, शरणागत प्रतिपाला ॥

(१३५)

मन मेरौ बार-बार अभिलाखै ।
ऐसौ भाग जागिहै कबहूँ, रूप माधुरी चाखै ।

रचि-रचि विमल माल पहिरावै, रस की बतियाँ भाखै ।।
नित-नित नव-नव लाड़ लड़ावत, पुतरिन लौं दृग राखै ।
तन मन पल-पल बारत भोरी, निगम शृंखला नाखै ।।

(१३६)

रस भरी टहल कौन विधि पावौं ।
नूतन मृगमद लिये लाड़िली, कुच पर पत्र बनावौं ।।
अनुपम देह दिव्य द्युति राजै, देखि अचक रहि जावौं ।
मो गति देखि कृपालु किशोरी, मन्द-मन्द मुसकावौं ।।
निज कर पत्र रचन जब लागौ, देखि-देखि पछितावौं ।
भोरी या सुख टहल आस पर, कोटिक जन्म गमावौं ।।

(१३७)

प्यारी मोहि ऐसौ जीवन भावै ।
आलस भरी लता के गृह में, रचि शैया पौढ़ावै ।।
तुम सोवौ मैं ब्यार डुलावौं, भाग्य कह्यौ नहिं जावै ।
तुम हूं अकेली मैं हूं अकेली, आनन्द उर न समावै ।।
बार-बार छवि देखि-देखि कैं, उमगि नैंन भरि आवै ।
भोरी भुक्ति-मुक्ति नहिं चाहत, छिन इक वह सुख पावै ।।

(१३८)

सोवत कबहूं प्यारी तोहि भरि-भरि नैंन निहारौं ।
तुम तौ पौढ़ीं फूलन की सैया, मैं तो बायु करौं तन बसन संभारौं ।।
देखौं कबहुँ मुख आवत हाँसी, कोटि प्राण ताही ता छवि पर वारौं ।
कबहूँ कहत पिय छोड़ौजी छोड़ौ, तब पुलकित गात तोपै जीवन हारौं ।।
कबहूँ आनन्द भरी तेरी देह सुहावै, अँसुवा पौछ संभारौं ।
भोरी हित यह आस पुजावौ, बिन देखे नैंन लगत अँधियारौं ।

(१३९)

ऐसी सेवा की सुधि आवै ।
अतर अरगजा माँग महावर, भूषन बसन सजावै ।।

मज्जन भोग सिंगार आरती, रचि सैया पौढ़ावै ।
चन्दन मृग मद सैन्दुर काजल, तेल फुलेल लगावै ॥
लै बीना मृदु गाइ किशोरी, जुगल किशोर रिझावै ।
कबहूँ रीझि देहु यह सेवा, भोरी बलि-बलि जावै ॥

(१४०)

भावै हिल मिल सैया रचिवौ ।
पिय के चाटु बैन तेरी नाहीं, प्रणय कोप सौं लचिवौ ॥
श्याम गौर भुज कलह मनोहर, भृकुटि नैन कौ नचिवौ ।
यह सुख छिन नहिं पायौ भोरी, वृथा सृष्टि नचि पचिवौ ॥

(१४१)

मेरे मन भावै अलक सँभारिवौ ।
बीन नवीन फूल रचि रुचि सौं, हार गरे में डारिवौ ॥
बैनी चारु चमेली फूलन, मुतियन लरी सुधारिवौ ।
रुचिर चिकुर भरि सैंदुर कबहूँ, देखत तन मन बारिवौ ॥
काजर कोर अनोखी अँखियन, बंक निसंक निहारिवौ ।
अद्भुत अधर अरुणई तापै, मृदु हाँसी विस्तारिवौ ॥
भावत भोर भुजा अंसन दै, लटक-लटक पग धारिवौ ।
नख सिख रूप अनूप निरखि दृग, कोटिक जीवन हारिवौ ॥
कंज दाम छवि मृदुल मनोहर, उमगत बाँह पसारिवौ ।
भोरी हित अति दीन दुखी कौं, कुशल बूझि प्रतिपारिवौ ॥

ब्रज-वृन्दावन वास

कब बसिहौ ब्रज बीथिन माहीं ।
जहँ नित डोलत जुगल लाड़िले, दिये विमल गलबाहीं ।
मगन चलत डगमग पग धावन, छिन-छिन पंथ भुलाहीं ॥
ठहर-ठहर मुख कंज बिलोकत, मंद - मंद मुसकाहीं ।
फहरत अञ्चल चञ्चल कुंडल, परत कपोलन झाहीं ॥

कोटि मनोज अंग छबि मिल-मिल, चौंगुन होत सदाहीं ।
भोरी किशोरी तन मन अकुलत, देखन दृग ललचाहीं ।।

(१४३)

कब बसिहौं ब्रज कुञ्जन माहीं ।
ह्वै मृग बन मृगनैंनी ढूँढत, फिरौं कदम्बन छाहीं ।।
पीछें लगि नित रहौं किशोरी, छिन संग छाँड़त नाहीं ।
भोरी जबकर फेरि बिलोकौ, शिव अज लखि ललचाहीं ।।

(१४४)

दीजै मोहि वास व्रज माहीं ।
जुगल नाम कौ भजन निरन्तर, और कदम्बन छाहीं ।।
व्रज बासिन के जूठन टूका, अरु जमुना कौ पानी ।
रसिकन की सत संगति दीजै, सुनिबौ रस भरी बानी ।।
कुंजन कौ नित डौलिबौ दीजं, दीजौ भोर बुहारी ।
मिलवे की हिय माँहि चटपटी, प्रीति हिये अति भारी ।।
कोटि प्राण नित बारिबौ दीजै, देखत चरण छटारी ।
इतनी आस पुजावहु प्यारी, भोरी बलि बलिहारी ।।

(१४५)

श्री वृन्दावन तोहि करूँ परनाम ।
रँग भरी केलि करत जहँ नित-नित, रँग भरे श्यामा श्याम ।
रँग भरौ जमुना तीर सुहायौ, रँग भरे राजत धाम ।।
रँग भरे कुंज लता तरु पल्लव, शोभा अति अभिराम ।
रँग भरे खग रँग भरे द्रुमन पै, टेरत राधा नाम ।।
रँग भरो ललित रागिनी गावत, रँग भरी सहचरि बाम ।
भोरी हृदय रँग में बोरौ, देहु प्रीति निष्काम ।।

(१४६)

बन्दिय चातक मोर चकोरन ।
बन्दिय मृग जे सँग लगि डोलत, बँधे प्रेम के डोरन ।।
बन्दिय खग जे गुण-गण गावत, भीजे प्रीति हिलोरन ।

बन्दिय हंस प्रिया पुचकारत, देखि कृपा की कोरन ।।
औरो जेते जीव चराचर, जे अपनाये किशोरन ।
भोरी इक - इक रज कण ऊपर, वारिय प्राण करोरन ।।

यमुना-पुलिन

श्री यमुना पग वंदन कीजे ।
कबहूँ बड़े भाग तट बसिये, ताप हिये को छीजै ।।
जहँ हिलमिल जल केलि करत नित पिय प्यारी रस भीजै ।
केसर मृग मद चन्दन मिश्रित, बड़े भाग्य जल पीजै ।।
जूठन खाय थार की रहिये, गाइ - गाइ गुण जीजै ।
भोरी के हिय रँग भरी यमुना, प्रीति अटपटी दीजै ।।

(१४८)

कब हिय उठै बिरह को शूल ।
व्याकुल ढूँढों जुगल लाड़िले, विहरत जमुना कूल ।
इकटक नाम रटत निशिवासर, सपनेहु परै न भूल ।।
नैंन सनीर गात पुलकावलि, सुधि नहिं देह दुकूल ।
ऐसी प्रीति देहु अलबेली, भोरी जीवन मूल ।।

(१४९)

कब हिय बढ़ै हिये की पीर ।
तन मन अति अकुलात आइ कब, बैठहुँ जमुना तीर ।।
चहुँ दिस हेरि-हेरि कै टेरत, ढरत नैंन सों नीर ।
लोटत भूमि देह रज छाई, विलपत धरत न धीर ।।
डगर बगर नहिं नैकु निहारत, ढूँढत कुंज कुटीर ।
भोरी बिना प्रेम उर आये, धृग-धृग जन्म शरीर ।।

(१५०)

यमुना कूल कदम्बन नीचै ।
चहुँ दिस हेर-हेर अति दुख सों, बैठी अँखियाँ मीचै ।।
गहरी लेत उसाँस प्रेम की, मनो पयोधि उलीचै ।
भोरी विरह-ताप तन सँचरत, दृग जल धार न सींचै ।।

यमुना तट कब रात बितावौं ।
दरसन आस लुभानी बैठी, छिन न निमेष लगावौं ।
कबहूं हेर-हेर दिस टेरत, नैनन बारि बहावौं ।।
व्याकुल गात देह रोमांचित, नाम टेर रट लावौं ।
कबहूँ संभ्रम रूप लुभानी उठि-उठि इत उत धावौं ।।
कबहूँ गुन गन गुनत दयानिधि, बैठि-बैठि अकुलावौं ।
यह मेरी आस पुजाइय भोरी, बार-बार बलि जावौं ।।

(१५२)

अटकि रहै मन जमुना कूलन ।
रचि-रचि माल कंठ पहिरावै, नील सरोरुह फूलन ।।
झूलैं नैन कदम्बन डारन, रंग हिंडोरे झूलन ।
मिल निरवारत बलि-बलि भोरी, अरुझे विमल दुकूलन ।।

(१५३)

मन मेरौ भानु सुता तट डोलै ।
कानन बात सुनै नहिं प्यारी, मुख सौं कछू न बोलै ।।
करि शृंगार बदन अवलोकै, रूप छकी छबि तोलै ।
पुनि-पुनि तन मन बारत भोरी, गाँठ प्रीति की खोलै ।।

नवल-निकुञ्ज

मन मेरौ नवल निकुञ्जन डोलै ।
जहँ रँग भरी नवल अलबेली, दरपन लै छबि तोलै ।।
डगर-बगर हठ मिलत अकेले, करत नैन में मोलै ।
भोरी किशोरी बदन दुरावत, पिय हँसि घूँघट खोलै ।।

(१५५)

भावत मोहि निकुञ्जन बसिबौ ।
दंपति मुख की छबि दृग देखे, छिन-छिन हिये हुलसिबौं ।।
तन मन की न सँभार किशोरी, जुगल माधुरी फँसिबौ ।
हिल मिल कै तेरी बतियाँ सुनिबौ, ओठन सुधा बरसिबौ ।।

रस भरी चोज कछू मुख कहिवौ, तुम हँसाय कै हँसिबौ ।
सहज कृपालु कृपा बिन भोरो, कबलौं बैठि तरसिबौ ।।

(१५६)

मेरे मन भावै कुञ्जन रहिबौ ।
युगल माधुरी पान निरन्तर, रस की बतियाँ कहिबौ ।।
उबटन मज्जन भोग आरती, वस्तु प्रसादी लहिबौ ।
निशिदिन तोहि अवलोकत प्यारी, शशि-चकोर गति गहिबौ ।।
इतनी हौंस बढ़त उर माहीं, सपनेहु और न चहिबौ ।
सहज कृपालु दरस बिनु भोरी, लै लै नाम करहिबौ ।।

(१५७)

जहँ राजत नवल निकुञ्जन प्यारी ।
जहँ पग देत महावर मोहन, जहँ हित बाँधत बेनि सँभारी ।।
ललिता ललित विशाखा राजत, सेवा करत सखी सुख भारी ।
जहँ की महिमा वेद न जानत, शिव अज रहत बिचारी ।।
जहँ मन-बुद्धि-वचन नहिं पहुँचत, व्यापत नहीं काल माया री ।
भाग्य हीन पामर भोरी की, किस विधि तहाँ होइ चरचा री ।।

(१५८)

लाड़ भरी मुसिकात लजोली, झुकि देखत निज पाँय ।
लालच भरे लाल के लोचन, ललकि रहे तहँ छाय ।।
युगल बदन संगम अति सुन्दर, पद पंकज उर लाल ।
लालत ललित लाड़िली भोरी, चूमि - चूमि बलि जाय ।।

(१५९)

रस फिर गयौ दुहुन पर माई, प्रेम गहर की थाह न पाई ।
सावधान सजनी सँभरावै, बहुत उपायन चेत करावै ।
मीठी जुगति न कछु बनि आई, तब यह तीखी बुद्धि उपाई ।।
मान तज मान तज प्यारी, पिय की ओर निहार ।
बिनु आगस रूसी काहे, हौंजु पियौं जल बार ।।

बिनु जल क्यों जीवै मछरी, अपने जीय विचार ।
तू घन वे चातक प्यासे, व्याकुल करत पुकार ।।
आतुर उठ भैंटौ हा - हा, जोलौं घट में प्रान ।
सुन संभ्रम चौंके दोऊ, विरह व्यथा जिय जान ।।
सहसा पिय पाई सन्मुख, प्रिया परम अनुकूल ।
प्यारी हँसि चितई सादर, पकरि नाह भुजमूल ।।
वे जु ढुरे चरनन, लीन्हे इन जु खैंच हिय लाय ।
ऐसै हित डूबत काढ़े, झूँठौं मान मनाय ।।
वह मिलन परस्पर फूलन, झूलन उमगन प्यार ।
बलि - बलि हित भोरी, पुनि - पुनि पीवत पानी वार ।।

(१६०)

बलि-बलि जाऊँ कोकिल तेरी, प्यारी-प्यारी गावौ री ।
मेरौ सौ रँग रूप तिहारौ, मोसौं मनहि मिलावौ री ।।
यह जु नाम है जीवन मेरौ, प्यासे श्रवण सिरावो री ।
रँग में रँग बढ़ावौ हा-हा, उमगि-उमगि रट लावौ री ।।
तन मन प्राण निछावर तेरौ, अब न अधिक तरसावौ री ।
भोरी हित यह सुधा सजीवन, मेरौ जीय जिवावौ री ।।

रसिक संग एवं कृपा बल

रसिक संग बिनु सब ही झूठे ।
झूठे मन इन्द्रिय अरु काया, धर्म पुंजी हठ लूटे ।।
झूठे राज साज सुख संपति, ह्वै-ह्वै सबकौं छूटे ।
झूठे कुटुम, बन्धु, सुत, नारी, अन्त जु नातौ टूटे ।।
झूठे कर्म, धर्म, व्रत, संजम, हिय न प्रेम रस घूटे ।
कठिन घड़ी जब आवत भोरी, सबके भांडे फूटे ।।

(१६२)

रसिक संग बिनु प्रेम न होई ।
बिनु पद प्रेम भये अलबेली, भव सौं छुटत न कोई ।।

कीजै कृपा कृपालु किशोरी, रसिक संग जो पावौं ।
जासौं उपजै भाव हिये में, चरण कमल चित लावौं ।।
निशि वासर करि तिन की सेवा, तन की तपन मिटैये ।
तन मन जीवन वारिय भोरी, आँखिन माँहि बसैये ।।

(१६३)

रसिक रूप रस भीने । रहत सदा रुचि लीने ।।
रहत सदा रुचि लीने सेवत, नवल निकुञ्ज निवासी ।
जस जग जगमग रीति अटपटी, कुञ्जन करत खवासी ।।
छबि मधु छके खुमारी निसदिन, रहत चरण चित दीन्हे ।
अधम उधारण कारण डोलत, रसिक रूप रस भीने ।।

कारण रहित कृपाला । शरणागत प्रति पाला ।।
शरणागत प्रतिपाल कृपानिधि, निर्मल जस श्रुति गायौ ।
जुगल रूप जग जीव उधारन, अन्तर नैंक न पायौ ।।
तद्यपि हौं कछु अन्तर मानौं, सो सुनिये नव बाला ।
तब पद-धन यह दाता ताके, कारण रहित कृपाला ।।

देखन हियौ सिरावौं । तन को ताप बुझावौं ।।
तन की ताप बुझावौं प्यारी, चरण कमल हिय राखौं ।
नित-नित नव-नव सेवा ठानौं, कोमल बतियाँ भाखौं ।।
तिन की कृपा-कोर अलबेली, बान रसीली पावौं ।
मूरति भव-भय हरण मनोहर, देखत हियौ सिरावौं ।।

कृपा कोर टुक हेरौ । भव भय हरहु घनेरौ ।।
भव भय हरहु घनेरौ मेरौ, जुगल प्राण सों प्यारे ।
नित नव प्रीति रीति रस छाके, हिय में बसौ हमारे ।।
ब्रज कौ बास प्रेम की आसा, हिय में जुगल बसेरौ ।
माँगत भोरी गोद पसारै, कृपा कोर टुक हेरौ ।।

रसिकन की सत संगत दीजै ।
जासौं विमल भाव उर आवै, हियौ प्रेम रस भीजै ।।
तन मन धन पद ऊपर वारिय, नित - नित सेवा कीजै ।
भोरी भाग्य बड़े सौं कबहूं, जूठन लै लै जीजै ।।

रसिक-चित्त-स्थिति

बिनती सुनियो नव नागरी ।
अमल कमल पद निरखि सिरात । लोचन सो न विषय ललचात ।।
नूपुर धुनि सचु मानत कान । सुनत न सो श्रुति कथा पुरान ।।
मदन कदन विधु बदन निहार । जरत न सो तिय रूप दंवार ।।
मृग मद लौं दृग लोभित भाल । परत न सो भव-भँवर विशाल ।।
मृदुल हँसन पर वारत प्रान । देखत सो दृग खोलि न आन ।।
उमड़त हिय अनुराग अपार । करत न सो तन-बसन सँभार ।।
जगमग-जगमग तिन के भाग । निवहत सो नित प्रीति की लाग ।।
भोरी बिलपत दरशन चाह । करहु कृपानिधि नेह-निवाह ।।

(१६६)

मन मेरौ सुन्दर छवि पर झूलै ।
छाकौ पियँ प्रेम रस प्यालौ, असन-बसन सुधि भूलै ।।
बिरमै विमल कदम्बन छाहीं, हंस सुता के कूलै ।
मोहन मूरति देखत भोरी, उमगि-उमगि अति फूलै ।।

(१६७)

मन मेरौ रहै प्रेम रस छाकौ ।
विरमै मञ्जुल कुञ्जन माँहीं, तट न तजै यमुना कौ ।।
रीझ-रीझ कै तन मन वारै, देखत रूप छटा कौ ।
हिल मिल डोलत भोरी किशोरी, लाल बिहारी बाँकौ ।।

(१६८)

जे जन चरणन के रस पागे । तीन लोक तिन्ह तृण सम लागे ।।
छिन-छिन दरसन कौ मन लोभा । तिन कौं धूरि स्वर्ग की सोभा ।।

पंकज - पाँव छटा अति भावै । हियरा टूक - टूक ह्वै जावै ॥
लीला ललित सदा सुधि आवै । तिनकों कछू न देखि सुहावै ॥
जुगल मिलन की आसा धारैं । काहू ओर कभू न निहारैं ॥
सोचि-सोचि काटैं दिन राती । दुखसौं फटत छिनै-छिन छाती ॥
ऐसेन को जो जूठन पावौं । तौ अपनौ सौभाग्य मनावौं ॥
विषय - पंक में बूढ़त भोरी । करहु कृपा अब सहज किशोरी ॥

(१६९)

रूपहि दृष्टि समाय रही री, रूप हिराने नैना ।
बानी रूप हिरानी मुख सौं, क्यौं कहि आवैं बैना ॥
रूपहि श्रवन विमोहे ऐसे, शब्द न देत सुनाई ।
नासा गंध न सूँघ सकै री, रूप जु घ्राण समाई ॥
तनु कौ परस रूप हरि लीन्हौं, शीत उष्ण नहिं कोई ।
कहा खात कछु जीह न जानत, स्वाद रूप में खोई ॥
अचल भयो मन रूप समानौ, सकल कल्पना त्यागी ।
फुरत विचार-विवेक न कोई, बुद्धि रूप में पागी ॥
चित-चिंतन हरि लियो रूप ने, कछू न आवत ध्यानैं ।
अहं भाव हू रूप समान्यौं, को मैं कहाँ न जानैं ॥
अखिल विश्व लय भयौ रूप में, जाग्रत रूप हरी है ।
इक रस स्वप्न-सुषुप्ति-तुरीया, रूपहि में धगरी है ॥
रूप कौ रूप फूल ही दीसत, देखत तन मन फूलै ।
फूल कौ रूप भूल है कैधौं, फूल अपनपौ भूलै ॥
भूलहि भूल अधिक अधिकावै, रूप कौ स्वाद न पावै ।
जल के दरस मरै जो प्यासौ, कैसे तृषा बुझावै ॥
भूल के सिंधु अथाह रूप रस, प्यास बढ़ै उर भारी ।
समरथ श्री हित सजनी ताकी, एक पिवावन हारी ॥
प्यास अनन्त करौ हियरे में, रूप अनन्त पिवावौ ।
भूल अनन्त माधुरी मादक, चाह अनन्त जगावौ ॥

उछरि-उछरि कैं डूबत फिर-फिर डूब-डूब कैं उछरैं ।
पीवत तृषित रहै हित भोरी, जो हित कृपा करैं ।।

(१७०)

जो नैंननि नैंना अरुझाते ।
तो लैं स्वाँति बूँद सीपी लौं, पलक मूँद रहि जाते ।।
डूबत अधिक-अधिक गहरे अति, थाह न कबहूँ पाते ।
बाहिर कौ कछु दीख न परतौ, अन्धे लौं हहराते ।।
जियन मरन कछु समझि न परतौ, सब ही द्वन्द नसाते ।
हित भोरी का कहिये कैसे, केतौ काल बिताते ।।

(१७१)

जो नैंननि नैंना अरुझाते ।
तौ मेरी गति औरहि होती, जो हित में हित आते ।
भूख प्यास नहिं शीत न गर्मी, सुख दुख सकल सिराते ।।
बाहिर पंथ दीख नहिं परतौ, कर टटोर मग पाते ।
श्रवण शब्द सुनते नहिं मुख सौं, बचन कहत लड़खाते ।।
सब तन शिथिल पुलकि झरतौ जल, ज्ञान सकल बहि जाते ।
छिन-छिन अधिक-अधिक उमगत हिय, हुलसि-हुलसि बौराते ।।
हँसि-हँसि अधिक-अधिक ही हँसते, बार-बार बलि जाते ।
जियत मरे बौरे मतवारे, भोरी जगत हँसाते ।।

(१७२)

जो नैंननि नैंना अरुझाते ।
तौ नैंननि धँसि रहते नैंना, नैंननि व्यथा सुनाते ।
नैंननि कुशल बूझते नैंना, नैंननि पर बलि जाते ।।
नैंननि पीर समझि कैं नैंना, उमगि-उमगि भर आते ।
नैंना बरसत नैंना पीवत, नैंन तरसि अकुलाते ।।
नैंन अथाह पैरते नैंना, ना थकते न अघाते ।
नैंनन हौंस समुझकैं नैंना, नैंनन में मुसकाते ।।

नैंननि नैंन विहार देखते, नैंननि नैंन सिराते ।
नैंननि कौ हित जानत नैंना, नैंननि धीर बँधाते ।।
नैंननि व्यथा नैंन ही सुनते, नैंन नैंन उर लाते ।
ज्यों-ज्यों नैंना नैंननि मिलते, मिलन प्यास अधिकाते ।।
नैंननि की गति अद्भुत देखत, नैंना जिय पछताते ।
नैंना हँसत नैंन हो विलपत, नैंना उमगत गाते ।।
नैंननि की अरुझन नैंननि में, तोरत सबसों नाते ।
हित भोरी यह दुखिया नैंना, जो कबहूं मिल पाते ।।

(१७३)

जो नैंननि नैंना अरुझाते ।
जल में जल ज्यों दीठ-दीठ यों, फिर न कभू विलगाते ।।
छिन पल घड़ी याम निशि वासर, मास बरस जुग जाते ।
परतो खबर न कंहूं जोपै, कोटिन कलप सिराते ।।
इक टक पलक न लगते कबहूं, जाग्रत नींद भुलाते ।
उमग-उमग उमगत ही रहते, कोयन नीर चुचाते ।।
चकित शिथिल गति, थके-छके छवि मतवारे मदमाते ।
अन्धे से कछु देख न सकते, तम प्रकास बिसराते ।।
डूबत अधिक-अधिक अति प्यासे, छिन हीं छिन बौराते ।
हित भोरी हित माँहि समाते, हेरत हुलसि हिराते ।।

(१७४)

क्यों विलपत तू बैठि अकेली, कौन सुनै को जानैं ।
जो परि जाय श्रवण हूं कबहूं, को साँची करि मानैं ।।
मत जु सुनौं मत जानौं मानौं, मोहि विलपिबौ प्यारौ ।
नहिं बस चलै न सूझै कोऊ, दुख में और सहारौ ।।
वे जु हँसें झूँठी करि मानैं, नाँव धरैं सब मोकों ।
पै का करौं समात नहीं हिय, रुकै न कैसैं रोकौं ।।
जो चुप रहौं बढ़ै व्याकुलता, बरबस बैठि कराहौं ।

मैं कब कहौं हँसौ मत कोऊ, साँची कहौं सराहौं ।।
मोहि लगै हिय परम अकबकी, ऊँचे टेर बुलाऊँ ।
जो सब हँसैं बुरौ कहूँ काकौं, सबकौं मन बहलाऊँ ।।
सबनि विनोद मोद हिय मेरे, कछु-कछु धीरज होई ।
भोरी हित कछु लेत काहु कौ, निजु दिन काटत रोई ।।

(१७५)

कहा कहौं गति परम अटपटी, का खोयौ का पायौ ।
पावन हारौ कहौ कौन जब, आपते आप हिरायौ ।।
छवि आई ह्वै दरद जु हियरा, दरद होय दुलरायौ ।
दरदहि दरद मिलत दिन दूनों, दरद हिये अधिकायौ ।।
जल-थल-गगन विश्व सब भूल्यौ, तन मन प्राण गँवायौ ।
ज्यों भीतर त्यों बाहिर इक रस, एक दरद ही पायौ ।।
किन अनभयौ कौन सो जान्यौं, बचन कहत बहकायौ ।
हित भोरी हित कृपा कोर के, मादक ही बौरायौ ।।

(१७६)

मुख चन्द्र की यह चाँदनी, हिय कुञ्ज में छाई रहै ।
छवि पान मत्त चकोर अखियाँ, देखि बौराई रहै ।।
यह कोर करुणा सिंधु की, लहरी हिलोरत ही रहै ।
यह प्रेम की उमगन उमँग जुत, जीय बोरत ही रहै ।।
यह बंक चितवन नैन की, हियरा में नित धँसती रहै ।
यह चारु छूटी लटन ऊपर, मो सुरत फँसती रहै ।।
यह बाँह फरकीली सदा, भुज दीन पकरत ही रहै ।
यह माधुरी के जाल तन-मति, मेरी जकरत ही रहै ।।
नख चन्द की यह ज्योति हिय, तम-तोम टारत ही रहै ।
यह बान करुणा की सदा, बिगड़ी सुधारत ही रहै ।।
यह आँख मेरी लाड़िले, मग रावरौ हेरत रहै ।

यह मेरी रसना चातकी, रस-घन तुम्हें टेरत रहै ।।
जहँ-जहँ परै मम दीठ जागत रावरी छवि लखि परै ।
सोवते - सपने न हिय सौं, आपकी मूरति टरै ।।
भोरी हित जन दीन की, बिनती अबसि यह मानिये ।
कोटि जन्मन की भिखारिन, आपुनो पहिचानिये ।।

(१७७)

कहा कहौं कछु कहो न जाय ।
तुम हिय तुम ही दरद हिये को, औषध वैद उपाय ।।
तुम ही अगनि, जरनि तुम ही हौ, तुम पुनि लेत बुझाय ।
तुम ही सुधा हहा विष तुम ही, मारत लेत जिवाय ।।
हौं बलि कबहुँ उमगि हित प्यारी, हेरौ मृदु मुसिक्याय ।
कहा कहौं गति कौन भई यह, मरम न जान्यौ जाय ।।
हुती हौंस हियरे लै राखौं, मृदु मूरत दुलराय ।
सो न मिलो ना ललकन, उलटौ हियरा गयौ हिराय ।।
रह गई पीर पिरात, कहारी को विलपत बिललाय ।
बिनु जिय - जियत लाड़िली दासी, कहौ कौन पतियाय ।।
मृदु मुसिकात छबीली छबि सौं, रहौ दृगन में छाय ।
विलुलित-ललित सँभारत बारन, भुजा मृनाल उठाय ।।
भृकुटि मरोरि तिरीछी चितवन, सुधा सिन्धु बरसाय ।
बलि-बलि जात ललित हित प्यारी, प्रियतम हा-हा खाय ।।

(१७८)

सब विधि मैं हित की हित मेरे ।
परिहरि संक सकुच सब ही की, प्रकट कहत हौं टेरे ।।
मैं जानों हित जानत नीकैं, रीझि बोलि लई नेरे ।
मतलब नहीं कछु काहू सों, मिटि गये झगरे-झेरे ।।
कोऊ निन्दत कोऊ बन्दत, वृथा बकत बहुतेरे ।
अपनो दूल्हा राजी चहिए, जा संग पारे फेरे ।।

यहै प्रतीति प्रबल उर अन्तर, तदपि न चैन हियेरे ।
हित भोरी बलिहार लाड़िले, आवहु उमगि सबेरे ।।

(१७९)

प्रीति रीति कैसे कहि आवै ।
करि बिचार हिय हार रहत हौं, क्यौं हूँ मन न समावै ।।
चन्दहि रहत एक टक देखत, सो जग धन्य चकोरी ।
टूटैं सीस दीठ ना छूटैं, तदपि प्रीति अति थोरी ।।
तन मन होइ चकोरी चन्दा, शशि ह्वै शशि छबि पीवै ।
तौ कछु स्वाद और ही पावै, पियत जु प्यासी जीवै ।।
तद्यपि प्रीति इकंगी कहियै, जहाँ न प्रेमी दोऊ ।
उधरहि रस जु चकोरहि, इक टक चाहै चन्दा सोऊ ।।
ह्वै चकोर वह चहै चकोरहि, यह चन्दा ह्वै चन्दहि ।
छिन-छिन में तन पलटैं दोऊ, अरुझि प्रेम के फन्दहि ।।
याकौ वामें वाकौ यामें, पलटि-पलटि हित पावै ।
छिन-छिन प्रेम पयोनिधि संगम अधिक-अधिक अधिकावै ।।
ज्यौं द्वै दरपन बीच दीप की, अगनित आभा दरसै ।
द्विगुण चौगुनौ फेरि अठगुनौ, त्यौं अनन्त हित सरसै ।।
अनुप्रमान अनुमान कह्यौ यह, प्रीत बात कछु औरै ।
ताकी थाह कौन अवगाहै, दूरहि तें मति बौरै ।।
भोरी हित जब द्रवैं व्यास सुत, गूंगे लौं गुर खाऊँ ।
रोम-रोम भरि रहै मिठाई, ना कछु कहौं कहाऊँ ।।

(१८०)

श्री हित कृपा कोर की लीला, मोपै कही न जाय ।
अति मीठी अति पैनी कसकै, रोम-रोम गई छाय ।।
बिन देखो देखो सी लागै, यह अचरज गति हाय ।
मादक बिना पियै मतवारी, निलज फिरौं बौराय ।।

जो कोऊ कछु पूछै हा - हा, कहा कहौं समुझाय ।
अंधेरे कौं उन्माद रूप कौ, कहौ कौन पतियाय ।।
रोमनि रोम अग्नि सी व्यापै, तदपि न देह जराय ।
जो कोऊ काढ़ि करेजौ देखै, सो समझै उर घाय ।।
मन-मन आप-आप ही खीझौं, आप रीझि बलि जाय ।
आप ही हंसै आप ही रोवै, फूल उठै मुरझाय ।।
होतौ हिय तौ मरम बूझतौ, सोऊ गयौ हिराय ।
तौहू पीर कहौ को मानै, बिनु हिय कहा पिराय ।।
छिन-छिन बरस-बरस से बीतैं, कबधौं हित उर आय ।
कोऊ कछु अबलम्ब बतावौ, जैसे विरह सिराय ।।
हित भोरी बलिहारी वाकी, जो हित के गुण गाय ।
डूबत दीन दुखी दुख सागर भुज गहि लेहि जिवाय ।।

(१८१)

हम रूप सुधा रस वारे, कोई का जानैं बेचारे ।
पड़े रहत अलमस्त एक रस, छके प्रेम मतवारे ।
अटके छबि जनु भौंर कंज पर, तन-मन-धन सब हारे ।।
भुक्ति मुक्ति अरु कुगति-सुगति लौं भरि दृग छिन न निहारे ।
भोरी श्री हरिवंश कृपा बल, जागे भाग्य हमारे ।।

(१८२)

(मेरो) लटक रही बैनी घुटुअन लौं (मोपै) नीकैं गुही न जाय ।
जौलौं पकरि सँभारन लागौं, हिय जिय जात हिराय ।
रुचिर मनोहर कोमल चिकनी, नागिन ज्यों बल खाय ।।
याके फन्द कौन निरवारै, देखत सुरत ठगाय ।
गहरु वृथा ही होत टहल में, समुझत जीय पिराय ।।
अपनी छबि पर आप सखी री, मन मेरौ पछिताय ।
श्री हित रूप प्रसादी रीझन, हित भोरी बलि जाय ।।

सहज सुभाव परचौ इन अँखियन, देखत हूँ अकुलाय ।
टरत न टारी बदन चन्द्र सौं, पान करत न अघाय ।।
छकी मत्त बलि जात रंक तऊ, महा तृषित पछिताय ।
रोम-रोम मिलि एक हौंन कौं, अरबरायँ बौराय ।।
डूबत थाह न रूप सिन्धु में, पैरत पार न पाय ।
छबि की तुङ्ग-तरङ्गन झोकन, कहा मीन ठहराय ।।
डूबत उछरत रहत निरन्तर, चैन नेकु हूँ नाय ।
दरसन हानि अकबकी लागै, जहँ की तहँ न समाय ।।
हेरत हहा हिराय जात हैं, अति व्याकुल बिललाय ।
इनकौं सुख न कहूं सपनेहूं, मिली-मिली बिलगाय ।।
गद-गद कंठ हियौ भरि आयौ, कोये उमगि चुचाय ।
आतुर उठीं भुजा भरि भोरी, चख चूमत बलि जाय ।।

(१८४)

हिय के भीतर अरुझें अँखियाँ, बाहिर कछू न दिखावैं ।
हिय के भीतर श्रवण समावें, बाहिर की न सुनावैं ।।
हिय के भीतर बानी बिरमैं, बाहिर बचन न आवैं ।
स्वाद घ्राण रस परस हिये में, बाहिर मन नहिं धावैं ।।
हिय भीतर प्रगटै हित जोरी, सब द्वारे मुंदि जावैं ।
तब हिय पैठि बैठि हित भोरी, उमगन लाड़ लड़ावैं ।।
हित कौ बन हित की ही जमुना, हित की कुञ्ज सुहावैं ।
हित के दम्पति हित की सजनी, हित सों हित दुलरावैं ।।
भोरी हित हित ही को याचक, कृपा कोर हित पावैं ।
हित तन हित मन हितकी इन्द्रिय, हित हिय हितहि सिरावैं ।।

।। दोहा ।।

हिय मेरौ प्यारी भयौ, नैना मोहन लाल ।
नैंना अटके हीय सौं, हित भोरी बेहाल ।।

जब सों वह छवि हिय गढ़ो, हिय गति कही न जाय ।
नित सिरात नित ही तपत, टूटि - टूटि जुरि जाय ।।
कठिन पीर है प्रेम की, बिरले जानैं ताहि ।
जो जानैं ते कहैं नहिं, सहैं सराहि - सराहि ।।
ना काहू सों बोलिबौ, ना कोई ब्यौहार ।
अपनी कुंवरि कृपालु कौं, जियत निहार-निहार ।।
जिय तोहि ऐसो चाहिये, सब ही की सहि लेहि ।
घट-घट में प्रभु रमि रह्यौ, उत्तर काकौं देहि ।।
तन छुटिवे लों हद्द है, सहि लै मन धरि धीर ।
क्यों इतनो ममता करै, कोटिन छाँड़ि शरीर ।।
क्यों काहू कौं बावरे, अपनौं दुःख सुनाय ।
वह हिय में दुःख पावई, तेरी पीर न जाय ।।
रे-मूरख. क्यों चतुर बनि, अरुझत बारम्बार ।
भलौ-भलौ कहि छाँड़ि दै, बहु बातन ब्यौहार ।।
हठ करि पक्ष न रोपिये, नहिं करिये उपदेस ।
सब सों नमि नीचे रहौ, छाँड़ि बड़प्पन लेस ।।
सब ज्ञानी सब ही चतुर, उर प्रेरक हित-चंद ।
कहैं-करैं सो सब भलो, तू न बोल मति मंद ।।
कठिन पीर है प्रेम की, बिरले जानै ताहि ।
जे जानें ते कहैं नहीं, जहैं सराहि - सराहि ।।
जब सों वह छवि हिय गढ़ो, हिय गति कहो न जाय ।
नित सिरात नित ही तपत, टूटि-टूटि जुरि जाय ।।

आत्म-निवेदन

हरिवंश हित जोरी उमगि, ऐसी कृपा मोपै करौ ।
परिजाय यह जु सुभाव सहजहि, कबहुँ अन्तर जनि परौ ।।

जे नाम मुख सौं लैंहि तुम्हरौ, उमगि तिन पाँयन परौं ।
तिन सौं सदा आधीन बनौं, दीन वाणी उच्चरौं ।।
छवि रावरी देखत उमगि जे नैन जल भर लावहीं ।
तिन दरस इक टक करत कबहूँ, नैन मम न अघावहीं ।।
जे प्रीति सों रस रीति के, मृदु गीत उमगत गावहीं ।
ते प्राणहू के प्राण लागैं, सदा हिय मम भावहीं ।।
अपराध मन क्रम वचन तिनके, कबहुँ जिन करबाइयो ।
जैसे लहैं सुख सोई करौं, यह बुद्धि जिय उपजाइयो ।।
अभिमान तिन सौं ना करौं, कबहूं बराबर ना बनौं ।
मत्सर न कबहूं होय तिन उत्कर्ष हिय लखि सुख सनौं ।।
जो त्रासन कोटिन दैंहि मोकौं, शस्त्र लै लै मारहीं ।
तऊ भाव बढ़तौ ही रहै, जिय लेश दुख मानैं नहीं ।।
नर-नारि साधु-असाधु राजा-रंक जिय में ना धरौं ।
जन रावरे जिय जानि मैं तौ दौरि पाँयन ही परौं ।।
अति पातकी अति स्वारथी लंपट न जिय जानौं तिन्हें ।
जन जानि तुम्हरे नाथ तुम हूं ते अधिक मानौं तिन्हें ।।
मोसौं सदा सुख ही लहैं, मोपै कृपा नित ही करैं ।
यह बीनती साँची करौ, मेरी न वे सुधि बीसरैं ।।
तिनकौं न छोड़ौं संग चाहे विश्व सब निन्दा करैं ।
तिनसों न होय कुभाव तिनमें कोउ न अवगुण लखि परैं ।।
जौंलौं जियौं तिन संग रहि, तिनकी कृपा अनुभव करौं ।
हित भोरी तिनके ढिग मरों, ह्वै छार तिन पद तर परौं ।।

(१८७)

भव सिंधु बही हौं जात ।
बार-बार हरिवंश लाड़िले टेर-टेर अकुलात ।।
नाना भौंर तरंग कामना, इत उत गोता खात ।
भोरी तुम सौं क्यों बन आवै, खड़े-खड़े मुसिकात ।।

ऐसी क्यों बनि आवत प्यारी ।
तुम ठाड़ो तट पै मुसकावत, हौं डूबत भव सिंधु मँझारी ।
व्याकुल चित्त शिथिल सब देही, परी भँवर हौं पैरत हारी ।।
अब विलंब जिन करहु लाड़िली, पल-छिन कठिन जात सुकुमारी ।
हौं भोरी पीछें पछितैं हौ, आप आपनी ओर निहारी ।।

(१८९)

मोहि टेरन की कछु बान परी री ।
दानी बड़ो सुनी त्रिभुवन में, तासों द्वार पै आइ अरी री ।
टरिहौं नहीं न याचहुँ औरें, अब तेरे द्वार डरी सो डरी री ।।
अजरज हौं कब की जु पुकारत, भनक न अजहू कान परी री ।।
तब हूं तौ भोरी बनि आई, हो भोरी यह कीर्ति खरी री ।
कहि हौ बिकल कबहुँ इक कोऊ, भोरी टेरत तलफ मरी री ।।

(१९०)

मोहि परी अड़िबे की बान ।
तुम अजहूँ हेरत न कृपा करि, मैं टेरत हठ ठान ।।
तुम पर हार जन्म हौं बैठी, श्री पद शपथ प्रमान ।
अब बलिहार नैंक हँसि हेरौ, भोरी आपनि जान ।।

(१९१)

कोमल चित्त लाड़िली प्यारी, क्यों निष्ठुरता आनी ।
कारण रहित कृपाल सुन्दरी, सर्वोपरि महारानी ।।
अधम उधारन प्रगट लोक तिहुँ,कोमल चित ठकुरानी ।
मेरेहि ओर न हेरत अज हूँ, हौं टेरत अकुलानी ।।
आपनि बानि न छाँडिय भोरी, मोहि अभागिन जानी ।।

(१९२)

अब मैं काहि सुनावौं टेरी ।
(श्री) राधाबल्लभ लाल लाड़िले, और सुनै को मेरी ।।
यह संसार मूँज-बन भटकत, विपत सही बहुतेरी ।

अब पद कंज छाँड़ि मन मधुकर, कित ले जावौं फेरी ।।
नहिं माँगौं बैकुण्ठ स्वर्ग कछु, माँगत लाज हियेरी ।
भुक्ति-मुक्ति कौ भार चलै क्यों, क्षीण अवस्था मेरी ।।
प्रीति रीति परबीन जुगल वर, गत जानौं हिय केरी ।
लाग्यौ नेह निबाहव भोरी, कृपा कोर सौं हेरी ।।

(१६३)

प्यारी हो, मेरौ हृदय अकुलावै ।
जमुना तीर मूँद दृग अब कब, चरण कमल चित लावै ।।
अरबराय दृग खोलि निहारत, आरत टेर सुनावै ।
कबहुँ भाग सराहत अपनौ, रीझि-रीझि गुन गावै ।।
कबहूँ समझि अभाग सहमि, दृग जल ढारत मुरझावै ।
आयु सिरानी जात छिनहि छिन, धीरज नेक न आवै ।।
मन माने मन करत मनोरथ, हौंसन जनम गँवावै ।
सहज कृपाल स्वामिनी भोरी, छिन इक दरसन पावै ।।

(१६४)

सुनि राधे तोहि ऐसी न चहिये ।
कब लौं नरक सरिस विषयन में, दारुण दुखन सहैये ।।
कब लौं कोटि प्रलय सी स्वामिनि, विरह अग्नि तनु दहिये ।
भोरी को स्वामिनि अलबेली, हठ बरबस भुज गहिये ।।
जन्म-जन्म लगि सहज किशोरी, नित नव नेह निबहिये ।

(१६५)

सुनौ विनय दै कान नवेली ।
नंद-नन्दन बस करन राधिके, छबि निधि गरव गहेली ।।
तौं बल साधन धर्म-कर्म-व्रत, निगम-नीति हठ ठेली ।
सहज कृपालु कृपा घर बैठे, चाहत लूट सकेली ।।
भोरी पाँव पसारे सोवत, सिर स्वामिनि अलबेली ।।

(१९६)

कस न लाड़िली द्रवहु दया करि ।
मेटहु विषम जगत की ज्वाला, सजल जलज से चरण हृदय धरि ।।
सूझ परत न साधना कोऊ, चहुँ दिशि हेरत टेरत डरि-डरि ।
भोरी मूर्छि परी तेहि भेटिय, लै उठाय उर लाय भुजा भरि ।।

(१९७)

टेरि सुनौ वृषभानु किशोरी ।
बीती वृथा आयु बहुतेरी, शेष रही अति थोरी ।।
मन अकुलात उपाय न सूझत, शरण गही दृढ़ तोरी ।
भोरी सहज कृपालु निहारौ, नैक कृपा की कोरी ।।

(१९८)

तुम तौ दोऊ रहत रस छाके ।
नित नव हास विलास रास रस, मगन सदा सुख ताके ।।
भोरी आरत टेरत द्वारे, बचन सुनै को ताके ।
प्रण की लाज कृपालु सुन्दरी, हरौ अशुभ - शुभ वाके ।।

(१९९)

हो प्यारी यह माँगे जु दीजै ।
नित पद लग्यौ रहै अनुरागै, ऐसौ मो मन कीजै ।।
मैं जु चहत तोहि भेंट चढ़ावन, सो बरबस लै लीजै ।
हौं हारत निज तन-मन-जीवन, जीति आपनौ कीजै ।।
भोरी हित पद-कंज छटा की, आसा धरि-धरि जीजै ।

(२००)

ऐसौ शुभ दिन कबहुँ जु आवै ।
जमुना तट पै विकल विरहनी, दृग जल धार बहावै ।।
जब दृग मूँदि उच्च स्वर टेरौं, स्वामिनि मृदु मुसिकावै ।
जब हौं विकल परौं धरणी पै, भुज गहि आइ उठावै ।।
कोटि चन्द्र छबि बदन मनोहर, मृदु मुसिकान सुहावै ।
भोरी छिन दृग दरसन आसा, बार-बार ललचावै ।।

कब हौं कुञ्ज गली चलि जैहौं ।।
लै लै नाम पुकारत आरत, चहुँ दिसि चकित चितैहौं ।
दरसन लोभ मगन हौं इक टक, हेरत पल न लगैहौं ।।
आवत परम कृपालु स्वामिनी, लोट पन्थ में जैहौं ।
भोरी अधर अरुण रँग रञ्जित, मुसिकन दृगन बसैहौं ।।

(२०२)

देखत-देखत दिन सब बीते ।
तुम अटूट अनुराग की दाता, हम अजहूँ रीते के रीते ।।
हृदय न प्रेम न नैम नाम कौ, साधन सकल तजे अबहीते ।
बिनु पद पंकज भोरी स्वामिनि, कितहूँ ठौर न ठीक सुभीते ।।

(२०३)

बीत गये दिन सोच न अबहूँ ।।
ध्यान कियौ छिन नाम लियौना, हृदय न भाव भयौ कबहूँ ।
सन्त मार्ग तजि छाँड़े कुल व्रत, और कुकर्म किये सबहूँ ।।
ठाँव न कोटि नरक में दीसत, नहिं पछितात बैठिकैं लबहूँ ।
भोरी की स्वामिनि अलबेली, चरण कञ्ज की आसा तबहूँ ।।

(२०४)

शरण-शरण कहि आरत ठानी ।।
किये कुकर्म कोटि विधि जग में,प्रीति रीति बिनु सहमि सकानी ।
लोक-वेद की रीति न जानी, निशि दिन विषय रही लपटानी ।।
अब सूझत सब ही अँधियारौ, आयु सिरात जानि पछतानी ।
तामस तन कछु भजन बनत ना, चरण विमुख मति अवगुन खानी ।।
तिन भय विकल काँपत तन भोरी, दीन पुकार करी घबरानी ।
कोमल चित्त कृपाल स्वामिनी, आरत टेर करत अकुलानी ।।

(२०५)

चकित चितै चहुँ ओर पुकारी ।
गहन विपिन संसार माँहि चहुँ, लागी विषय दवारी ।

जरत देखिये साधन सब ही, भक्ति आदि सुखकारी ॥
कितहुँ न ठौर भ्रमत मन मेरौ, पल छिन बीतत भारी ।
त्राहि-त्राहि शरणागत भोरी, श्री वृषभान दुलारी ॥

(२०६)

माई मोकौं बधिक भयौ मन मेरौ ।
विषय डोर सौं बांधे मोकौं, खैंचि खैंचि झकझेरौ ॥
दै-दै घाव तलफिवौ देखै, नित-नित नयौ बखेरौ ।
कोटि जन्म कौ बैरी अजहूँ, करत न हाय निबेरौ ॥
तिहि भय विकल पुकारत आरत, भोरी मोतन हेरौ ।
सहज कृपालु अभय करि दीजै, श्री पद माहिं बसेरौ ॥

(२०७)

रोकत चित्त रुकत नहिं प्यारी ।
विषय प्रवाह बह्यौ ही जावै, रोकि-रोकि हठ हारी ।
हौं असमर्थ न कछु बन आवै, लगत नैंन अंधियारी ॥
लीजे खैंचि कृपालु कृपा करि, प्रेम पाश गल डारी ।
भोरी की अलबेली स्वामिनि, सब विधि राखन हारी ॥

(२०८)

मो मन मोहि नित नाच नचावै ।
विषयन में भटकै निशि बासर, नित नव त्रास दिखावै ॥
हौं तासौं अति आरत टेरत, तो बिनु कौन छुड़ावै ।
भोरी स्वामिनि बेर न कीजिय, तन मन अति अकुलावै ॥

(२०९)

श्री वृषभान लाड़िली प्यारी, अब जिन बिलँब लगावौ ।
मैं घबरात परी विषयानल, बेगि धाइ किन आवौ ॥
हौं त्रय ताप तप्त अति विह्वल, सो तुम सहज मिटावौ ।
कोमल कमल चरण अति शीतल, हिय धरि हृदय सिरावौ ॥

मो मन चञ्चल इत उत दौरत,तिहि निज रूप फँसावौ ।
विषय महाविष पियत बरजि हठ,प्रेम सुधा रस प्यावौ ।।
हौं इतनी जु कृपा करि, छिन इक सन्मुख आवौ ।
कोटि चन्द द्युति फीकी करि कै, मंद-मंद मुसक्यावौ ।।
प्यासे नैन चकोर वदन विधु, माधुरि पान करावौ ।
मनमोहन मन हरन महाछवि, सो मम हृदय बसावौ ।।
अधम उधारन सहज कृपानिधि, भुजा पकरि अपनावौ ।
भोरी की अलबेली स्वामिनि, त्रिभुवन सुयश बढ़ावौ ।।

(२१०)

हरि-हरि जनम बीत्यौ जाय ।
योग यज्ञ जप साधन संयम, सब ही कठिन दिखात ।।
भक्ति न भाव न नेम नाम कौ, चित्त न छिन ठहरात ।
विषय मत्त निज दशा निहारत, हौं पुनि-पुनि पछतात ।।
बहु विधि यत्न हेरि हौं हारी, कछु नहिं बनत दिखात ।
भय व्याकुल लै नाम तिहारौं, टेर-टेर अकुलात ।।
भोरी की अलबेलो स्वामिनि,सुनि-सुनि मृदु मुसिकात ।।

(२११)

कटि कसि मुकुट सँभार स्वामिनी, वेगहि आवहु धाई ।
विषय अग्नि की ज्वाल जरत तनु, भोरी अति घबराई ।।
हेरत दिशा नाम लै तेरौ, आरत टेर लगाई ।
यह उद्धार समय है वाकौ, दुख अब सह्यौ न जाई ।।
इतनी करहु कृपालु स्वामिनी, छिन इक प्रगटौ आई ।
मन्द हास्य मुख कञ्ज माधुरी, देखि जु नैन सिराई ।।
सोई स्वरूप दृग भरौ सदा ही, सोइ चहुँ ओर दिखाई ।
रोम-रोम रमि रहै लाड़िली, तौ सब भाँति भलाई ।।
पुनि न स्वर्ग वैकुण्ठ चहत कछु, नरकन सौं न डराई ।
लीला नाम रूप जो तुम्हरौ, तिन मन रहै समाई ।।

सेवा करैं मगन मन निशि दिन, बहु विधि लाड़ लड़ाई ।
गावत गीत माधुरी छाको, लोला ललित लुभाई ।।
करत मनोरथ बहु विधि नित-नित, तेरी आस सदाई ।
अधम उधारन सहज कृपा करि देहु जु आस पुजाई ।।
जानत हौं सब ही बनि ऐहै, स्वामिनि तोरि बनाई ।
भोरी बलि अलबेली अब ही, प्रगट करहु प्रभुताई ।।

(२१२)

बैठी कहा रूप गर्वीली ।
नंदनँदन मन हरण लाड़िली, वारिज मुख पर भौंह लचीली ।।
अधर बिंब रञ्जित मृदु हाँसी, शरद कोटि विधु बरन छबीली ।
चिकुर चंद्रिकन बीच अरध विधु,चिबुक चारु दृग चपल रसीली ।।
कोमल तनु कोमल मन प्यारी, प्रीति रीति संकोच लजीली ।
हौं बूड़त भव सिंधु माँझ अब, थकि-थकि देह भई सब ढीली ।।
है इतनी उर उमँग लाड़िली, छिन इक देखौं रंग रंगीली ।
हा-हा अब विलंब नहिं कीजै, मत तरसावौ दिल दरदीली ।।
भोरी की अलबेली स्वामिनि, श्याम सुन्दर रस रसिक रसीली ।।

(२१३)

अब मोहि कछु ऐसी जान परै ।
हौं जु पतित सब भाँति अभागी, स्वामिनि नहिं निज ढरनि ढरै ।।
काँपत देह त्रास हिय भारी, अब न चित्त छिन धीर धरै ।
साधन नेम न ठौर ठिकानौ, व्याकुल द्वार पै दीन ररै ।।
कहौ कृपा करि कै अलबेली, भोरी शठ कित जाइ मरै ।।

(२१४)

आपनि दिस देखत त्रास बढ़ै ।
नीची अति सब ही पतितन में, का बनाय कै बात गढ़ै ।।
का मुँह लै बिनती हठ ठानै, लाज सौं बैन न एक कढ़ै ।
अलबेली जु रुचै सोई कीजै, अब तौ भोरि असीस पढ़ै ।।

का मुँह लै बहु बिनय सुनावै ।।
सबै भाँति पतितन में नामी, गढ़ि-गढ़ि कै का बात बनावै ।
झूठो प्रीति चलै किमि तोसौं, कैसे कौन कुकर्म छिपावै ।।
विषयन में घूमत नित भोरी, भक्ति किये बिनु अति पछितावै ।
याहू पै अचरज न कछू जो, अलबेली हँसि पार लगावै ।।

(२१६)

विषय दवार लगी जग बन अति घोर ।
सुनहु विनय अब मेरी नागरि नवल किशोर ।।
मंजु कुञ्ज सुख पुञ्ज सु शीतल छाँव ।
जमुना कूल कदंबन स्वामिनि मोहि बसाव ।।
भजन नहीं अनुराग न ठीक न ठाँव ।
ताकौं बास बतावहु बरसानो निज गाँव ।।
मो मन ऐसौ करौ कृपा की कोर ।
तजि पद कञ्ज विषय में कबहू रमै न फेरि बहोरि ।।
नाम रटत निशि वासर झूमत नैन ।
गाबत डोलौं ब्रज में श्री राधा यश बैन ।।
रहसि निकुञ्ज देखि गोवर्धन भूमि ।
फटै हृदय विरहाकुल पुनि-पुनि गिरौं जु झूमि ।।
तुम हिय बसौ न दूजौ छिनहु दिखाव ।
भाल कु अंक मेटि हठ भुजा पकरि अपनाव ।।
दरस चटपटो बाढ़ै प्रेम अभंग ।
आइ मिलौ तब कबहू लै नट नागर संग ।।
श्याम तिलक पट श्यामा नदी सुहाइ ।
श्यामा नाम आप लिय श्याम सौं नेह लगाइ ।।
श्याम हृदय मम तामें नीके बास ।
आइ करहु अलबेली मेटहु त्रास ।।
टेढ़ौ वेष भृकुटि तिमि लोचन रंग ।
टेढ़ी मूरति टेढ़ ही कौ निशि दिन संग ।।

टेढ़ी मति अति मेरी टेढ़ौ हीय ।
टेढ़े आइ अड़ी तहँ दोऊ प्यारी पीय ।।
मिटै सोच नित नव-नव होइ हुलास ।
भागै दूर अभाग तम देखि चरन परकास ।।
विनवत नित-नित भोरी आरति ठानि ।
सुनि कृपालु अलबेली स्वामिनि मृदु मुसिकानि ।।

(२१७)

सुन मेरी विनय छबीली राधा, तू तौ करुणा सिन्धु अगाधा ।
मैं सब भाँतिन अधम अभागी, तो पद-कंज नहीं अनुरागी ।
सकल भाँति विषयन में पूरी, प्रीति-प्रतीत भजन सौं दूरी ।
बीती आयु समुझि पछताती, तौहू फटै न दुख सौं छाती ।
तू सब भाँति राखिवे वारी, सरवोपरि अलबेली प्यारी ।
नंदनँदन बस करन छबीली, सहज कृपानिधि दिल दरदीली ।
देखहु सहज कृपा की कोरी, विपिन विहारिन नवल किशोरी ।
मेटहु सब भव ताप हमारी, सीतल चरण कंज हिय धारी ।
भय सब हरौ नेंक हँसि हेरौ, हस्त कमल सिर ऊपर फेरौ ।
चन्द्र बदन नीको मुसकावन, दृष्टि कृपामृत रस सरसावन ।
छिन इक दरस दिखावौ नीकौ, सब सुख सिन्धु भाँवतौ जीकौ ।
साधन-साध्य न और सुहावैं, दरस लालसा दृग अकुलावैं ।
बार-बार विनवौं कर जोरी, चरण शरण हठ राखिये भोरी ।

(२१८)

सुन्दर श्याम सौं सीख उपाई ।
दुखिया दीन सभीत लाड़िली, हौं तोहि याचन आई ।।
वाकौं बकी पयोधर लिपट्यौ, दीन्हौ गरल पिबाई ।
तो पद कंज सजीवन हिय धरि, विष तन दियौ मिटाई ।।
हौं जो विषम विषय विष पीयौ, हृदय ताप अधिकाई ।।
सोई चरण चहौं लै राखौं, तप्त हृदय सौं लाई ।।

सो नाथ्यौ अहि-नाथ कालिया, त्रिभुवन भई बड़ाई ।
तब पद नख-मणि मंजु छटा सौं, विष की व्यथा न पाई ॥
हौं संसार महा अहि काटी, तासौं अति घबराई ।
सोई पद नख-मणि छटा लाड़िली, याचत विनय सुहाई ॥
दावानल तिन पान कियौ हौ, अग्नि प्रबल सुख पाई ।
सजल जलज पद युगल तिहारे, सहजहि ताप बुझाई ॥
हौं त्रय ताप तपत निशि वासर, पीर प्रचण्ड सदाई ।
सो पद सीतल कंज कृपा करि, हिय पर धारौ आई ॥
इन अति कठिन कुरोगन कौ कहुँ, कछु उपचार न माई ।
तू तौ है अलबेली स्वामिनि, विश्व विदित प्रभुताई ॥
देखि बिलम्ब भई अति व्याकुल, रोवत टेर सुनाई ।
भोरी सहज कृपालु किशोरी, करुणा कहाँ भुलाई ॥

(२१९)

आज लौं लखी न नैंन, आसहू कछू परै न,
कौन भाँति धीर धरौं, कृपा सिंधु स्वामिनी ।
फाटत नहिं हीय हाय, छिन-छिन प्रति घटत आयु,
विषयन में नयौ नेह, बाढ़त नित भामिनी ॥
खान पान सोई ठाठ, प्रेम की मिली न बाट,
सोच-सोच दिन कटै न, रोइ-रोइ जामिनी ।
भोरी धृग बार-बार, व्यर्थ जन्म जिय विचार,
अब तौ इक आस तोरी, नन्दनन्दन कामिनी ॥

(२२०)

मन में नहिं लाज नेंक, चित्त में न प्रेम टेक,
सूझत नहिं यत्न कोऊ, बीतत दिन सकल जात ।
विषयन रँग नैन रँगे, झूमत नहिं प्रेम पगे,
बोलत नहिं रुकत कण्ठ, इत उत बहु करत बात ॥

बाढ़त ना प्रेम हाय, विषयन चित फँसत जाय,
बीतत सब जात आयु, साधन ना कछु लखात ।
भोरी अति बड़ अभाग, चरनन नहिं प्रेम लाग,
अब तौ सब भाँति लाज, स्वामिनि इक तेरे हाथ ।।

(२२१)

देखन दै नैक छटा नीकी ।
चहुँ दिशि ललित भूमि हरियाली, ऊपर झुकी घटा नीकी ।।
चपला कोटि दिव्य द्युति मूरति, ठाड़ी मंजु अटा नीकी ।
पल में हठ अपनाइय भोरी, निगम की रीति हटा नीकी ।।

(२२२)

दरसन दै नैक बिहँसि प्यारी ।
सहज कृपालु लाड़िली राधा, सरवोपरि सुखकारी ।।
जीति लियौ घनश्याम लाड़िलौ, विहँसि अपुनपौ हारी ।
वृन्दावन रजधानी राजत, तीन लोक सौं न्यारी ।।
शिव सनकादिक सन्त मुनि महिमा, रहे विचार विचारी ।
पचि हारे श्रुति बरनि-बरनि कैं, क्यौं हू न पायौ पारी ।।
उमा रमा ब्रह्मादि भवानी, चाहत चरण छटारी ।
त्रिभुवन विदित कृपालु किशोरी, सबकौं राखन हारी ।।
युग-युग पतित अनेक उधारे, जस गावत श्रुति चारी ।
भोरी ओर कृपा करि हेरौ, श्री हरिवंश दुलारी ।।

(२२३)

बिनु देखे किमि होवै प्यारी नेहु,
तासों नैक नैन भरि दरसन देहु ।
तिरछी चारु नजरिया मृदु मुसिकान,
उर में गड़ै नैन छिन लखै न आन ।
कुटिल भौंह मुख कंज सुभग कच चारु,
छिन इक भरि दृग प्यारी लेहु निहार ।
पुनि न बिसरिहौं कबहूं सुन्दर रूप,
हिय में नित्य बसैहौं छटा अनूप ।

जबही हीय आइ है मृदु मुसिकानि,
तब कि लोक श्रुति रीति रहै कुलकानि।
जबहि माधुरी पिये बढ़ै उन्माद,
भाजै तुरत अभाग धर्म-मरजाद।
जब पद पंकज रस मन रहै लुभाइ,
विषय महाविष चाखन फिर क्यों जाइ।
कठिन प्रीति की रीति सुगम अति ताहि,
छिन इक दर्शन देहु प्रगट ह्वै जाहि।
तासौं टेर-टेर नित बिनवत भोरि,
देहु दरस अलबेली नवल किशोरि॥

(२२४)

जो कहुँ चरण कमल रति होवै।
तौ क्यों भटकत विषय गहन बन, जनम अकारथ खोवै॥
तौ क्यों मित्र सभा मिलि बैठे, दीन भयौ युवती मुख जोवै।
करै कुकर्म कहौ कस दिन भर, रात निसंक कहौ किमि सोवै॥
हौं पछितात यही नित सोचत, कैसे चरण कंज मन लोभै।
कैसे हिय में लगै चटपटी, दरस प्यास निसि वासर रोवै॥
कैसे पुलकि-पुलकि गुण गावै, भाल कुअंक कौन विधि धोवै।
करहु कृपा अलबेली भोरी, तुम बिन कौन अशुभ सब खोवै॥

(२२५)

दीजिय मोहि नेह की बान।
व्याकुल प्रेम अधीर निरन्तर, पुलकन रुदन हेर पछितान।
छिन-छिन मगन भाव मिलिवे के, प्रफुलित गात हर्ष मुसिकान॥
छिन-छिन जरत हियौ विरहानल, सहमि सूखि गिरिबौ मुरझान।
कबहूँ गद्‌गद् कंठ हर्ष सौं, रीझि-रीझि जस निर्मल गान॥
कबहूँ विरह पीर अति गाढी, गुण गण गिन-गिन दिवस सिरान।
अड़त चकोर चन्द्र पै जैसे, रहत भौंर ज्यौं कंज लुभान॥

त्यौं निशि बासर मत्त एक रस, रूप माधुरी करिबौ पान ।
झूमत नैन अधिक श्रम चलिबौ, बैन सिथिल कछु सुनत न कान ।।
मत्त गयन्द मनहुँ रस छाके, चले छाँड़ि कुल-कान अलान ।
अति अलिमस्त सबन सौं न्यारे, रहत अनन्य पतिव्रत ठान ।।
एक नाम हिय रहत समायौ, एक रूप पर वारत प्रान ।
मुदित सँभारत कच मुख छूटे, श्रवनन सुनत सरस बतरान ।।
श्री हरिवंश चरण बल हिय में, श्यामा चरण-कंज अभिमान ।
याचक भोरी आस पुजावौ, दिल दरदीली कृपा निधान ।।

(२२६)

हो प्यारी, यह दीजिये दान ।
जैसे दृगन हेरियत नित ही, जैसे झार बैठियत थान ।
जैसे श्रवनन सुनियत शब्दन, तृषित कीजियत ज्यौं पय पान ।।
हाथ धोइ ज्यों करत रसोई, जैसे पीवत पानी छान ।
हो प्यारी कबहूं मोहि देहौ, ऐसेहि सहज रसीलो बान ।।
निशि दिन रूप सुधारस पीवौ, प्रेम छकी करिबौ गुन गान ।
नई-नई छवि नित्य हेरिबौ, नित्य बारिबौ कोटिन प्रान ।।
कीजै विनय कान अलबेली, गरव गहेली कृपा निधान ।
रसिक रसीली भोरी किशोरी, मंडन विमल वंश वृषभान ।।

(२२७)

विनय करत मेरी बनि आई ।
येहू बड़े भाग्य जो प्यारी, याचक तोरि कहाई ।
याचक सबहि जगत में जेते, सुर-नर-मुनि समुदाई ।।
मोसौं बड़ौ न याचक कोऊ, का मुख कहौं बड़ाई ।
जाकौं जाचत श्याम लाडिलौ, तीन लोक कौ साई ।।
भूरि भाग्य सौं भरी लाडिलौ, हौं तोहि जाचन आई ।
यह तौ बात सबै विधि मेरी, अति आछी बनि आई ।।

और द्वार मन जाइ न छिन अब, यह वर माँगहुँ माई ।
दीजै सहज कृपा करि भोरी, सुनि श्यामा मुसिकाई ।।

(२२८)

जब पाँव तुम्हारे देखौं, तब जन्म सुफल चरि लेखौं ।
जब पीर उठै हिय गाढ़ी, तब जानहुँ कछु रति बाढ़ी ।
जब निशि दिन हृदै बसावौं, तब अपनौ भाग मनावौं ।
जब देखि कै नैन सिराऊँ, तब आपनि आस पुजाऊँ ।
जब टेरि कै पास बिठावौ, तब जिय की त्रास मिटावौ ।
जब बाँह गहौ हँसि नीकी, तब करहु भाँवती जीकी ।
जब आइ भुजा भरि भेटौ, तब सूल हिये कौ मेटौ ।
जब हेर कै अंक लगावौ, तब तन की ताप बुझावौ ।
जब बाँह पकरि अपनैहौं, तब सब सौं नेह छुड़ैहौं ।
जब लगि नहिं आस पुजैहौं, तब लग नित टेर सुनैहौ ।
तब लग मैं परम अभागी, जब लग नहिं पाँव सौं लागी ।
इति गदित भोरि अकुलाई, तुम छमियो मोरि ढिठाई ।

(२२९)

कुमति कुटिल पन सब हरियो ।
रंग रँगीलो सौं रंग बढ़ै नित, रंग रँगीले कृपा करियो ।।
रसिक रसीले ससि सरसीले, दिल दरदीले अवसि ढरियो ।
भोरी प्यारी पद रस चाहत, हठ कर भुजा पकरियो ।।

(२३०)

अजहूं कस न उठत अकुलाई ।
डूबत भव निधि माँहि छिनक में, कठिन घरी चलि आई ।
थकि-थकि शिथिल भई सब देही, बनि नहिं परत उपाई ।।
दरसन कौं तरसावत अबहूं, फिर रहिहौ पछिताई ।
कोमल चित कृपालु बलि भोरी, दया सिन्धु सुखदाई ।।

(२३१)

जो कबहूँ मुख देखन पावौं ।
इकटक रीझ रहौं वा छबि पर, छिन न निमेष लगावौं ॥
ताही रंग रँगो दोऊ अँखियाँ, पुतरिन माँहि बसावौं ।
छिन-छिन पियत सरूप माधुरी, इक रस द्यौस गँवावौं ॥
नाचत हँसत मत्त रस छाकी, डोलत जगत हँसावौं ।
भोरी सपनेहु आन न देखौं, देह - गेह बिसरावौं ॥

(२३२)

कबहुँ नैन भरि रूप दिखावौ ।
नैना दरस रूप रस प्यासे, अब न बहुत तरसावौ ॥
मृदु मुसिकान मनोहर आनन, तनक-तनक दरसावौ ।
भोरी व्याकुल बिलपै कब लगि, सपने नेंक हँसावौ ॥

(२३३)

हिय में आइ बसौ वर जोरी ।
दीन्हें जुगल विमल गलबाँहीं, सोभा सुखद न थोरी ॥
मंद-मंद मुसिकात लाड़िले, नागर नवल किशोरी ।
भोरी श्री हरिवंश चरण बल, आस पुजावौ मोरी ॥

(२३४)

रसना कौ अब नाम मिठावौ ।
कै यह सरस करौ रस दाइनि, कै जर सौं उपटावौ ।
बहु बकवाद स्वाद सौं रोकौं, आपन नाम रटावौ ॥
पर निन्दा पर अस्तुति बरजौ, निज गुन-गन प्रगटावौ ।
भोरी दासी मूक भली नतु, जर सौं याहि कटावौ ॥

(२३५)

नूपुर की झनकार सुनावौ ।
हौं व्याकुल दृग मूँद पुकारत, रुनक झुनक चलि आवौ ॥
तन मन अति अकुलात दयानिधि, धीरज आइ बँधावौ ।
भौरी बलि अलबेलो कबहूँ, सपने दरस दिखावौ ॥

(२३७)

मन मेरौ बार-बार ललचावै ।
लोचन रहत रूप के प्यासे, धीरज नैंक न आवै ।।
उर में बढ़त विरह दिन दूनौ, असन बसन नहिं भावै ।
भोरी परम कृपालु स्वामिनी, सपने दरसन पावै ।।

(२३८)

दरसन दीजै नैंक दया कर ।
हास-चाँदनी हँसि छिटकाबौ, मेटहु हिय कौ तिमिर कृपा कर ।।
भव की ताप मिटाइय प्यारी, चितबहु नयन कोर करुणाकर ।
भोरी दृग रस विकल चकोरी, अलबेली मुख विमल सुधाकर ।।

(२३९)

मधुर-मधुर हँसि बचन सुनावौ ।
श्रवन माधुरी रस के प्यासे, तिन्है सुधारस प्यावौ ।।
दसन चाँदनी जग विस्तारौ, दृग कौ तिमिर मिटावौ ।
अधर अरुणई विमल छटा सौं, हृदय प्रेम सरसावौ ।।
रूप सुधारस बरसि-बरसि कें, सब भव ताप मिटावौ ।
नैंन कृपा रस बरसत भोरी, सबहिं भाँति अपनावौ ।।

(२४०)

रंग रंगीली के रंग रँगौंगी ।
अब लगि सोवत रही लुभानी, अब तौं अवसि जगौंगी ।
अब न काहु की ओर चितैहौं, दृढ़ ह्वै पगन लगौंगी ।।
या विधि सोचि-सोचि कै प्यारी, प्रीति के दाग दगौंगी ।
भोरी बलि हँसि कहौ कृपानिधि, कब हौं प्रेम पगौंगी ।।

(२४१)

नैंननि बसौ नवल नवेली ।
वृन्दावन रजधानी राजत, जुगल करत नित केली ।।
दोऊ मिलि कुञ्ज-निकुञ्जनि डोलत, भुजा अंस पर मेली ।
जीति लियौ घनश्याम लाड़िली, तिहिं बल गरब गहेली ।।

तन मन वारि वारि पद पंकज, देखि-देखि कै जीजै ।
भोरी हिय अकुलात कृपानिधि, हँसि-हँसि दरसन दीजै ।।

(२४५)

तुम अनेक चंचल अपनाये ।
सबमें चंचल रसिक साँवरे, जेहि हिय रहत लगाये ।।
चंचल नैन भौंह अति चंचल, चंचल बदन सुहावै ।
चंचल चरण कंज कर चंचल, चंचल हिय मन भावै ।।
चंचल द्युति सब अंगन छाई, कवि जन कहत विचारी ।
चपला कोटि चमक चपलाई, चंचल मूरति प्यारी ।।
चंचल मो मन किन अपनावौ, क्यौं धारी निठुराई ।
भोरी दृग भरि देखन आसा, टेर - टेर अकुलाई ।।

(२४६)

बाढ़ै प्रीति हृदय केहि भाँती ।
यमुना तीर विकल तनु डोलौं, चुवत नैन जल स्वाती ।।
जुगल नाम की रट नित लागै, टेर - टेर अकुलाती ।
ढूँढत जुगल लाड़िले कुञ्जन, फिरहुँ रूप रस माती ।।
पुलकित गात देह सुधि बिसरी, गुण गावत दिन राती ।
यह विधि भाग जगै कब भोरी, जरत सोच सों छाती ।।

(२४७)

झूठौ भयौ दृगन कौ नेम ।
तब तौ नीर बहाबन लागे, अति ही काचे प्रेम ।।
दृग भरि कछु न देखन हू की, हठ तब कीन्ही होई ।
अब पुनि विषयन ढूँढन लागे, निलज लाज सब खोई ।।
मेरे ह्वै मोसों बैर बिसायौ, कुसमय धोखौ दीन्हौ ।
का मुख कहौं अनीति कृपानिधि, जनम अकारथ कीन्हौ ।।
जड़ कठोर ताहू पै चंचल, तिनहूँ दोष न भोरी ।
तुम तौ कृपा कोर टुक हेरौ, कोमल चित्त किशोरी ।।

तन मन वारि वारि पद पंकज, देखि-देखि कै जीजै ।
भोरी हिय अकुलात कृपानिधि, हँसि-हँसि दरसन दीजै ।।

(२४५)

तुम अनेक चंचल अपनाये ।
सबमें चंचल रसिक साँवरे, जेहि हिय रहत लगाये ।।
चंचल नैन भौंह अति चंचल, चंचल बदन सुहावै ।
चंचल चरण कंज कर चंचल, चंचल हिय मन भावै ।।
चंचल द्युति सब अंगन छाई, कवि जन कहत विचारी ।
चपला कोटि चमक चपलाई, चंचल मूरति प्यारी ।।
चंचल मो मन किन अपनावौ, क्यौं धारी निठुराई ।
भोरी दृग भरि देखन आसा, टेर - टेर अकुलाई ।।

(२४६)

बाढ़ै प्रीति हृदय केहि भाँती ।
यमुना तीर विकल तनु डोलौं, चुवत नैन जल स्वाती ।।
जुगल नाम की रट नित लागै, टेर - टेर अकुलाती ।
ढूँढत जुगल लाड़िले कुञ्जन, फिरहुँ रूप रस माती ।।
पुलकित गात देह सुधि बिसरी, गुण गावत दिन राती ।
यह विधि भाग जगै कब भोरी, जरत सोच सों छाती ।।

(२४७)

झूठौ भयौ दृगन कौ नेम ।
तब तौ नीर बहावन लागे, अति ही काचे प्रेम ।।
दृग भरि कछु न देखन हू की, हठ तब कीन्ही होई ।
अब पुनि विषयन ढूँढन लागे, निलज लाज सब खोई ।!
मेरे ह्वै मोसों बैर बिसायौ, कुसमय धोखौ दीन्हौ ।
का मुख कहों अनीति कृपानिधि,जनम अकारथ कीन्हौ ।।
जड़ कठोर ताहू पै चंचल, तिनहूँ दोष न भोरी ।
तुम तौ कृपा कोर टुक हेरौ, कोमल चित्त किशोरी ।।

तुम रूठत सब रूठत प्यारी ।
तेरी कृपा कृपा सब ही की, तो रिस विपद सदारी ।।
जब सौं तुम उर धरी निठुरता,सब ही प्रीति विसारी ।
मन-इन्द्रिय-काया करुणा निधि, अधिक शत्रुता धारी ।।
रोके रुकत न बरजे मानत, चाहत बात बिगारी ।
जिनकौं कहत हुतौ नित अपनौ,जिनकौ भरोसौ भारी ।।
सोतौ ऐसे भये कृपानिधि, निलज लाज लौं टारी ।
झूँठ साँच तुम सब ही जानत, कीजै न्याव बिचारी ।।
हौतौ आरत हरण कृपानिधि, जस गावत श्रुति चारी ।
भोरी बेगि कृपा करि हेरौ, अधम निबाहन हारी ।।

(२४९)

एक सोच नित ही उर मेरे ।
सोच न लोचन पोचन ही कौ,निशिदिन विषयन हेरे ।।
सोच नहीं पद कञ्ज बिसारे, प्रेम भाव बिनु पाये ।
सोच नहीं मन सदा विषय के, रहत लोभ ललचाये ।।
गरजत काल सामने ठाड़ौ, सोच ताहु कौ नाहीं ।
घोर यातना सुनत नरक की, सोच नहीं मन माहीं ।।
इतनौ सोच कृपाल किशोरी, कोमल चित सुकुँवारी ।
नित की बान छाड़ि के भोरी, अब तौ निठुरता धारी ।।

(२५०)

बैठि-बैठि नित सोचिबौ कीजै ।
रचि-रचि विनय नित्य ही कहिये, रोइ-रोइ कै जीजै ।
इत अभाग उत बान कृपा की, सोचत नित तनु छीजै ।।
लीला ललित जबहि सुधि आवै, हियरा भरि-भरि लीजै ।
भोरी सहज निठुरता पर हू, प्राण निछावर दीजै ।।

(२५१)

भलौ-भलौ सब ही कौं प्यारौ ।
खोटी कुटिल कुबुद्धि अभागी, मोहि सकल मिलि टारौ ।।

औरन की का कहौं कृपानिधि, को जग हितू हमारौ ।
अपने कहियत इन्द्रिय-काया, घनौ बैर उर धारयौ ।।
अब तौ ठौर कहूँ नहिं सूझत, मैं सब भाँति विचारयौ ।
तुम ही सहज कृपा करि भोरी, चरण शरण प्रतिपारौ ।।

(२५२)

इतनी बात कृपा करि दीजै ।
सब ही सुख अति खारौ लागै, विरह ताप तन छीजै ।।
सोच-सोच दृग ढारत आँसू, नैंन नींद नहिं आवै ।
हा राधे मेरौ और न कोऊ, टेर - टेर अकुलावै ।।
नाम रटै चौंकै चहुँ हेरे, पुलकै सकल सरीरा ।
मिलवे की अति लगै चटपटी, पल छिन परै न धीरा ।।
हिय में पीर उठै अति गाढ़ी, छिन-छिन फाटै छाती ।
ऐसी कृपा करौ अलबेली, करुणा कोमल गाती ।।

(२५३)

इतनो बात माँगिवे आई ।
तेरे द्वार दीन नित टेरौं, छिन हू आस करौं न पराई ।
नित प्रति प्रीति नाम सौं तेरे, दरस आस नित रहौं लुभाई ।।
रसिक संग हिय ध्यान चरण कौ, गाढ़ी पीर हिये अधिकाई ।
कुगति-सुगति कौ सोच न भोरी, करियो जो कछु तुमहिं सुहाई ।।

(२५४)

सोबत बीत गईं बहु रतियाँ ।
कानन सुने न दोऊ रँग भीने, करत भाँवती बतियाँ ।।
सैनन माँहि संकेत बतावत, पुरबत रति रस घतियाँ ।
भोरी सो छवि सुमिरत अजहूँ, दुख सों फटत न छतियाँ ।।

(२५५)

जनम सब यौंही बीत गयौ ।
प्रीति रीति हिय माँहि न जागी, नहिं सतसंग भयौ ।।

कोटि कुकर्म किये निसि बासर, छिनहूँ न नाम लह्यौ ।
भजन-भावना हिये न परसी, विषयन सहज गह्यौ ॥
हा राधे नहिं कोऊ मेरौ, कबहुँ न टेरि कह्यौ ।
सब ही भाँति कुटिलपन लीन्हौ, कोटि प्रपञ्च ठयौ ॥
अब अवलम्ब न कोऊ सूझत, तन मन बिकल भयौ ।
एक कृपालु बान की भोरी, हिये भरोस रह्यौ ॥

(२५६)

मोसौं मोसी करौ तौ कहा बसि आई ।
सहज कृपालु किशोरी राधे, का मुख कहौं बनाई ॥
कोटि जन्म जो बसौं नरक में, नित नव त्रास सदाई ।
तौहू निघटै नहीं किशोरी, मेरी कुमति कमाई ॥
सो सब उचित सुनौ करुणानिधि, आयु जो व्यर्थ गँवाई ।
पतित उधारण चरण न ध्याये, विषयन रही भुलाई ॥
तोसौं प्रीति करी नहिं प्यारी, अब उघरी सठताई ।
तैं छिन हूँ मेरी सुधि न बिसारी, मैं छिन-छिन चितलाई॥
याहू पै जो सहज कृपानिधि, हठ राखौ सकुचाई ।
भोरी नीच कहा मुख भाखै, तुम ही सौं बनि आई ॥

(२५७)

मोसौं मोसी करौ तौ कहा बस मेरौ ।
सुनौ कृपालु किशोरी राधे, अब तौ आसरौ तेरौ ।
कोटिक जन्म नरक में भोगूँ, सहि-सहि त्रास घनेरौ ॥
ऐसे पातक पुञ्ज कृपानिधि, तदपि न होय निबेरौ ।
अब तौ ठौक-ठौर नहिं सूझत, नैननि लगत अँधेरौ ॥
कहियत यही किशोरी प्यारी, कृपा कोर टुक हेरौ ।
भोरी हिय सौं छिनहु टरौ जिन, निशि दिन साँझ-सबेरौ ॥

यही सोच हिय अजहुँ न टूट्यौ ।
सहज कृपालु किशोरी पद तजि, विषयन कौ रस घूट्यौ ।।
ता पर और निलजता ऐसी, प्रेम जनावत झूठ्यौ ।
भोरी कहा कहै करुणानिधि, भाग्य सबै विधि फूट्यौ ।।

(२५९)

यही सोच हिय फटत न छाती ।
सहज कृपालु कृपा लखि तेरी, दरकत कुलिस सिला पिघलाती ।
यानै ऐसी गही निलजता, कहा कहौं कछु कही न जाती ।।
पद सौं प्रीति होत न प्यारी, झूठौ प्रगट प्रेम बहु भाँती ।
अब तौ कृपा करौ अलबेली, भोरी प्रीति बिना पछितातो ।।

(२६०)

यह इक सोच रहत मन माहीं ।
सहज कृपालु किशोरी चरणन यह मन लागत नाहीं ।।
गढ़ि-गढ़ि मुख बहु बात बनावै हिय रीती की रीती ।
ऐसै कहौ रीझिहौ कैसै अति ही काची प्रीती ।।
हौं तौ प्रीति करत परघट की तुम घट-घट की जानौ ।
बड़े भाग्य जो काची प्रीती हिय साँची कर मानौ ।।
नातर सहज कृपालु किशोरी प्रीति रीति हिय दीजै ।
भोरी बलि-बलि जाइ चरण पै सोच पोच हरि लीजै ।।

(२६१)

मन तैं काके चरण बिसारे ।
सहज कृपालु किशोरी राधे, हरिजू जाके झाँकत द्वारे ।।
शिव ब्रह्मादिक पद रज चाहत गूढ़ भाव उर धारे ।
महिमा अमित कहा कहि बरनौ, वेद सबै पचि हारे ।।
यह प्रभाव तऊ बान कृपा की, पतित अनेक उबारे ।
आवत धाइ बेर नहि लावत, आरत टेर पुकारे ।।
सो कृपालु सौं विमुख भयौ तैं, छिन न नाम उच्चारे ।
धृग-धृग निलज प्राण ये भोरी, अजहूँ टरत न टारे ।।

बिनती सुनौ अधम प्रतिपाला ।
हिय में दीजै मिलन चटपटी उर में बिरह बिसाला ।
छिन-छिन चहुँदिशि फिरि-फिरि देखौं आबत जान कृपाला ।।
सजल नैन गदगद स्वर पुलकत टेरौं नाम रसाला ।
दीप शिखा लौं जरौं दिवस निस कठिन बिरह की ज्वाला ।।
ऐसी प्रीति रीति हिय दीजै करुणा सिंधु दयाला ।
भोरी पामर दीन पुकारत सुनौ नवल व्रज वाला ।।

(२६३)

या मन की शठता हठ रोकौ ।
काची प्रीति कहा फल पैहै, हरहु सकल भ्रम धोखौ ।
साँची प्रीति हिये में दीजै, करुणा कोर विलोकौ ।।
तुम ही नेह निबाही प्यारी, पार लगावौ मोकौं ।
हौं तौ प्रीति रीति बिनु भोरी आरत टेरत तोकौं ।।

(२६४)

कहँ मैं कुटिल कुमति अघरासी ।
कहँ विधि हरि-हर अगम चरण रज अलबेली राधा सी ।।
सहज कृपालु कृपा की आसा, ठानी बिनती खासी ।
मुख आबत सो कहत कृपा निधि, प्रीति रीति की प्यासी ।।
उर में बिरह-पीर हँसि दीजै, करि दृढ़ चरण उपासी ।
भोरी सहज किशोरी राधे, दीजै कुञ्ज खवासी ।।

(२६५)

कहँ मैं पापी मूढ़ दुराचारी,
कहँ विधि हरि-हर अगम चरण रज प्यारी ।
कहँ श्रुति अगम श्याम नट नागर,
लीला ललित कृपालु रस सागर ।
कहँ हरिवंश जुगल वपु लीन्हे,
चरण शरण प्रतिपाल माधुरी भीने ।

मैं तौ कुटिल कुमति अघरासी,
सन्तन कौ मग छाँड़ि बिषय अभिलाषी ।
हौं तौ सबै भाँति बिसराई,
तद्यपि सहज कृपाल न मोंहि भुलाई ।
कुलिस कठिन हिय फटत न मेरौ,
तदपि अधम प्रतिपाल आसरौ तेरौ ।
हौं तौ प्रीति करी अति काची,
तुम अब देबहु पीर हिये अति साँची ।
मुख बहु बिनय करौं केहि भाँती,
भोरी उर यह सोच फटी नहिं छाती ।

(२६६)

कठिन अभाग्य कहा मुख कहिये ।
आपनि खोटी दसा दयानिधि, देखि-देखि चुप रहिये ।
सागर बास नीर कौ टोटौ, अग्नि ज्वाल सौं दहिये ।।
कल्पवृक्ष की छाँह कुटी रचि, भूख प्यास नित सहिये ।
कैसे दूर कहौं करुणा निधि, रोम-रोम में कहिये ।।
इतने निकट कृपालु किशोरी, तऊ न दरसन लहिये ।
भोरी भाग्य कुटिलता ऐसी, सब कछु सहिबौ चहिये ।।

(२६७)

कौन भाग्य भरि नैन निहारौ ।
बिनु नख चन्द्र चन्द्रिका देखे, त्रिभुवन सब अँधियारौ ।।
सहज छबीलो छबि के ऊपर, त्रिभुवन सोभा वारौ ।
भोरी छिन इक दरसन कारण, कोटि प्राण तजि डारौ ।।

(२६८)

भाग अभाग कर्म गति न्यारी ।
भागवान कौं सब ही मङ्गल, भाग्य हीन कौं दुखद सदारी ।।
यह नित चाल बिलोकी जग की, अचरज एक तहाँ ये न्यारी ।

सकल अभाग्य हरण करुणानिधि, भाग्यहीन लखि बान बिसारी ।।
कछु बस नहीं न कछु कहि आवै, खोटी पामर दीन दुखारी ।
असरण-सरण न केहि अपनायौ, सहज कृपालु कृपा न बिचारी ।।
अधम उधारण को न उधारयौ,जुग-जुग बिदित कहत श्रुति चारी ।
भोरी बिरियाँ रीति बिसरि गई, आरत टेरत - टेरत हारी ।।

(२६९)

अधम उधारण सुनियत प्यारी ।
पतितन पै नित बान कृपा की, जस गावत श्रुति चारी ।।
ह्याँते चूक परी नहिं मोपै, सब में प्रथम सदारी ।
कोटि पतित नहिं सरवर मेरे, कहौं पुकार पुकारी ।।
तौ हू परम कृपालु किशोरी, क्यौं न द्रवौ सुकुँवारी ।
इतनी तौ हँसि कहौ कृपा निधि, अब हिय कहा बिचारी ।।

(२७०)

ऐसी तोहि कि बूझिये वृषभान किशोरी ।
तू घन हौं चातकी, तू चन्दा हौं चकोरी ।।
तू जल हौं मीन प्यारी, तू दानी हौं भिखारी ।
तू पतित पावन हौं पतित, इक आस नित तिहारी ।।
तू आरत हर हौं दीन दुखी, आरत नित टेरौं ।
चिन्तामणि तू रंक सु मैं, चहत शरण तेरौं ।।
तू स्वामिनि सबल सदा, दासि निवल भोरी ।
हौं तौ छिन चहत दरस, मन्द हँसन थोरी ।।

(२७१)

ऐसी तोहि कि बूझिये वृषभान दुलारी ।
वेद विदित प्रणतारति भंजन, सबकौं सुखद सदारी ।।
हौं तौ चरणन लगी तिहारे, पुनि - पुनि टेर पुकारी ।

मेरी लाज रावरे हाथन, मुख सों कहौं कहारी ॥
हौं तौ किये कुकर्म, कोटि विधि लाद्यौ बोझौ भारी ।
विषय विपिन कुञ्जर, ज्यों मातौ, तकत धाम-धन-नारी ॥
ठाड़े गगन बाट यम देखत, हँसत देत कर तारी ।
सब विधि निज बस जानि,भयंकर नरक रहे मुँह फारी ॥
तब कछु सूझ परी न कृपानिधि, सब बिधि आयु बिगारी।
अब पुनि ठीक ठौर नहिं सूझत,लगत नयन अँधियारी ॥
गाढ़े संकट कोऊ न सहायक, सोच-सोच हिय हारी ।
भोरी करत बिलम्ब कहा अब, पोच निवाहन हारी ॥

(२७२)

मैं तौ प्रीति करी अति काची ।
झूठौ भजन भावना झूठी, कोटि कुटिलता साँची ॥
साँची झूठ झूठ की साँची, तो बिन कौन करै री ।
इतनी समरथ और कौन की, जासौं काज सरै री ॥
तुम सर्वोपरि सहज कृपानिधि, वेद विमल यश गावै ।
जो तुम सहज कृपा उर धारौ, तौ सब बिधि बनि आवै ॥
सहज कृपालु किशोरी राधे, जो यह कीरति साँची ।
तौ यह विनय सत्य हठ कीजै, भोरी जो मन राँची ॥

(२७३)

झूठी प्रीति हिये में मेरे ।
साँची कोटि कुकर्म कुटिलता, पातक पुञ्ज घनेरे ॥
ऐसौ कौन कृपालु किशोरी, अवगुण चित्त न आनै ।
झूठो किंचित प्रीति कृपानिधि, ताहि सत्य करि मानै ॥
कोटि कुटिलता चित्त धरै नहिं, आरति सुनि प्रतिपारै ।
नातौ प्रीति रीति कौ मानै, सबही दोष बिसारै ॥

ऐसौ और दिखात न तिहुँपुर, सोच-सोच हिय कारी ।
अब तौ द्वार रावरे भोरी, आरत टेर पुकारी ।।

(२७४)

प्रीति रीति उलटी जग गाई ।
काहू सौं सो बन न परत है, जस तुम सौं बनि आई ।
प्रीति-रीति परबीन राधिके, सब में श्रेष्ठ सदाई ।।
उलटौ जो मानों करुणाकर, तौ सब भाँति भलाई ।
झूठौ प्रेम सत्य करि जानौ, झूठी करि कुटिलाई ।।
बिन आगस-अपराध रूठिबौ, श्री हरिवंश बताई ।
बिनु गुन क्यों न रीझिये तैसे, सब ही दोस बिहाई ।।
ज्यों-त्यों बाँह गहौ अलबेली, कृपा करौ मुसिकाई ।
भोरी की तुम भोरी स्वामिनि, चतुरन चतुर सदाई ।।

(२७५)

सुनि राधे तोहि ऐसी न चहिये ।
तुम घन हौं चातक रस प्यासो, कब लौं दीन रटैये ।
तुम आधार एक ही मोकौं, कहि-कहि कहा सुनैये ।।
क्यों नहिं सहज कृपालु कृपा करि, माधुरि नैन पिवैये ।
भोरी यह न उचित अलबेली, काहे कौं देर लगैये ।।

(२७६)

तुम सौं बात हिये की कहिये ।
भजन-भक्ति बन परत न मोसौं, काहे कौं बात बनैये ।
विषयन सौं मन रुकत न रोक्यौ, रोकि-रोकि रह जैये ।।
दीजै प्रीति हिये करुणानिधि, बिरह अधिक सरसैये ।
व्याकुल देह रटत श्रीराधा, नैनन नीर ढरैये ।।
तन मन की न सँभार रहै कछु, इतनी आस पुजैये ।
और कहा मुख माँगौं भोरी, छिन इक छटा दिखैये ।।

तुम सौं कहत हिये की बात ।
ऐसौ मन यह करहु कृपानिधि, जस कछु मोहि सुहात ।
विष सम सब सुख लगैं किशोरी, बिना चरण जलजात ।।
नाते कुटुम मित्र सुत नारी, जननि जनक अरु भ्रात ।
बिनु पद कञ्ज दुखद सब लागैं ज्यों चकई कौं रात ।।
तुम बिनु और न नेह काहु सौं, नहिं दृग देख्यौ जात ।
भरि-भरि नैननि नीर बहावौं, सोचत दिवस बितात ।।
इतनी करहु कृपा अलबेली, तन मन अति अकुलात ।
भोरी भाग अभाग लाड़िली, एक तिहारे हाथ ।।

(२७८)

या जीवन की चरचा न चलैये ।
प्राणनाथ सौं पोच प्राण की, बात कौन विधि कहिये ।।
असन-बसन-तन सोचि पोच सब, पानी माँहि बहैये ।
मिलन आस पर तन मन वारिय, बड़े भाग्य जो पैये ।।
नातर बैठि-बैठि भरि साँसें, सोचत द्यौस बितैये ।
सजल नयन तनु पुलक मगन मन, नाम टेर रट लैये ।।
गाढी पीर बढै उर अन्तर, मुख सौं कछू न कहिये ।
टूक-टूक हिय कीजिय भोरी, औषध वैद्य न चहिये ।।

(२७९)

अस कछु आस होत हिय माहीं,
वे दिन ज्यौं न रहे, ये रहि हैं नाहीं ।
परिहै कहुँ कान भनक जाई,
आरत हरण कृपालु आइ हैं धाई ।
दीन गरीब दुखी सब भाँती,
आपनि जानि प्रिया ऐहैं सकुचाती ।
तजहि न चन्द सुधा जैसे,
सहज कृपा की बान बिसरिहै कैसे ।

मिटि है कठिन अभाग पलक में,
सब बनाव बनि जैहै एक झलक में ।
लहि हौं सहज कृपा की कोरन,
रहि हौं अटकि जैसे चन्द चकोरन ।
कढि हैं उमङ्ग हिये केरी,
बसि हौं हिलमिल कुञ्ज छाँह में तेरी ।
इक रस कटि हैं दिन राती,
किये माधुरी पान फिरौंगी माती ।
भोरी तौ सब भाँति अभागी,
सहज कृपा की आस रावरी जागी ।

(२८०)

इतनी कहौ कृपालु किशोरी ।
कबहूँ तौ तुम मोहि देखिहौ, सहज कृपा की कोरी ।
कबहूँ तौ व्याकुल भटकैहौ, ढूँढत निधुवन खोरी ।।
कबहूँ तौ भुज गहि मुसिकैहौ, सहज पौंछ दृग भोरी ।
कबहूँ तौ छिन दरस दिखैहौ, मन्द हँसन मुख थोरी ।।
इतनौ हँसि अवलंब दीजिये, ज्यौं थिर होय हियौ री ।
भोरी नेक मिलन आसा पर, काटौं जन्म करोरी ।।

(२८१)

जो पै कृपा रावरी होती ।
तौ क्यों मन रमतौ विषयन में, आयु व्यर्थ क्यों खोती ।।
तौ किन मिटत कोटि कुटिलाई, क्यों कुकर्म हठ करती ।
पङ्कज चरण हरण भव बाधा, क्यों नहिं बैठि सुमरती ।।
क्यों न अनन्य व्रतहि लै प्यारी, लीला में मन देती ।
सोच-सोच नित दिवस गँवावत, हिय किन भरि-भरि लेती ।।
मिलन चटपटी बढ़त न हिय क्यों, मिटत न क्यों जग प्रीती ।
काहे कौं मुख सौं गढि बातैं, अजहुँ रहत हिय रीती ।।

जान परत नहिं प्रगट कृपा कछु, सुनहु कृपानिधि प्यारी ।
तासौं कहियत सहज किशोरी, काहे निठुरता धारी ।।
भोरी यह चाहत करुणा निधि, दास्य रावरो दीजै ।
मेटिय शूल मलिन मन कल्पित, प्रगट कृपा किन कीजै ।।

(२८२)

दुविधा में कछु लख न परै ।
सोच-सोच चुप रहिये प्यारी, मुख सौं कहा उचरै ।।
जब हौं अपनी ओर निहारत, आसा कछु न परै ।
कहँ मैं कहँ अलबेली राधा, काहे कौं चित्त धरै ।।
जब अपनी करतूत बिचारत, हियरा अधिक डरै ।
हौं तौ नीच निंद्य शठ लम्पट, सो क्यों भुज पकरै ।।
सहज कृपाल बान जब सोचत, हृदय उमंग भरै ।
पतित उधारन बान प्रिया की, सो कैसे बिसरै ।।
नित-नित यही रीति चलि आई, अवगुण चित न धरै ।
आरत टेर सुनत करुणानिधि, छिन न बिलम्ब करै ।।
यह विधि सोचत रहत निरन्तर, निश्चय कछु न परै ।
बेगि कृपा किन करत किशोरी, भोरी दीन ररै ।।

(२८३)

उमड़ि-उमड़ि नयना जल बरसै ।
भीजत जाइ रङ्ग में देही, हृदय प्रेम सरसै ।।
तन मन विकल नाम रट लागै, निशि-दिन परै न जानी ।
छिन-छिन गावत नाचत रोवत, बन-बन फिरौं दिवानी ।।
झूमत नयन कछू नहिं सूझत, पुलकावली सरीरा ।
ऐसै कबहुँ बसैहौ भोरी, रँग भरी यमुना तीरा ।।

(२८४)

उमड़ि-उमड़ि दृग नीर बहावै ।
कबहूँ भाग्य होयगौ ऐसौ, नयन अँधेरौ छावै ।।

जुगल रूप हिय मध्य प्रकासै, बाहिर कछु न दिखावै ।
झूमत झुकत फिरत ब्रज वीथिन, पुनि-पुनि पंथ भुलावै ।।
टेढ़ी लगी हिये अभिलाषा, सो कैसे करै पावै ।
भोरी सहज कृपाल किशोरी, टेर - टेर अकुलावै ।।

(२८५)

कपटी कुटिल कौन प्रतिपारै ।
ऐसी और न बान काहु की, अवगुण चित्त न धारै ।।
तन मन अति अकुलात किशोरी, चहुँदिसि चकित निहारै ।
करि अनुमान सबहि कौं देखेउ, बिगरी कोऊ न सँभारै ।।
चित्त अधीर नहिं धीरज आवै, नैनन सौं जल डारै ।
सहज कृपालु लाड़िली राधा, भोरी बिलपत द्वारै ।।

(२८६)

दिल कौ दरद कौन सौं कहिये ।
दिल दरदीली और न तो बिनु, जाकी आसा गहिये ।
अब तौ यह जिय आवत प्यारी, नित-नित रोवत रहिये ।।
कबहूँ सहज कृपालु कृपा सौं, कृपा कोर हठ लहिये ।
भोरी कोटि जन्म लग नातर, सोच-सोच तन दहिये ।।

(२८७)

कहा कहौं कछु कहि नहिं आवै ।
तजि पद-कंज छटा अलबेली, विषयन में मन धावै ।
नैनन नीर बहावत निशि दिन, इनकौं सैर सुहावै ।।
ये सब पातक के फल मेरे, भजन भाव क्यौं भावै ।
ये तौ सहज जनम के बैरी, काहे न बैर बिसावै ।।
तुम तौ सहज कृपालु किशोरी, वेद विमल जस गावै ।
भोरी सोच यही करुणानिधि, क्यौं न विहँसि अपनावै ।।

(२८८)

आपनि दसा कहा अब कहिये ।
अचरज देखि कृपालु किशोरी, समुझि-समुझि चुप रहिये ।

कामधेनु लै भूखन मरिये, सर बिच प्यास जु सहिये ।।
चिन्तामणि कर रंक तऊ अति, भीख माँग कै खैये ।
सिंह सरण गीवड़ मिलि मारयौ, जग उपहास करैये ।।
मन भावै सो करहु कृपानिधि, तुमहिं कहा समुझैये ।
श्री हित चरण सरण भोरी की, ऐसी दसा कि चहिये ।।

(२८९)

ऐसी पीर होत हिय भारी ।
सुनिये करुणाधाम किशोरी, सहज कृपा निधि प्यारी ।।
ज्यों सजि आई वेष कामिनी, हौंसन अधिक सिंगारी ।
पिय लखि फेरि बदन जब लीनौ, बहन लग्यौ दृग बारी ।।
मूँज-विपिन अलि भटकत भूल्यौ, पाइ सुगन्धित ब्यारी ।
हौंसन कंज निकट जब आयौ, गज तेहि खाइ रहा री ।।
सरवर आस तृषित मृग भाजेउ, लागत विपिन दवारी ।
सूखौ सर लखि भाग कुटिलता, बिकल भयौ सुकुमारी ।।
प्यासौ पपिहा घन अवलोक्यौ, बहुविधि कीन्ह पुकारी ।
बिनु इक बूँद दिये घन मिटिगौ, रहिगौ चौंच पसारी ।।
रचि-रचि हौंसन करत बीनती, सो सब होत वृथा री ।
भोरी कृपा कहाँ सो बिसरी, पोच निबाहन हारी ।।

(२९०)

करहु कृपा अब श्यामा श्याम ।
करुणा सिंधु लाड़िले प्यारे, दीन बन्धु सुख धाम ।।
आरत हरण अधम प्रतिपालक, कृपा मूर्ति अभिराम ।
भोरी दुखिया दीन पुकारत, टेरत लै लै नाम ।।

(२९१)

कहौं जो मुख कहि आवत बात ।
ऐसी और न बान काहु की, सत्य कहौं सौं खात ।।
सकल लोक चूड़ामणि प्यारौ, चरणन सीस नबात ।
सो चमार के हेत लिये जल, धावत आधी रात ।।

जाको नाम सुनत मन मोहन, नयनन नीर बहात ।
सोई अली किशोरी प्यारी, टेर सुनत अकुलात ।।
सोतौ नारि विरह सौं व्याकुल, छिन-छिन टेर सुनात ।
कारण रहित कृपालु महल में,सुनि-सुनि कै सकुचात ।।
भोरी पामर नीच अधम अति, सब जग नाम धरात ।
तौहू तुम्हें सुरत हिय ताकी, अस जिय जानो जात ।।

(२९२)

आपनि दसा कहा अब कहिये ।
तुम कौं सब ही उचित कृपानिधि, मोकौं ऐसी न चहिये ।।
कब लगि विषयन में मन दैकै, चरण कमल बिसरैये ।
कब लगि दासी कहत कहावत, सब जग नाम धरैये ।।
कब लगि बान रावरी समुझत, हिय कठोरता गहिये ।
कब लगि यह न फटैगी छाती, सोचि-सोचि पछितैये ।।
यह बिनती अब करत कृपानिधि, ऐसी रहन मिटैये ।
गाढ़ी प्रीति हिये में दीजै, ज्यौं पद पंकज लहिये ।।

(२९३)

जोपै सोचेहु इतनी कृपा प्यारी ।
तौ किन देत प्रीति हिय गाढी कृपासिंधु वृषभान दुलारी ।।
जोपै ऐसी रीति रावरी दीन अधीन सकहु न बिसारी ।
तौ किन ऐसौ करौ मन मेरौ छिन न तजौं पद कंज सुखारी ।।
जोपै सत्य कृपा कछु मोपै मेटहु कृपा करि हिय भ्रम भारी ।
सहज कृपालु करहु अस भोरी ज्यौं देखै भरि नयन छटारी ।।

(२९४)

श्री राधे तोहि कैसे कै जानौं ।
कैसौ रूप कहा छबि सोभा, बैठ-बैठ अनुमानौ ।।
कहा सुभाव माधुरी लीला, कोटि कलपना ठानौ ।
ऐसौ भाग्य जागि है कबहूँ, देखि-देखि हिय आनौ ।।

एहो करुणा धाम किशोरी, जो हिय की पहिचानौ ।
तौ किन भोरी प्रगट करत अब, सहज कृपा कौ बानौ ।।

(२९५)

युगल रूप कैसे चितलावौं ।
लीला ललित बैठि अनुमानत, नित-नित जुगति लड़ावौं ।।
ऐसी कृपा करौ अलबेली, छिन इक झाँकी पावौं ।
भोरी श्याम-गौर नव जोरी, हृदय निकुंज बसावौं ।।

(२९६)

छिन इक तुम मोहि देखौ न प्यारी ।
छिन इक मैं तेरौ बदन विलोकौं, भरि-भरि कै नयना री ।।
छिन इक तुम मोसौं कहौ कृपानिधि, रस भीजे बयना री ।
छिन इक मैं कछु तुमहिं सुनावौं, आपनि बात बिचारी ।।
कबहूँ तौ यह भाँति लाड़िली, कीजौ प्रगट कृपा री ।
भोरी कोटि वारिये तो पर, मुख सौं कहौं कहा री ।।

(२९७)

ऐसी कृपा किन करहु किशोरी ।
उर में गड़ै मनोहर मूरति, मन्द हँसी मुख थोरी ।
हियरा नयन बाण सौं बेधहु, हँसि-हँसि भौंह मरोरी ।।
घायल करि भटकावहु प्यारी, झूमत निधुवन खोरी ।
जियरा टूक-टूक ह्वै जावै, इतनौ माँगत भोरी ।।

(२९८)

हौं प्यारी तोहि कैसे कै पावौं ।
जो तुम बन में मिलौ कृपानिधि, तौ बन कौं उठि धावौं ।।
जो बरसाने करहु अनुग्रह, तौ बरसाने आवौं ।
गहवर बन यमुना तट बैठी, आरत टेर सुनावौं ।।
जेहि विधि रीझौ कुँवरि किशोरी, सो मोसौं करबावौं ।
भोरी पै तौ कृपा सदा ही, हँसि किन दरस दिखावौं ।।

हौं प्यारी तोहि मन की बात सुनावौं ।
कारण रहित कृपालु किशोरी, कौन भाँति तोहि पावौं ।।
जो मन बस में होत कृपानिधि, चरणन ध्यान लगावौं ।
जो तन सौं सहि जात लाड़िली, तौ तप योग करावौं ।।
जो उर प्रीति होत करुणामय, तौ छाती दरकावौं ।
हियरा टूक-टूक करि छिन में, सकल अभाग्य मिटावौं ।।
सो तौ ऐक बनत न दयानिधि, कहा करौं कित जावौं ।
भोरी ललकि-ललकि दरसन कौं, रोइ-रोइ रहि जावौं ।।

(३००)

अब कब मेरी सुधि करिहौ प्यारी ।
नवल निकुंज महल में बैठीं, श्री वृषभान दुलारी ।
ललितादिक सखि संग सहचरी, टहल करत गिरधारी ।।
शिव-हरि-अज श्रुति नेंक न जानी, रहे विचार विचारी ।
सो कृपालु भोरी की स्वामिनि,सब विधि राखन हारी ।।

(३०१)

अब कब मेरी सुधि करहु कृपाला ।
नवल निकुञ्ज विराजत प्यारी, करुणासिंधु दयाला ।
जहँ ललितादिक टहल में ठाड़ी, गावत गीत रसाला ।।
जहँ हरिवंश सँवारत बारन, शोभा विशद विशाला ।
जहँ पग कंजन देत महावर, उमगि-उमगि नँदलाला ।।
अनुपम थल मुनि ध्यान अगोचर, जड़ वपु आप गुपाला ।
तहँ भोरी की चरचा करि हौ,हँसि-हँसि नव ब्रजवाला ।।

(३०२)

जय राधा चरणन की प्यासी ।
ललितादिक जे सखी संग की, प्रिय पद कंज निवासी ।।
शिव ब्रह्मादिक वन्दत पद रज, राधा चरण उपासी ।

जिनकौं जोरि-जोरि कर बिनवत, मोहन कुंज विलासी ।।
महिमा अमित अपार अगोचर, सहज नेह की रासी ।
सिध-निधि कोटि-कोटि की दाता, आरत कलपलता सी ।।
श्री दम्पति मन लिये रहत नित, निसि दिन करत खवासी ।
हित नाते सुधि करहु करावहु, भोरी शठ रस प्यासी ।।

(३०३)

कबहूँ तौ सुधि मेरी करैं हौ ।
श्री ललितादिक सखी संग की, चरचा कबहुँ चलैहौ ।।
श्री हरिवंश नाम की महिमा, सबै भाँति प्रगटैहौ ।
कहि हौ करहु कृपा अलबेली, अब कब लौं तरसैहौ ।।
कुंजन में तुम बसत सदाही, अवसि सु अवसर पैहौ ।
भोरी पामर दीन दुखी तन, करुणा कोर चितैहौ ।।

(३०४)

मेरौ मन बात इती चाहै ।
तुम बिनु सब सुख विष सम लागैं, लै लै नाम कराहै ।
तोसौं प्रीति बढ़ै अति गाढ़ौ, तो बिन और न चाहै ।।
निशि वासर नित नेम नाम कौ, नित नव नेह निबाहै ।
भोरी जो करि कृपा विलोकौ, तौ कछु कठिन कहाहै ।।

(३०५)

सब कछु बदल जात जग माहीं ।
या मन की यह कठिन कुटिलता, कैसेहु बदलत नाहीं ।
अजहूँ विषयन लोभ लुभायौ, तजि निधिवन द्रुम छाहीं ।।
कोटिन जन्म बीत गये ऐसैं, यह पुनि जात वृथा हीं ।
भोरी सहज कृपालु किशोरी, अब तौ गहौ हठ बाहीं ।।

(३०६)

कोटि कुलिस सौ कठिन हियौरी ।
अजहूँ दरकत नहीं दयानिधि, करुणाधाम किशोरी ।
किस विधि प्रीति रीति उर ऐहै, सोचे यत्न करोरी ।।

तौहू सुनहु कृपालु सुन्दरी, कछु नहि ठीक परचौरी ।
भोरी कहा कहै अलबेली, तुम हो बिहँसि कहौरी ॥

(३०७)

सोइ-सोइ सब जागत प्यारी ।
आधी बीते, भोर भये कै, सब कोऊ आँख उघारी ॥
मेरौ भाग्य कौन गत सोयौ, अजहूँ जागत ना री ।
कोटिक जन्म बीत गये यौं हीं, यह पुनि जात वृथारी ॥
दिन-दिन आयु सिरात किशोरी, त्रास होत हिय भारी ।
भोरी करुणा धाम लाड़िली, करुणा कहाँ बिसारी ॥

(३०८)

ऐसौ दुख दीजे हिय माहीं ।
बिनु पद-कंज छटा दृग देखे, कोऊ सुहावै नाहीं ॥
नाम रटै दृग ढारै आंसू, छिन-छिन अति अकुलाहीं ।
काहू सौं मिलिबौ न सुहावै, बातन सौं घबराहीं ॥
बस्ती छोड़ि एकान्त बैठिबौ, जग सब शून्य दिखाहीं ।
भोरी ऐसे दुख बिनु प्यारी, जीवन जन्म वृथा हीं ॥

(३०९)

दीजै हिय में गाढ़ विरह दुख ।
बिनु पद-कंज कछू न सुहावै, विष सम लगै सबै जग कौ सुख ॥
आपनि दसा कहा कहि बरनौ, हियरा तौ निदरत कोटि कुलिष ।
कौन काज जननी जड़ जाई, भोरी शठ सब ही भाँति विमुख ॥

(३१०)

ऐसी पीर हिये में व्यापै ।
नयना सजल नाम रट लागै, अंग-अंग अति काँपै ॥
कोऊ दृग देख्यौ न सुहावै, अति दुख नैनन ढाँपै ।
भोरी लै-लै नाम रावरौ, ऊँचे टेर अलापै ॥

(३११)

सो छबि नयनन में न बसीरी ।
त्रिभुवन मोहन श्यामसुन्दर दृग, जा छबि माँहि फसीरी ॥

बरसत सहज माधुरी धारा, मृदु मुसिकान लसीरी ।
अँग-अँग भूषन वसन मनोहर, कंचुकि कसिब कसीरी ।।
भरि-भरि नैंन न सो छवि देखी, जैसे चकोर शशीरी ।
भोरी धृग-धृग जीवन ऐसौ, सब जग करत हँसीरी ।।

(३१२)

अब तौ आई हौं सरमात ।
करि अपराध कुकर्म कोटि विधि, कछु-कछु हृदय डरात ।
जैसे नारि भूलि पति आज्ञा, पीछैं अति पछितात ।।
लाजन सन्मुख दृष्टि करत नहिं, भय सौं काँपत गात ।
तुम तौ सब विधि हिय की जानत, कहा बनावौं बात ।।
करुणाधाम किशोरी राधे, त्रिभुवन जस विख्यात ।
भोरी सहज कृपा की आसा, अबनि देखि रह जात ।।

(३१३)

यह मन तौ न भयौ मेरौ ।
जिहि देखत ताही सँग लागत, सब विषयन कौ चेरौ ।।
अब तौ प्रीति रीति बिनु प्यारी, नयनन लगत अँधेरौ ।
भोरी अब तुम ही करुणानिधि, कृपा कोर हँसि हेरौ ।।

(३१४)

पोच प्राण की गिनती कीनी ।
या पद कंज छटा पर वारौं, त्रिभुवन शोभा जितनी ।।
दृग भरि कबहुँ माधुरी प्यावौ, आस पुजावौ इतनी ।
स्वर्ग-मुक्ति-संपति-सिधि भोरी, तृन सम गिनत न तितनी ।।

(३१५)

झूठी प्रीति हिये में थोरी ।
सो झूठी साँची कर मानत, यह अन्धेर बड़ौरी ।
ताहू पै मिलिबे की आसा, हिय में उमँग करोरी ।।
सेवा के बहु भाँति मनोरथ, करत बहोर-बहोरी ।
भोरी के या भोरे पन पै, रीझत क्यों न किशोरी ।।

इतनो तौ कबहू हँसि दैहौ ।
सुनहु कृपालु किशोरी राधे, अवसि कृपा की कोर चितै हौ ।।
तुम मोहि मिलौ-मिलौ न कृपा करि, मोकौं ढूँढत तौ भटकै हौ ।
तुम मेरी सुनौ-सुनौ न किशोरी, मोकौं तौ नित दीन रटै हौ ।।
तुम मेरी बाँह गहौ न गहौ हँसि, भुज पसार मोसौं विनय करै हौ ।
तुम मेरे दृग पौंछौ मत पौंछौ, मोसौं नित दृग नीर ढरै हौ ।।
हौं अति नीच कहा मुख माँगौं, इतनौ तौ तऊ आस पुजैहौ ।
भोरी नेम बढ़ै तुम ही सौं, सब जग सौं सम्बन्ध छुड़ैहौ ।।

(३१७)

इतनी बात कृपा करि दीजै ।
मिलन चटपटी हिय में लागै, विरह ताप तन छीजै ।
तुम तौ मिलौ मिलौ न कृपा करि, मोचित प्रेम सौं भीजै ।।
नयनन नीर बहै निशि वासर, हियौ कठोर पसीजै ।
भोरी कौ अवलम्ब न दूजौ, टेरि-टेरि कै जीजै ।।

(३१८)

कबहूँ बढ़ै विरह दिन दूनौं ।
बिनु भरि नयन माधुरी देखे, सब जग लागै सूनौं ।।
मिलिबौ-हँसिबौ-कहिबौ-सुनिबौ, चित्त कछू न सुहावै ।
सब सौं जाइ बैठियत न्यारे, बात करत घबरावै ।।
कहत सुनत तेरौ नाम किसोरी, उमगि नयन भरि आवै ।
लीला ललित बिचारत जब-जब, हियरा टूटत जावै ।।
विष सम लगं विषय सुख जेतौ, मुक्ति स्वर्ग नहिं चाहै ।
मूँदे नयन पुलक तन पुनि-पुनि, लै लै नाम कराहै ।।
भोरी की अभिलाषा इतनी, बार-बार सोई माँगै ।
कौन भाग्य सौं कुँवर किशोरी, प्रीति हिये में जागै ।।

(३१९)

कबहूँ मो तन विहँसि चितै हौ ।
सब विधि निराधार शरणागत, कृपा कोर अपनैहौ ।

सहज कृपालु किशोरी राधे, सकल अभाग्य मिटैहौ ।।
हिय की हरिहौ कठिन कुटिलता, प्रीति रीति हँसि दैहौ ।
भोरी सहज बान करुणा की, अब कब लौं बिसरैहौ ।।

(३२०)

या हिय की कठोरता कहि न परै ।
काहू भाँति न टूटत प्यारी, कोटि कुलिस निदरै ।।
कोटि जतन करि हार रही मैं, कछु पै बनि न परै ।
यह अजहूँ जैसे कौ तैसौ, दिन-दिन कठिन परै ।।
अब तौ कछु उपाय नहि सूझत, इक तेरी आस करै ।
भोरी तोहि सब सहज किशोरी, जो तै चित्त धरै ।।

(३२१)

हँसि-हँसि क्यों न बोलियत प्यारी ।
कोमल चित्त किशोरी प्यारी, यामें घटत कहारी ।।
नातर इतनौ देहु कृपा कर, माँगहुँ गोद पसारी ।
याही सोच दिवस निशि काटौं, सुमरि-सुमरि लीलारी ।।
काहू सौं करिबौ न सुहावै, हिल मिल हँसि बतियाँ री ।
भोरी सहज किशोरी तो बिनु, जीवन जनम वृथा री ।।

(३२२)

दीजै प्रेम रावरे पग सौं ।
तुम बिन और न काज काहू सौं, नातो टूट जाय सब जग सौं ।
ऐसौ मन मेरो करौ किशोरी, छिन-छिन टेरौ तोहि उमँग सौं
तेरी सहज कृपा की उमगन, बोर देय भोरी कौं रंग सौं ।

(३२३)

कबहूं उठिहौ उमँगि किशोरी ।
तन मन को सँभार नहि रहि है, देखि दीनता मोरी ।।
हौं तौ कब की दीन पुकारत आसा करत करोरी ।
भोरी कुटिल पतित अति पामर, तौ हू सब बिधि तोरी ।।

कृपा सिंधु उमड़ौगी कबहूँ ।
हौं कब की तोहि टेरत आरत, तैं न सुनत अबहूँ ।।
हौं तौ हाथ बिकानी भोरी, सोच नहीं लबहूँ ।
बीत जाइ वरु जन्म किशोरी, हठ न तजों कबहूँ ।।

(३२५)

तूनै हाय कहा कियौ मन रे ।
कौन काज या जग में भूल्यौ, विषय महाविष चाखन रे ।
जेहि सरूप घनश्याम बिकान्यौ, सो न लख्यौ भरि आँखन रे ।।
अब किन सोच-सोच दिन काटत, रोइ-रोइ कै रातन रे ।
भोरी सहज किशोरी छवि पर, वारौ कोटिक प्राणन रे ।।

(३२६)

कैसे तोहि पाईये वृषभान दुलारी ।
विधि-हरि-हर तेरी पद रज चाहत, रँग भरी चितवन कुंजबिहारी ।
भक्त सखा जेते मोहन जू के, सबकौं अगम सहज सुकुमारी ।।
पचि हारे श्रुति पार न पायौ, मुनि मन ध्यान न आवत प्यारी ।
केहि गुण रीझि मोहि अपनैहौ, मैं तौ पामर दीन दुखारी ।।
इतनी बान रावरी जानत, निरवलम्ब कौं राखन हारी ।
तासौ आस परत यह प्यारी, करि हौ कबहूँ उमगि कृपारी ।।

(३२७)

ऐसी कौन से ठौर दुरी सुकुमारी ।
जहँ इन पायन दौरि न जइये, जहाँ दृगन सकिये न निहारी ।।
जहँ कौ पन्थ न वेदन जान्यौ, जहँ कौ शब्द परत श्रुति ना री ।
जहँ मन बुद्धि बचन नहिं पहुँचत, जहँ की रज जाँचत त्रिपुरारी ।।
कौन भाँति तहाँ ढूँढ़न आवै, मोसी पामर दीन दुखारी ।
भोरी यत्न न सूझत कोऊ, तासौं पुनि-पुनि करत पुकारी ।।

(३२८)

कौन भाँति रीझौगी प्यारी ।
जिहि विधि रीझो सहज कृपानिधि, सोई करौं सुकुमारी ।।

तुम तौ सब विधि बुद्धि अगोचर, लोक लोक सौं न्यारी ।
ना जानों तुम रीझिहौं कैसे, यही त्रास हिय भारी ।।
तुम ही क्यों न कहौ अलबेली, हौं तो शरण तिहारी ।
ज्यौं-ज्यौं उमगि रीझि हँसि मिलिये, भोरी बलि-बलिहारी ।।

(३२९)

कौन भाँति तुम रीझौ किशोरी ।
ज्यों रीझौ सोइ करों कृपानिधि, जहँ लगि चलि है मोरी ।।
मोहि तौ जतन नयन नहिं सूझत, मन बुधि वेग थक्यौरी ।
भोरी सहज कृपालु लाड़िली, आपुन क्यों न कहौरी ।।

(३३०)

श्रीराधे उर आइ हों कैसे ।
सहज कृपाल किशोरी कब लग, दिवस काटियत ऐसे ।।
कौन भाग्य ऐसौ दिन देखौं, छिन टारौं न हिये से ।
भोरी आस पुजावहु प्यारी, अब बनि आवै जैसे ।।

(३३१)

कोटि जन्म लगि हठ यह मोरी ।
बिनु पद कञ्ज और नहिं लैहौं, करुणा सिंधु किशोरी ।।
तीन लोक सम्पति नहिं चाहौं, रिधि-निधि-सिद्धि करोरी ।।
कैतौ मिलौ कै दीन रटावौ, हौं तौ सब विधि तोरी ।
कोटि जन्म वरु रोवत काटौं, हठ न तजौं भोरी ।।

(४३२)

कृपा सो कैसे विसरि गई ।
नित की बान हुती करुणा की, अब विपरीत भई ।।
नहिं सहि जात टेर दुखियन की, मूरति कृपा मई ।
हौं अब टेरत कौन बेर की, अँगुरी कान दई ।।
युग-युग वही चाल चलि आई, अब कछु नई भई ।
भोरी बिरियाँ सहज कृपानिधि, कौन सी रीति ठई ।।

बिनती बार-बार का भाखौं ।
जो कछु कान करौ अलबेली, तौ बहुरौ अभिलाखौं ॥
संपति-साज लीद नहिं चाहौं, प्रेम सुधा रस चाखौं ।
हौं तौ कोटि जनम लगि प्यारी, आस रावरी राखौं ॥
तेरी चरण रेणु पर कोटिन, प्राण गली में नाखौं ।
आरत रटन न छांड़ौं भोरी, लोभ दिखावहु लाखौं ॥

(३३४)

सब विधि साँचौ कठिन अभाग ।
काहू विधि टारे न टरत री, लगन देत नहिं लाग ।
कोटिक जनम बीत गये ऐसे, याकौ येई राग ॥
कर्म-धर्म सुभ साधन जितने, तिन पर डारी आग ।
हो प्यारी, हौं बहु विधि चाहत, पद न बढ़त अनुराग ॥
अब तौ सरण तिहारे आई, रही चरण सौं लाग ।
यह डर सहज कृपानिधि भोरी, बान न दीजौ त्याग ॥

(३३५)

मृदु मुसिकान हिये न समाई ।
जीवन सबै अकारथ बीत्यौ, का मुख कहौं बनाई ॥
तन-मन प्रान कोटि नहिं वारे, उमगि-उमगि निधि पाई ।
सजल नयन तनु पुलकि जमुन तट, निशि कबहूँ न गँवाई ॥
युगल माधुरी पान न कीन्हीं, नहीं छवि रही लुभाई ।
गहवर गिरिवर खोर सांकरी, ऊँचे न टेर सुनाई ॥
दरसन मिल्यौ न प्रेम जग्यौ हिय, दिन सब गये सिराई ।
भोरी धृग-धृग जीवन ऐसौ, सब जग होत हँसाई ॥

(३३६)

जड़ अखियाँ न कभू उमड़ीं ।
या छबि दरस लोभ अकुलाती, धरि-धरि हठ न अड़ी ॥
सुन्दर मृदुल मनोहर प्यारी, मूरति उर न गड़ी ।
भोरी धृग-धृग जीवन ऐसौ, सब विधि विपद बड़ी ॥

कठिन दैव गति टरत न टारी ।
सोयो भाग्य न जागत प्यारी, टेर-टेर हौं हारी ।।
तब कछु जानहुँ कृपा रावरी, फटन लगै हियरा री ।
विषय भोग जग प्रीति न भावै, दिन दूनौ विरहा री ।।
सब सौं अलग बैठियत व्याकुल, पीर हिये अति भारी ।
दिन नहिं भूख रैन नहिं निद्रा, रहत निहार निहारी ।।
इतनी आस पुजावौ मेरी, हौं तौ सरण तिहारी ।
भोरी प्रीति रीति बिनु धृग-धृग, जीवन जनम वृथारी ।।

(३३८)

कैसे बरनौ कठिन अभाग ।
मूँद-मूँद दृग बैठत नित-नित, हिय न कछू अनुराग ।।
तुम कौं धोखौ दैन कृपानिधि, रचत बहुत से स्वाँग ।
लै लै नाम नीर भरि लावत, जनु बैठी रस पाग ।।
ह्वै हौ हँसि-हँसि देत लाड़िली, देखि-देखि सो राग ।
छिन हूँ ऐसै हँसौ जु प्यारी, तौ मेरे बड़ भाग ।।
गोद पसारि नवल अलबेली, रीझ लेउँ कछु माँग ।
भोरी दीजे चरण कमल सौं, हिय को गाढ़ो लाग ।।

(३३९)

कै तुम उमगौ कै मोहि उमगावौ ।
कै तो आइ मिलौ करुणानिधि, कै मोकौं ढूँढ़त भटकावौ ।
कै भव ताप हरौ हँसि प्यारी, विरह ताप कै देह तपावौ ।।
कै दै दरस जुड़ावौ हियरा, कै वियोग दुख सौं दरकावौ ।
कै भुज गहौ कृपालु कृपा करि, कै सब ही सौं नेह छुड़ावौ ।।
कै दृग आइ अचानक मूँदौ, कै मोहि हेरत बाट बिठावौ ।
कै मुसकान माधुरी देवौ, कै मोहि तन मन विकल फिरावौ ।।
कै हँसि कहौ कभू द्वै बतियाँ, कै मोसौं किन दीन रटावौ ।
कै मोहि राखौ निकट आपने, कै तुम मेरे हिये समावौ ।।

द्वय में रुचि आवै सो कीजै, कै दोऊ करि सुयश बढ़ावौ ।
भोरी चरण शरण अलबेली, कृपा कोर की आस पुजावौ ॥

(३४०)

श्री प्यारी जी कौं मेरी सुधि कौन करावै ।
कौन कृपालु गरीब दुखी की, बरबस बाँह गहावै ।
कहँ मैं कहँ अलबेली राधा, समझत हिय अकुलावै ॥
मन-बुधि-बचन अगोचर प्यारी, टेर कौन विधि जावै ।
श्री हरिवंश चन्द्र बिनु भोरी, को यह आस पुजावै ॥

(३४१)

सहज कृपालु कृपा की आस ।
जब-जब बैठि प्रभाव विचारत, हिय अति होत हरास ।
कहँ मैं कहँ अलबेली राधा, कहाँ मिलन की प्यास ॥
कौन भाग्य छिन प्रगट देखि हौं,मुसिकन बदन बिकास ।
भोरी सहज कृपालु किशोरी, वेग हरहु भव त्रास ॥

(३४२)

इतनी विनय मेरी मानों कृपाला ।
झूठी प्रीति करौ सब साँची, करुणा सिंधु दयाला ॥
जनु पति मरत जरन उठि धाई, काची विरहिन बाला ।
काँची प्रीति सत्य सब ह्वै गई, जब तन लागी ज्वाला ॥
हौं तौ रावरे दाग दगी अब, दीजै बिरह बिसाला ।
व्याकुल तन बन-बन भटकावौ, टेरत नाम रसाला ॥
ऐसौ मन मेरौ करौ कृपानिधि,छिन-छिन होउं बिहाला ।
हा ! राधे विलम्ब ना कीजै, भोरी जन प्रतिपाला ॥

(३४३)

अब कब तोहि ढूँढ़न उठि धावौं ।
तृन सम तजि सुत नारि धाम धन, त्रिभुवन चित्त न लावौं ।
बिन देखे मन धीर न आवै, बार - बार अकुलावौं ॥

छिन ठहरत नहिं बनै किशोरी, नयनन नीर बहावौं ।
हा राधे कहि संभ्रम इत-उत, डोलत लोग हँसावौं ।।
तन मन की न सँभार रहै कछु, खान-पान विसरावौं ।
चहुँ दिशि चकित विलोकत प्यारी, हिय कठोर दरकावौं ।।
कैतौ रूप स्वाति जल पीवौं, कै टेरत मर जावौं ।
भोरी चातक की गति लखि-लखि, अब कब लौं पछितावौं ।।

(३४४)

सोई ब्रज भूमि बिराजत नीकी ।
सो वृन्दावन सोई जमुना, सोई कुंज भाँवती जीकी ।।
हा राधे तुम कौं बिन देखे, चहुँ चितवत अकुलावौं ।
किहि विधि कहाँ पाईये सोचत,धीरज चित्त न लावौं ।।
तुम बिन सब जग सूनौ लागै, कछु देख्यौ न सुहावै ।
श्री राधा कृपालु अलबेली, छिन-छिन टेर सुनावै ।।
विलपत पुलकत अकुलत हेरत, नयनन नीर बहावै ।
छिन-छिन मूर्छि परै अवनी पै, छिन संभ्रम उठि धावै ।।
कौन भाग्य ऐसौ दिन अैहै, विरहा देह जरावै ।
भोरी टूटि-टूटि के हियरा, टूक-टूक ह्वै जावै ।।

(३४५)

कबलौं जियावौगी बिनु देखैं ।
ब्रज नव तरुणि कदम्ब नागरी, मृदुल मनोहर बेखैं ।
गूँथित अलक तिलक कृत सुन्दर, नयनन काजर रेखैं ।।
अंग-अंग छवि अटक रहत दृग, लखत लगत न निमेखैं ।
भोरी सो छवि बिना निहारे, जीवन कबने लेखैं ।।

(३४६)

जूठन टूक न पायौ अब लौं ।
सहज कृपाल किशोरी राधे, तरसाबोगी कब लौं ।।
तुम्हरे संग कटी सब ही ते, सब विधि भई तिहारी ।

जूठन के टूका कौं तरसत, ललकत गोद पसारी ।।
स्वामिनि सबल नवल अलबेली, सर्वोपरि ठकुरानी ।
हौं तौ तेरे चरण की चेरी, तेरे हाथ बिकानी ।।
ऐसी रीति कौन सी नागरि, सहज कृपालु किशोरी ।
भोरी उमँगि द्रबहु न कृपानिधि, सुनत याचना मोरी ।।

(३४७)

भव सौं मेरौ तपत हियौरी ।
इतो आस उर बढ़त लाड़िलो, करुणा धाम किशोरी ।।
कबहूँ बसन छोर सौं शीतल, चलै समीर भलौरी ।
अंग-अंग मो परसि दयानिधि, हरै ताप सब मोरी ।।
कबहूँ बरसौ सहज कृपा की, दृग सौं दृष्टि अथोरी ।
मेटि दाह सब सहज कृपानिधि, रस में राखौ बोरी ।।
छिन-छिन अधिक अधीर लाड़िली, आस करत नित तोरी ।
कुञ्ज कुटीर तीर जमुना के, भुज गहि राखौ भोरी ।।

(३४८)

कबहूँ तौ लाड़िली ऐसी कृपा करौरी ।
हौं तौ लोटि रहौं कुञ्जन मग, तुम हिय आइ कै पाँव धरौरी ।।
हौं तौ लागि रहौं चरणन सौं, तुम झुकि बिहँसि भुजा पकरौरी ।
हौं तौ नैंक उठौं न उठाये, तुम बल कर हठ भुजन भरौरी ।।
हौं तौ सब विधि अधम अपावन, तुम तौ आपनी ढरनि ढरौरी ।
भोरी नीच सबै नीचन में, कृपा आस नित द्वार ररौं री ।।

(३४९)

भव निधि मेरौ मन मीन भयौरी ।
सहज कृपालु किशोरी राधे, बिनय मानिये मोरी ।
लीजै खैंचि सहज करुणानिधि, डार प्रीति की डोरी ।।
तुम बिन और बनैं यह कासौं, हौं बिनवत कर जोरी ।
भोरी चरण शरण चलि आई, याचत लोचन कोरी ।।

(३५०)

अब तो हिय अति लाज लगै ।
सारँग संग शलभ, शशि ऊपर रहत चकोर ठगै ।
नादहि दिये कुरंग रहत मन, मारत शर न डगै ।।
पति सँग जरत चिता पर नारो, प्रेम हिये उमगै ।
भोरी धग-धृग जीवन ऐसौ, अजहुँ न प्रेम पगै ।।

(३५१)

मो सम कौन निलज जग माहीं ।
चातक मीन शलभ गति देखत, लाज लेस हिय नाहीं ।।
पति बिन नारि प्राण नहिं राखत, उमगि संग जरि जाहीं ।
मरिबौ अबसि अन्त काहू दिन, जीवन निपट वृथाहीं ।।
कहा करौं बस चलत कछू ना, यह उर सोच सदाहीं ।
अजहूँ दरस बिना धृग भोरी, पामर प्राण न जाहीं ।।

(३५२)

लाड़िली प्यारी कभू मेरी ताप हरि कै जाइयौ ।
नेह कौ सम्बन्ध अब तो, सत्य करि कै जाइयौ ।।
हौं जु ढूँढत गिर रहौंगी, हार थकि कै राह में ।
हेरि मृदु मुसकाइ मेरी, भुज पकरि कै जाइयौ ।।
बंक चितवन बाण सौं, मेरौ हियौ हँसि बेधियो ।
जाल छबि में नयन खंजन, द्वय जकरि कै जाइयौ ।।
टेर मेरी तीर सी, हिय में न लग जावै कहूँ ।
हाँ किशोरी लाड़िली, इतसौं सँभरि कै जाइयौ ।।
नयन करुणा सिंधु ये तो, आज उमड़ेंगे अबसि ।
पाँव पंकज पाँ परौं, तुम हू ठहरि कै जाइयौ ।।
धूर में मोकौं मिलावौ, बात पै मानौ इतो ।
हाय मेरी धूर पै फिर, पाँव धरि कै जाइयौ ।।

तब लगि विषयन में मन धावै ।
जब लगि मन्द मनोहर हाँसो, हिय में नाहिं समावै ।
कठिन अभाग न मिटि है तौलौं, प्रीति हिये नहिं आवै ।।
तासौं पुनि-पुनि गोद पसारै, आरत टेरि सुनावै ।
दिल दरदीलो सहज किशोरी, भोरी भाग जगावै ।।

(३५४)

ऐसो विरह हृदय अधिकावै ।
छिन-छिन प्रीति उठै अति गाढ़ी, धीरज नैंक न आवै ।।
जब-जब पात वायु सौं खरकै, तब-तब उठि-उठि धावै ।
आवत जान कृपालु किशोरी, दरसन कौं अकुलावै ।।
जब-जब बढ़त ताप दृग मूँदै, नाम टेर रट लावै ।
शीतल वायु श्वास तन परसत, रोम-रोम पुलकावै ।।
हियरा फटत जाय अलबेली, नैनन नीर बहावै ।
भोरी सहज कृपालु किशोरी, तुम बिन कछु न सुहावै ।।

(३५५)

प्यारी हौं तेरे आगे गोद पसारौं ।
जब लौं चार दिना यह जीवन, तेरौ नाम उचारौं ।।
ऊँचे टेर सुनाऊँ छिन-छिन, नैंनन सौं जल ढारौं ।
अति व्याकुल भटकौं बरसाने, ढूँढत धीर न धारौं ।।
तन-मन धूर करौं निज भोरी, तेरे पथ में डारौं ।
का जानौं मेरौ भाग जग उठै, जो उत में पग धारौं ।।

(३५६)

प्रेमिन में यह साँचे चकोर ।
एक चन्द्र सौं जोर रहत दृग, सब ही सौं तृन तोर ।।
साँचे शलभ प्राण तजि डारत, उमगत प्रेम अथोर ।
साँची नारि जरत जो पति सँग, बँधी प्रेम की डोर ।।

लागत लाज देखि कै अपनौ, झूठौ हियौ कठोर ।
भोरी लाज राखिये स्वामिनि, देखि आपनी ओर ॥

(३५७)

बिनती सुनहु रसिक सिरताज ।
शलभ चकोर मीन मृग चातक, प्रेमिन जुरचौ समाज ॥
सन्मुख दृग करि देख सकत नहिं,अति खिसियानी आज ।
भोरी सहज कृपालु कृपा करि, रखिये जन की लाज ॥

(३५८)

कबहूँ मेरौ यह मिटि है तरसिबौ ।
बड़े भाग्य कहुँ मिलिहै मन कौं, अलक कुटिल में फँसिबौ ॥
चन्द्र बदन छवि बिमल चाँदनी, नित नव सुधा बरसिबौ ।
ओंठन पै अद्भुत अरुणाई, ता पर मृदु-मृदु हँसिबौ ॥
बचन मनोहर सुधा धार कौ, बदन कंज सौं खसिबौ ।
लगि है हाथ तिरीछी चितवन, नयन कोर हिय धँसिबौ ॥
पद पंकज रस मातौ प्यारी, श्री यमुना तट बसिबौ ।
भोरी सहज किशोरी छबि कौं, नित-नित देखि हुलसिबौ ॥

(३५९)

किन सिखई तोहि दीन, न पूछौ,
मोसी खीन मलीन, न पूछौ ॥
कौनै कही सबल अलबेली,
सब विधि सौं बल हीन, न पूछौ ॥
तुम नित केलि करौ आनन्द में,
टेरत द्वार अधीन, न पूछौ ॥
भजन भक्ति जप बनत न जासौं,
यों पुरुषारथ छीन, न पूछौ ॥
हौं माँगत नित पीर विरह की,
याचक ऐसी नवीन, न पूछौ ॥

विलपत दीन दुखी भोरी सौं,
कस तब बदन मलीन, न पूछौ ॥

(३६०)

प्रीति साँची हिय जगावौगी, कहौ,
ढँढ़ती व्याकुल फिरावौगी, कहौ ॥
चारु कच के पेच के नित ध्यान में,
मेरौ मन व्याकुल भ्रमावौगी, कहौ ॥
जल की बूँदन की न कछु परतीति अब,
खून नैनन सौं ढरावौगी, कहौ ॥
अति विकल अँग-अंग पुलकित लाडिली,
नाम अपनो नित रटावौगी, कहौ ॥
आयु बीती जाय टेरत द्वार पै,
मरिवे तक दरसन दिखावौगी, कहौ ॥
जौलौं मेरी मृत्यु मुख मूँदै नहीं,
चार दिन करुणा करावौगी, कहौ ॥
गिर रहौं मैंतो उमंग कै राह में,
झुकि विहँसि भुज गहि उठावौगी, कहौ ॥
तेरी मृदु मुसिकान पै भोरी बिकी,
स्वामिनी मेरी कहावौगी, कहौ ॥

(३६१)

जब श्री राधे टेर सुनावौं ।
दैंउ छुड़ाय चकोर चन्द्र सौं, चातक रटन भुलावौं ॥
खग मृग जीव जगत के जेते, ते सब ही उमगावौं ।
सहज प्रेम सागर की उमगन, तीनहु लोक डुबावौं ॥
हौं तौ प्रीति रीति सों रीती, निज गति कहा सुनावौं ।
भोरी सत्य होय यह सब ही, कृपा कोर जो पावौं ॥

कपट नीर नैनन ढरकायौ ।
कछुवै करत बन्यौ न किशोरी, नाहक जगत हँसायौ ।।
पर तिय द्रव्य लोभ लोचन में, अब लौं रहत समायौ ।
प्रेम प्रवाह उमगि अलबेली, ताहि न धोइ बहायौ ।।
उर में प्रीति नेंक नहिं आई, झूठौ स्वाँग बनायौ ।
भोरी धृग धर्म ध्वज पापी, जननी जनक लजायौ ।।

(३६३)

हा ! आयु सब सिरानी, जाग्यौ न भाग्य मेरौ ।
अब तौ कृपालु प्यारी, अवलम्ब एक तेरौ ।।
मुसकान माधुरी कौं, तरसत रही सदाही ।
ना ओंठ खुलत देखे, ना दन्त कौ उजेरौ ।।
दिन चार नीर ढारत, ढूँढत फिरौं दिवानी ।
फिर अन्त धूर ह्वै है, सब चातुरी-बखेरौ ।।
राख्यौ न मन दिवानौ, मो बाँधि तुमने लट सौ ।
जो अब विषय में भटकै तौ खोट कौन मेरौ ।।
मधु देत जो मरै री, विष दीजिये कि ताकौं ।
क्यौं दुख सौं मोहि मारौ हँसि नेंक क्यौं न हेरौ ?
ललकत रहौं सदा ही, वे कंज पग परसिवे ।
कर धूर निज गली में, किन दीजिये बसेरौ ?
ऐसी कठिन निलजता, अब लौं न देह छूटै ।
बिनु देखे तोहि जीवन, यह कौन काम केरौ ?
भोरी सौं काहे रूठौ, वा दिन अति निबल की ।
कब तुमने बाँह पकरी, कब तुमने हँसि कै हेर्यौ ?

(३६४)

मेरे कोटिक प्राण, हँसि-हँसि लीजिये,
करि कृपा छिन एक दरसन दीजिये ।

तुच्छ जो यह भेंट अनुचित यह विनय,
तौ गली की धूरि अपनी कीजिये ।।
जो न इतनौं भाग मेरी लाड़िली,
तौ विरह की ताप नित तनु छीजिये ।
यह उमँग नित ही बसै मेरे हिये,
कैसे वह छवि नयन भरि-भरि पीजिये ।।
तनु पुलक फाटत हियौ नयना सजल,
अति विकल तो नाम लै-लै जीजिये ।
भोरी दौं लागै विरह की देह में,
तेरे द्वारे प्राण तलफत दीजिये ।।

(३६५)

इतनौ माँगौं और या बिनु, कछु न माँगौं लाड़िली,
तेरी मृदु मुसकान देखत, प्राण त्यागौं लाड़िली ।
प्रेम की तपि ताप पाहन, हीय पिघलैगौ कभू,
बनि महावर कौन विधि, तो पाँव लागौं लाड़िली ।।
चार दिन व्याकुल भटकती, तोहि बन ढूँढत फिरौं,
एक क्षण धरि शीश पग पै, प्राण त्यागौं लाड़िली ।
हाय बीते जन्म कितने, तुहि न देख्यौ आज लौं,
आयु यह पुनि ढरि चली, कब सोइ जागौं लाड़िली ।।
उन युगल खंजन कौं धरि, राखौ निछावर तुच्छ यह,
आयु बीती तुम बिना, किमि प्राण त्यागौं लाड़िली ।
अब तौ भोरी करि कृपा, मेरी भुजा हँसि कै गहौ,
छोड़ि सब तृन तुल्य, तव पद प्रेम पागौं लाड़िली ।।

(३६६)

तोहि ढूँढन कुंज आवौंगी अवसि,
टेर द्वारे पै लगावौंगी अवसि ।
कौन मुख लै लौट जावौंगी विमुख,
प्राण द्वारे पै गँवावौंगी अवसि ।।

जब लौं उमगौगी न मेरी लाड़िली,
टेरती जीवन बितावौंगी अवसि ।
कैसे मेरी ओर देखौगी नहीं,
तो कृपा यह हठ छुड़ावौंगी अवसि ॥
गुरु कृपा अवलम्ब यदि पैहौं कछू,
टेर सौं तिहुँतुर डुलावौंगी अवसि ।
तुम उबारौ मत उबारौ करि कृपा,
भौंर में नौका चलावौंगी अवसि ॥
प्रेम पथ की अग्नि जोपै अति कठिन,
हौं शलभ गति तामें धावौंगी अवसि ।
जो कभू वह छबि समावै नयन में,
ढाँपि दृग हिय में छिपावौंगी अवसि ॥
जो सुधा मुसकान मिलिवे की नहीं,
द्वार पै विष तेरे खावौंगी अवसि ।
खून जोपै नयन सौं बरसत नहीं,
बैठि कै आंसू बहावौंगी अवसि ॥
मोरी जो रुचि होइ सो तुम कीजिये,
मैं तौ तेरी ही कहावौंगी अवसि ॥

(३६७)

दरद देहु, फिर दवा किशोरी,
पहलै प्रेम, निबाह बहोरी ।
तजि सब बिकल बिपिन भटकावौ,
औचक बाँह गहौ फिर मोरी ॥
पहलै बिरह की ताप तपावौ,
फिर मिलि देहु रंग में बोरी ।
पहिलै तौ हिय अति उमगावौ,
फिर तहँ आप समाइ रहौरी ॥

प्रथम टेरती भूमि गिरावौ,
फिर उठाइबे धाइ झुकौरी ।
व्याकुल प्रथम नीर ढरवावौ,
फिर दिखाउ मुसकान जु थोरी ।।
मूँदे नयन ध्यान करवावौ,
अचक मूँद दृग मन्द हँसौरी ।
पहिलै मन मेरौ करहु दिवानौ,
फिर लट बाँध रखौ बरजोरी ।।
ज्यौं रीझौ सो मोपै करावौ,
फिर हँसि रीझौ कृपालु किशोरी ।
पहिलै आरत बिनय कहावौ,
उमगि सत्य फिर कीजिय भोरी ।।

(३६८)

अपनौ दिवानौ, राखौ आप सम्हारी ।
यह मन मेरौ सँभारघौ न सँभरत, हौं जु सँभारत हारी ।।
लोक लाज कुल मेंड़ छाँड़ि कै, कर्म - धर्म - ब्रत टारी ।
यह तौ उमगि-उमगि उठि धावत, सब ही संक बिसारी ।।
भाग-अभाग गिनत न किशोरी, भलौ बुरौ न बिचारी ।
कुगति-सुगति कौ सोच नहीं कछु, चाहत रूप सुधारी ।।
राखौ बाँधि आपनी लटसों, कोमल चित सुकुमारी ।
यह तौ प्यासौ तेरे रूप कौ, ललकत रहत सदारी ।।
हौं तौ तोहि आज ही सौंपत, कहत पुकार पुकारी ।
भोरी अन्त कहूँ जो भटकै, तौ अब भूल तिहारी ।।

(३६९)

ढारि-ढारि जल धोये नैन ।
कबहूँ अमल कमल पग इन में, धरि हौ करुणा ऐन ।

वेग उमगि किन उठत किशोरी, श्यामसुन्दर सुख दैन ॥
दरसन कौं तन-मन अकुलावै, हिय नहिं आवै चैन ।
भोरी दीन दुखारी आरत, टेरत धीर धरैन ॥

(३७०)

कठिन अभाग देखि कै अपनौं, हा-हा हौं पछितात ।
कहा कहौं तुम बिनु करुणानिधि, देह न छाँड़ी जात ॥
नहिं दृग मूँद ध्यान धरि बैठत, नहिं देखन अकुलात ।
नहिं बन धाइ ढूँढ़िवे आवत, तलफि न प्राण पठात ॥
वृथा दिवस बीतत करुणानिधि, व्यर्थ जात सब रात ।
लागत लाज हिये अति प्यारी, मुख नहिं आबत बात ॥
हित हरिवंश प्रेम रस सागर, त्रिभुवन जस विख्यात ।
भोरी सहज प्रीति की याचक, तुम्हें टेरि रहि जात ॥

(३७१)

हा ! राधे प्राण चले जैहैं ।
मन की हौंस रहैगी मन में, तुम पै वारि न पैहैं ।
इक दिन मरन अवसि अलबेली, कब लग राखे जैहैं ॥
जीवन तौ बीत्यौ पछिताते, मरत अधिक पछितैहैं ।
भोरी सहज कृपालु किशोरी, तुम बिन काहि चितैहैं ॥

(३७२)

पद पंकज मन मधुप बसत ना,
जगज्जाल तजि अलक फसत ना ।
कोटिक यत्न हेरि हिय हारी,
नयन कोर हिय माहिं धसत ना ।
इतनौ सोच रहत मन माहीं,
मुकुर सरस छबि हिय निकसत ना ।
दृग जल बहत कबहूँ करुणानिधि,
पै तब चरण कमल परसत ना ।

विलपत आयु बीतिहै जानी,
दृग सन्मुख तुम कबहुँ हँसत ना ।
कैसे प्राण कोटि तजि डारौं,
सो छवि नयन छिनहु दरसत ना ।।
कृपा कोर तिहुँ लोक डुबोये,
मो चातक पै कछु बरसत ना ।
झूठी प्रीति जनावत तुमकों,
लखि कृपालु क्यों रीझि हँसत ना ।।
काधौं करौं कहो हँसि प्यारी,
हिय में प्रेम-भाव विकसत ना ।
भोरी मिटै अभाग कौन विधि,
जो तव विरह प्राण निकसत ना ।।

(३७३)

इतनौं मांगौं प्राण दैकै हाथ में,
लट सँभारौं तेरी लैकै हाथ में ।
कब किशोरी लाड़िली करुणायतन,
भुज गहौ हँसि-हँसि चितैकै हाथ में ।।
कुंज गलियन ढूँढिबे तुम कौं कभू,
आइ हौं निज सीस लैकै हाथ में ।
तव दरस बिन अबतौ प्यारी रहि गयौ,
प्राण दीवौ विष अँचैकै हाथ में ।।
कौन भागन हौउँगी रति-कुंज फूल,
खेलि हौ छिन मोहि लैकै हाथ में ।
धूरि पै भोरी के जो आवौ कभू,
प्यारी रज लीजो चितैकै हाथ में ।।

(३७४)

तेरे द्वारे प्राण दैवे आइहौं,
अब न खाली, लौट जैवे आइहौं ।

कब तलक रहिहौं मनोरथ ही करत,
झूठ कौं सच कर दिखैवे आइहौं ।
अब तौ बिलपत द्वार आरत टेरि कैं,
लोग या ब्रज के हँसैवे आइहौं ।।
तेरे पद कोमल कमल की आस पै,
राह में लोचन बिछैवे आइहौं ।
तेरे पद की धूरि लैवे के लिये,
धूरि में तन-मन मिलैवे आइहौं ।।
हौंस मन की अब तौ कर गुजरौं अवसि,
सीम दैवें, रीझि लैवे आइहौं ।
भोरी तुम उमगौ न उमगौ लाड़िली,
मैं तौ हठ प्राणन गँवैवे आइहौं ।।

(३७५)

कबहुँ हृदय हठ ठान न देखी,
कुल दीपक वृषभान न देखी ।
रहि हैं प्राण पोच तन कबलौं,
परखि कृपा की बान न देखी ।।
सब जग देखि कहा दृग पायौ,
जो तेरी मुसकान न देखी ।
सुनियत कृपा सुधानिधि प्यारी,
पै कबहूँ तजि प्रान न देखी ।।
ललकत रही जखम खैवे कौं,
दृग-सर भौंह-कमान न देखी ।
आरत टेरि पुकारि किशोरी,
उमड़त कृपा निधान न देखी ।।
तुम बिनु राखत प्राण आज लौं,
ऐसी निलज जग आन न देखी ।

उमड़त क्यों न कृपानिधि भोरी,
पै मोसी अघ ख़ान न देखी ।।

(३७६)

ऐसौ दिन आवै कि तेरे द्वार टेरे ही बनैं,
प्राण दीन्हे ही बनै, मुसकान हेरे ही बनैं ।
ऐसी गिर मग में रहौं, तुमकौं कृपानिधि लाड़िली,
हाथ गहते ही बनैं, दृग-दृष्टि फेरे ही बनैं ।।
रूठि चलि हैं प्राण छिन में, छाँड़ि के जब देह कौं,
तुमकौं आते ही बनैं, रहिबे कौं मेरे ही बनैं ।
या दिवाने मन कौं जब सौंपौंगी तेरे हाथ में,
लट सौं बाँधे ही बनैं, जग सौं निबेरे ही बनैं ।।
ऐसौ मन अकुलायगौ दरसन कौं मेरौ कौन दिन,
नीर ढारे ही बनैं, भरि नयन हेरे ही बनैं ।
भव गहन बन में भटकती दीन दुखिया मोहि कौं,
हाथ पकरे ही बनैं, हियरा उजेरे ही बनैं ।।
अबतौ साधन मोसौं कछुवै बनि न आवै लाड़िली,
अबतौ डूबे ही बनैं, या तुमकौं टेरे ही बनैं ।
भोरी मेरी ओर तुम भरि नयन हेरत ही नहीं,
विष पिये ही अब बनैं, हिय सर घुसेरे ही बनैं ।।

(३७७)

सुधि किशोरी मेरी करि हौ कौन दिन,
ताप या हियरा की हरिहौ कौन दिन ?
कब उमगि टेरौंगी मैं तुमकौं कुँवरि,
सुनि उमगि तुम दौर परिहौ कौन दिन ?
लोट रहिहौं कब विकल तो पंथ में,
तुम अचक हिय पाँव धरिहौ कौन दिन ?

मैं तौ सुधि तजिहौं विरह की ज्वाल जरि,
तुम सुधा दैवे ठहरि हौ कौन दिन ?
देखि सोवत सीस पत्थर पै दियै,
हँसि कृपानिधि गोद धरिहौ कौन दिन ?
हौं पतित अति नीच पै आसा इती,
आन अपनी आप ढरिहौ कौन दिन ?
गोत मेरे सुनिकै भोरी लाड़िली,
रीझि मेरी भुज पकरि हौ कौन दिन ?

(३७८)

माधुरी भरि नयन पीजै कौन दिन,
छबि तिहारी देखि जीजै कौन दिन ?
मो हियौ नित तीन तापन सौं तपत,
तेरे पद रस-रंग भीजै कौन दिन ?
टेर मेरी दुख भरी सुनिकै पुलकि,
लाड़िली मेरी पसीजै कौन दिन ?
हा किशोरी, तुम कौं देखे बिनु कहौ,
मेरौ तन पल-पल में छीजै कौन दिन ?
देखिकै भरि नयन तेरी माधुरी,
लाभ निज जीवन कौ लीजै कौन दिन ?
हौं कहावत रावरी दासी सदा,
बाँह गहि बलि अपनी कीजै कौन दिन ?
तेरी लट पर प्राण कोटिक वारिये,
इनकौं दीजै, याहि लीजै कौन दिन ?
वारि छवि पै, कै विरह दुख सौं तलफि,
भोरी तुम पर प्राण दीजै कौन दिन ?

ऐसी द्वार कब टेर लगवौं,
उमगौं और ताहि उमगावौं।
हौं तो दीन छीन तन प्यारी,
केहि विधि, बहुविध बात बनावौं।
श्री हरिवंश कृपा मति पाऊँ,
श्री गुरु-महिमा प्रगट दिखावौं॥
लै तब नाम सांस जब खेंचों,
निज तन शलभ समान जरावों।
बिल्व पात लौं सहज किशोरी,
टेरत तीनहु लोक डुलावों॥
खग मृग मूर्छि अवनि पर पटकों,
सरवर सोखि शैल दरकावों।
रवि ससि चकित पंथ बिसरावैं,
सरित सिंधु तरुवर उमगावों॥
देव अदेव सिद्ध नर किन्नर,
सबके सब व्यवहार भुलावों।
कै देखौ भरि नयन किशोरी,
कै तृण सम तिहुँ लोक जरावों॥
बाढ़त नयन नीर झर लगै,
प्रलय पयोधि उमगि उमड़ावों।
बिनु देखे छिन धीर धरों नहिं,
आप मिटों सब विश्व मिटावों॥
यह सब सम्भव सुनहु किशोरी,
तेरी कृपा कोर जो पावों।
भोरी बल तब हिये कृपानिधि,
हौं तौ बहुत कहत सकुचावों॥

रूठि प्राण तन छाँड़ि चलैंगे ।
तो पद लोभ लुभाने प्यारी, धरि-धरि हठ मचलैंगे ।
रूठे पथिक मनावन ऐहौ, कठिन अभाग्य टलैंगे ॥
आतुर पाँव पंथ में परि हैं, कुंडल कान हलैंगे ।
उमगत कृपा-अम्बुनिधि लोचन, सब विधि अशुभ दलैंगे ॥
ललित चाल नूपुर धुनि नीकी, सब ही सुकृत फलैंगे ।
भरि दृग छवि अवलोकत भोरी, भले भाग्य सँभलैंगे ॥

(३८१)

कुंवर किशोरी विनती मानौं ।
कब की टेरत द्वार रावरे, बार-बार हठ ठानौं ॥
छिन इक उमगि कृपा किन कीजिय, हियकी पीर पिछानौं ।
दिल दरदीली सहज कृपानिधि, सहज कृपा कौ बानौं ॥
तो छबि दरस आस अकुलावत, मो मन प्रेम दिवानौं ।
जो हिय हौंस सबहि तुम जानत, मुख केहि भाँति बखानौं ॥
कहि कछु कोमल चित्त किशोरी, दीन दुखी सन्मानौं ॥
जेहि विधि रहै रावरी छबि में, भोरी चित्त भुलानौं ॥

॥ दोहा ॥

त्रिभुवन तुम सम त्यागि कै, गुरु पद कीजिय वास ।
भोरी हित बलि हिय बढ़ै, जुगल मिलन की आस ॥

(३८२)

अँखियाँ देहु रूप रस मातीं ।
अरबरात मिलिवे कौ निसि दिन, छिन-छिन अति अकुलातीं ।
उड़ि-उड़ि रहत कंज मुख ऊपर, अलि लौं उमगि सुहातीं ॥
इक टक हेर रहत हठ अरि-अरि, गिनत द्यौस ना रातीं ।
चन्द चकोर सरस मिलि अटकत, रस की तृषा बुझातीं ॥
करत कलोल अगाध रूपनिधि, परी मीन की भाँतीं ।
ह्वै फकीर नित रहत रूप की, तन मत लौं विसरातीं ॥

एक नैम छबि पान निरन्तर, ज्यौं चातक जल स्वांतीं ।
हुलसत उमगत बरसत झूमत, छकित चकित रँग रातीं ।।
मृग मद सरस भाल पै, अँखियन काजर लौं जु समातीं ।
वह छवि छाँड़ि न हेरत काहू, नहिं विषयन ललचातीं ।।
अति रिझवार उदार सुन्दरी, करुणा कोमल गातीं ।
भोरी हित हँसि आस पुजावौ, छिनक हेरि मुसकातीं ।।

(३८३)

ऐसौ गिरिवौ कुंवर किशोरी, कब मोसौं बनि आवै ।
कोमल कनक कमल कर कबहूँ, उमगि कृपालु उठावै ।
ऐसी टेर कौन दिन करि हौं, बरबस धीर छुड़ावै ।।
कोमल चित्त कृपालु किशोरी, अति आतुर उठि धावै ।
तन-मन की न सँभार रहै कछु, भूषण वसन भुलावै ।।
धीरज धरत बनै नहिं क्यौं हू, पल - पल अति अकुलावै ।
भोरी हित मेरी कहि मुख सौं, बार ही बार बुलावै ।।

(३८४)

कबहूँ बदन कमल दिखरैहौ ।
कोमल चित कृपालु करुणानिधि, हँसि-हँसि हृदय समैहौ ।।
गूंथित अलक तिल माथे पै, सैंदुर माँग पुरैहौ ।
नाक बुलाक नयन अंजन जुत, चितवन बंक चलैहौ ।।
चिबुक चारु भृकुटी अति बाँकी, अधर मधुर मुसकैहौ ।
कोटि मयंक बदन की सोभा, हास सुधा बरसैहौ ।।
साँवल बिन्दु चिबुक पर राजत, सो छबि हृदय बसैहौ ।
भोरी बहुत कहा मुख कहिये, अँखियाँ तृषित सिरैहौ ।।

(३८५)

बिनु देखे कैसे धारौं धीर ।
त्रिभुवन शोभा धाम किशोरी, बिहरत जमुना तीर ।।
नव-नव गति लै ढरत रास में, फहरत अंचल चीर ।

झलकत गात निचोल नील में, जनु ससि जमुना नीर ।।
लटकत लर च्वै चली सुधा मनु, बाजत मृदु मंजीर ।
चंपक कनक कान्ति मिलि सोहत,कोमल कमल शरीर ।।
ऐसे अधिक सिकारी कीन्हे, भृकुटि धनुष दृग तीर ।
साँवल बिन्दु श्याम मन डारे, चिबुक कूप गम्भीर ।।
देखन कौं नयना अकुलावें, हियौ तपत भव पीर ।
कौन भाग तनु परसहि प्यारी, अंचल डुलत समीर ।।
सहज कृपालु किशोरी स्वामिनि, हरहु सकल भव भीर ।
भोरी दीन दुखारी राखौ, भुज गहि कुञ्ज कुटीर ।।

(३८६)

कैसे धीर हिये में आनौं ।
सो छवि अजहुँ देखियत नाहीं,जो लखि श्याम बिकानौं ।।
सो दृग कोर गड़ी ना उर में, सो वपु दृगन समानौं ।
सो मुसिकान माधुरी देखत, हियरा तौ न जुड़ानौं ।।
हा हरिवंश किशोर लाड़िले, जीवन वृथा सिरानौं ।
मोकौं इक अवलम्ब रावरौ, हौं कछु और न जानौं ।।
सहज कृपाल कृपा करि कीजै, प्रगट कृपा कौ बानौं ।
भोरी गोद पसारि रावरे, द्वारे बिनती ठानौं ।।

(३८७)

जो पै जिवावौ तो ऐसे जियावौ ।
करुणा धाम कृपाल कृपानिधि, सन्मुख मृदु मुसकावौ ।
मोहन प्रान जीवन धन सरबस, सो मो हृदय समावौ ।।
मुदित सँभारत कच मुख छूटे, कर गहि हृदय जुड़ावौ ।
तुम बिन और लखौं नहि काहू, दृग छवि में अटकावौ ।।
नित नव छबि नव रूप माधुरी,दृग पुट भरि-भरि प्यावौ ।
भोरी दीन दुखारी श्री हित, चरणन सुवस बसावौ ।।

कहौ कृपालु मोल मोहि लैहौ ।
खोटी दीन दुखारी पामर, कृपा कोर अपनैहौ ।।
तिहुँपुर सुयश विदित अलबेली, मेरी विनय चित लैहौ ।
सर्वोपरि उमगीली राधे, मोसी पोच निभैहौ ।।
साधन साध्य निदरि हौ सब ही, श्रुति की लीक मिटैहौ ।
भोरी श्री हित नातौ नीकौ, चरणन सुबस बसैहौ ।।

(३८९)

द्वार रावरे मरिबौ नीकौ, विरह ताप सौं जरिबौ नीकौ ।
जो तुम ठहरौ भरि दृग देखन, विकल पंथ में परिबौ नीकौ ।
जो तुम उमगि सुधारन आवौ, तौ यह भाग्य बिगरिबौ नीकौ ।।
दरस प्यास अकुलात किशोरी, ढूँढत विपिन बिचरिबौ नीकौ ।
जीवन व्यर्थ गयौ सब हा-हा, दृग दो दिन जल ढरिबौ नीकौ ।।
उठिबौ भलौ न भुज बिन पकरे, आरत द्वार पै ररबौ नीकौ ।
रहिबौ भलौ अटकि कै छबि में, सुधि बुधि सबहि बिसरबौ नीकौ ।।
कृपा सिंधु हित दीन दुखी को, उमगत बाँह पकरिबौ नीकौ ।
कुंजन जात नवल अलबेली, बूझन कुसल ठहरिबौ नीकौ ।।
छूटी लटन सँभारत मुख पै, अचक पाँव हिय धरिबौ नीकौ ।
सुनिवौ भलौ न आरत बानी, दसन-छटा तम हरिबौ नीकौ ।।
मेचक कच दृग काजर रेखैं, हिय समाइ उर अरिबौ नीकौ ।
किसलय सयन पधारन प्यारी, भोरी की सुधि करिबौ नीकौ ।।

(३९०)

तुम बिन जीवन भावत जाहि, जीवत कहौ कौन विधि ताहि ।
जीवन लाहु यही करुणानिधि, अटक रहैं लोचन छवि माहि ।।
वा रंग रँगे नयन हित झूमैं, विषयन में ना कबहूँ जाहि ।
इती मोहि अभिलाष किशोरी, बसहुँ सदा पद-पंकज छाहि ।।
विष सम लगै और सुख जेतौ, तुम बिन कछू सुहावै नाहि ।
मो पामर तन नयन जु फेरहु, शिव ब्रह्मादिक देखि सिहाहि ।।

कै भरि नयन दरस सुख पाऊँ, कै तन त्यागौं द्वार कराहि ।
इतनौ याचत भोरी किशोरी, पाहि-पाहि दरदीली पाहि ॥

(३६१)

चलत-चलत हँसि हेरिये इत छिन ।
कोमल चित्त कृपालु किशोरी, तुम बिन बीत गये बहुते दिन ।
विलपत ढूँढ़त दिवस कटैं कब, निशा बीति है गुण-गण गिन-गिन ॥
छिन-छिन अति अकुलैहै हियरा, देखौ कछु न रुचै कब आँखिन ।
हा-हा अब न जियावौ प्यारी, भोरी दृग भरि दरस मिले बिन ॥

(३६२)

चलत-चलत मो तन हँसि हेरौ ।
आलस बलित नयन अरुणारे, कृपा कोर छिन इत हू फेरौ ॥
आरत टेरत आयु सिरानी, तुम बिन और न कोऊ मेरौ ।
पूछौ कुशल बिहँसि करुणानिधि, दारुण त्रास हरहु हिय केरौ ॥
मुख मयंक छिन प्रगट दिखावौ, जेहि बिन तिहुँपुर लगत अँधेरौ ।
भोरी चरण शरण चलि आई, अब सब भाँति भरोसौ तेरौ ॥

(३६३)

चलत-चलत हँसि हेरिय प्यारी ।
कृपासिंधु दरदीली स्वामिनि, कोमल चित सुकुमारी ॥
उमगि बेगि किन द्रवहु किशोरी, टेरत दीन दुखारी ।
खोटी रंक अभागी पामर, सब विधि पोच भिखारी ॥
तुम सौं आस तदपि करुणानिधि, ठाड़ो गोद पसारी ।
नीच पतित भरि नयन निहारौ, समरथ राखन हारी ॥
तुम बिन ठौर कहूँ नहिं सूझत, नयन लगत अँधियारी ।
भोरी त्रिभुवन सूनौ तुम बिनु, कछुव सुनावत नारी ॥

(३६४)

अधमन हित चिरजीवहु प्यारी ।
तुम नित राज करौ दरदीली, औरन सौं कहु काज कहारी ॥

सेवा गुण लखि रीझत सब ही, पोच देत द्वारे सौं टारी ।
पामर पतित निबाहन कारन, त्रिभुवन कीरति विदित तिहारी ।।
कोऊ न्हौ जाहु करुणानिधि, तुम रस बिलसहु स्वबस सदारी ।
भोरी हित द्वारे पै ठाड़ी, देत असीस जात बलिहारी ।।

(३६५)

पतितन हित नित कीजिय राज ।
अधम उधारण सहज कृपानिधि, सकल लोक सिरताज ।
स्वारथ के सब मीत जगत में, अन्त न आवत काज ।।
तुम बिन कौन राखिबे बारौ, पामर जन की लाज ।
नित की बान सहज करुणा की, कहाँ बिसारी आज ।।
तुम बिन कौन काम के प्यारी, जीवन सम्पति साज ।
भोरी ऐसेहि जुग-जुग राजहु, नवल निकुंज समाज ।।

(३६६)

कुंज जात छिन इतहुँ चितैये ।
कोमल चित कृपालु करुणानिधि, हिय की ताप बुझैये ।
हौं कब की ललचात किशोरी, हँसि-हँसि आस पुजैये ।।
नयन-कोर रंग बोर कृपा करि, चरणन सुबस बसैये ।
भोरी कुसुम-सेज दोऊ राजहु, कोटिक काम लजैये ।।

(३६७)

कहौ कृपालु कहा मन ठानी ।
निज हिय की बहु बेर कही मैं, हिय अभिलाष कहानी ।
निज हिय की अब कहौ कृपा करि, कोमल चित सुखदानी ।।
मैं तौ द्वार टेरि हौं तुम्हरे, हौं तौ हाथ बिकानी ।
तुम हू कभू कुशल बूझौगी, अपनी जान दिवानी ।।
नित की बान सहज करुणा की, सुनहु सुबस महारानी ।
भोरी दीन दुखारी याचक, टेरि-टेरि घबरानी ।।

(३९८)

आरत टेर सुनहु दुखिया की, टेरत द्वार भिखारि सदा की ।
जप-तप-संयम-नियम अपारी, वेद-शास्त्र सब कहत पुकारी ।
मोकौं भली इक आस तिहारी, तुमकौं भली यह बान कृपाकी ।।
मोकौं भलौ थकि भ्रम महि परिबौ, तुमकौं भलौ झुकि बाँह पकरिवौ ।
मोकौं भलौ तोहि टेरत मरिबौ, तुमकौं बरसिबौ वृष्टि सुधाकी ।।
तुमहि निबाह भलौ पोचन कौ, हरिबौ ताप दुखारी जन कौ ।
मोहि भलौ इतनौ अलबेली, सब जग कहत दासि राधा की ।।
तुमकौं भलौ अभाग मिटैबौ, मोकौं भलौ अभागिन ह्वैबौ ।
भोरी पतित, पतित पावन तुम, लाड़ लड़ैती भानु बबा की ।।

(३९९)

अँखियाँ बार-बार हठ ठानत ।
बिनु विधु-बदन बिलोके प्यारी, एकहु ज्ञान न मानत ।।
स्वर्ग-मुक्ति सुर दुर्लभ पदवी, तृन लौं चित्त न आनत ।
साधन तुच्छ अल्प फल तिन के, सुगति-कुगति नहिं जानत ।।
सहज कृपालु बान बिन कोऊ, उर अवलम्ब न मानत ।
भोरी हित टेरत अति आरत, एक तुमहिं पहिचानत ।।

(४००)

इन नैनन कौ मोहि भरोसौ ।
इन समान को पतित उधारन, पतित पोच को मोसौ ।।
उमड़त कृपा नीर-निधि लोचन, परि है सुरंग छटारी ।
तन मन भीजि छिनक में जैहैं, सुनहु कृपानिधि प्यारी ।।
इनकी बान सहज दरदीली, सोई आसरौ मेरे ।
कठिन अभाग पलक में मिटि है, एक नजर भर हेरे ।।
इनकी आस जन्म में हारचौ, अब जो होइ सु होई ।
भोरी सहज कृपालु लाड़िली, तुम बिन और न कोई ।।

छिन कृपालु मो तन हँसि हेरहौ ।
हौं नित टेरत द्वार रावरे, तुम तौ कभू मोहि टेरौ ।।
तुम बिनु वृथा जियत सुख संपति, लागत त्रास घनेरौ ।
असन-बसन-विष तन मन बोझौ, तिहुँपुर सबहि अँधेरौ ।।
सब नातौ तुम ही सौं प्यारी, तुम बिन और न मेरौ ।
भोरी हित अलबेली कबहूँ, दीजै चरण बसेरौ ।।

(४०२)

चन्द्र बदन मुसकान विलोकौं, त्रिभुवन सुषमा-खान विलोकौं ।
उमगत नाहिं आजहू प्यारी, पै कबहूँ दै प्रान विलोकौं ।।
कौन भाग्य ऐसौ दिन आवै, उमगत कृपा निधान विलोकौं ।
हौं किम प्रीति-रीति सौं रीती, परखि कृपा की बान विलोकौं ।।
नैनन-नयन फँसे दोऊ प्यारे, करत माधुरी-पान विलोकौं ।
श्रीहरिवंश कृपालु कृपा सौं, मोहन प्रान की प्रान विलोकौं ।।
आलस भरी प्रात चलि आवौ, नींद विवस अँगड़ान विलोकौं ।
पतित निवाह बान हित भोरी, छाँड़ि निगम कुलकान विलोकौं ।।

(४०३)

अँखियाँ जो पै चकोरी होतीं ।
तौ उड़ि चन्द्र बदन लगि रहतीं, बैठि-बैठि क्यों रोतीं ।।
इक टक सुधा-माधुरी छाकी, उमगि-उमगि पग धोतीं ।
भोरी हित नित तरसत द्वारे, वृथा जन्म क्यों खोतीं ।।

(४०४)

खंजन खग जो होते नैन ।
तौ उड़ि श्री बन किन चलि आते, लाहु जनम कौ लैन ।।
अलकन फन्द फँसे ही रहते, मत्त मूँदि दिन-रैन ।
करि हठ हौंस हार ही मानी, करतब कछुव बनैन ।।
सब विधि पोच पतित पामर हौं, सुनहु श्याम सुख दैन ।
दृग ललचात माधुरी प्यासे, हृदय न आवत चैन ।।

कबहू उमगि द्रवौ अलबेली, प्यारी करुणा ऐन ।
भोरी हित अकुलात द्वार पै, टेरत आरत बैन ॥

(४०५)

लट सँभारत लाड़िली आवौ कभू,
मेरौ मन हँसि बाँधि लै जावौ कभू ।
दिन बहुत तुम बिनु जियत बीते प्रिया,
यह निलजता मेटि मुसिकावौ कभू ॥
नयन प्यासे देखिबे तरसत बिकल,
माधुरी पीयूष बरसावौ कभू ।
मेरौ मन मचलत तुम्हें दृग देखिबे,
ये दिवानौ अपनौ समझावौ कभू ॥
टेर द्वारे पै करत बीत्यौ जनम,
अब तो करुणा सिन्धु उठि आवौ कभू ।
तेरौ तन-मन भेंट मृदु मुसकान की,
आइ कै यह मोल निबटावौ कभू ॥
जो पै हिय की ताप झूठहि हौं कहत,
पग हृदय धरि मोहि सरमावौ कभू ।
हौं बिकी हरिवंश हित के नाम पै,
भोरी हित गहि बाँह अपनावौ कभू ॥

(४०६)

सब नातौ मैं तुम सौं मानत ।
इतनी कबहुँ कहौ हँसि तुमहू,हौंकि नहीं मोहि जानत ॥
कबहू मैं गुण बरनत तुम्हरे, कबहू बिनती ठानत ।
कहौ कभू सुधि तुमहुँ करत हौ, निज चेरी करि मानत ॥
तुम बिन और न कोऊ मेरे, सौं नित टेरि बखानत ।
कहौ दीन दरदीली तुमहू, दीन दुखी पहिचानत ॥

तुम्हरी कृपा एक बल मेरै, भाग-अभाग न जानत ।
कहि द्वय बचन कभू हित भोरी, क्यों न प्रिया सन्मान ।।

(४०७)

मो मन कहत कृपालु किशोरी, कभू कृपा करि आवौगी ।
आरत टेर दीन दुखिया की, सुनत उमँगि उठि धावौगी ।।
कुंतल कुटिल सँभारत धावत, हँसि-हँसि हृदय लगावौगी ।
फहरत अंचल चंचल कुंडल, पल-पल अति अकुलावौगी ।।
ललित चाल नव वयस मनोहर, नूपुर मधुर बजावौगी ।
बरसत रंग रँगीली अँखियाँ, रँग में मोहि डुबावौगी ।।
अति बलहीन छीन दुखिया कौं, भुज गहि आइ उठावौगी ।
भोरी हित यह रीति सदा की, अब फिर प्रगट दिखावौगी ।।

(४०८)

काके बल अभिमान करौंगी ।
बिनु भुज गहे कृपालु लाड़िले, किस विधि धीर धरौंगी ।
हिय में नव उमंग छिन ही छिन, करि-करि हौंस मरौंगी ।।
कौन भाग सन्मुख दृग देखत, पंकज पाँव परौंगी ।
केहि बल मुक्ति-भुक्ति सुर दुर्लभ, पदवी हिय न धरौंगी ।।
अति निसंक सब ही सौं न्यारी, निगम नीति निदरौंगी ।
भोरी हित-प्रभु पद मधुमाती, कब कुंजनि बिचरौंगी ।।

(४०९)

मृदु मुसकान देखिवौ भावै ।
अरबरात दृग चातक प्यासे, पल छिन धीर न आवै ।।
मृदुल मनोहर मूरत सुन्दर, देखत मन ललचावै ।
सब जग सूनौ लगत कृपानिधि, तुम बिन कछु न सुहावै ।।
वृथा भानु ऊगत नभ चन्दा, वायु त्रिविध बहि आवै ।
त्रिभुवन निबिड़ अँधेरौ तुम बिन, ताप अधिक अधिकावै ।।
सोचत समझत बनत न कछुवै, तन-मन अति अकुलावै ।
भोरी श्री हित द्वार याचको, ललक-ललक रहि जावै ।।

ठाड़ी द्वार भिखारिन कब की ।
लै-लै नाम पुकारत आरत, अँखियाँ प्यासी छबि की ।
नहीं दृग ढरत न फरकत बैयाँ, रीति नई यह अब की ।।
चलत उतावल पंथ, परत नहीं श्रुति, धुनि नूपुर रब की ।
सब कोऊ कहत पोच प्रति पालक, राखन हारी सब की ।।
मैं केहि भाँति कहौं करुणानिधि, उलटि कथा अनुभव की ।
भोरी हित बलि विनय विचारौ, विरद सँभारौ अब की ।।

(४११)

मैं भोरी मेरी भोरी किशोरी ।
मैं भोरी सी बिनती लाई, तुम रीझन में भोरी ।
छोटे मुख बड़ विनय लाड़िली, विहँसि बेगि पुजबौरी ।।
भोरी स्वामिनि भोरी चेरी, नातौ नेह भलौरी ।
भोरी हित हरिवंश कृपा बल, सत सम्बन्ध जुरौरी ।।

(४१२)

कमल दल नैनन की आस ।
कबहूँ उमगि बूझि हौ मेरे, मन की हौंस-हुलास ।।
उमड़त कृपा सिंधु परिपूरण, सब सुषमा की रास ।
चितवन चपल हिलोरत चहुँदिसि, तापर भृकुटि विलास ।।
दरदीले रिझवार दीन हित, अति उदारता वास ।
सील सँकोच सनेह सुभगता, लाज रूप रस हास ।।
मधु मद भरे रँगीले प्यारे, कोमल कमल विकास ।
भोरे चतुर लडैंते पैने, करत दीन भय नास ।।
जाकी पद रज शिव-अज याचत, सो जिनको निज दास ।
भोरी हित देखनकौं ललचत, छिन-छिन छवि की प्यास ।।

(४१३)

इतनौ है पुरुषारथ मेरौ ।
जप तप योग याग नहिं जानौं, साधन नियम बखेरौं ।।

इतनी बात बनि परै मोसौं, कबहुँ अबेर सबेरी ।
भोरी ढार-ढार दृग आँसू, नाम पुकारूँ तेरी ।।

(४१४)

यों सुधि लीजौ नवल किशोरी ।
वृन्दावन की ललित लतन में, गिनती कीजौ मोरी ।।
गोरी घटा साँवरी हिलमिल, उमड़त प्रेम हिलोरी ।
कबहुँ-कबहुँ बलि सींचत रहियौं, लाड़ भरी दृग कोरी ।।
कबहूँ दिये ललित गलबहियाँ, छाँह बिरमियौ थोरी ।
कबहूँ झूला डारि झूलियो, रसिक रँगीली जोरी ।।
फूलि-फूलि कै चटकत कलियन, खोलौं आँख करोरी ।
निसि वासर देखत न अघाऊँ, इतनौ जाँचत भोरी ।।

शरणागति

लग्यौ नेह सब भाँति निभैहौ ।
ये मेरे मन सुदृढ़ भरोसौ, बाँह गहे की लाज लजैहौ ।।
लोक वेद परलोक जाति कुल, पाप पुण्य दुख द्वन्द छुड़ैहौ ।
भोरी आपनि जान कृपा करि,श्री पद-पंकज सुबस बसैहौ ।।

(४१६)

तो बिन और न कोऊ मेरे ।
तन मन चित्त प्राण करुणामय, सब विषयन के चेरे ।
यह बैरी निशि वासर मोकौं, देत जु त्रास घनेरे ।।
तिनकौ कौन आसरौ मोकौं, मैं गरजत बल तेरे ।
हठ हिय आइ बसौ अलबेली, भोरी भाग्य जगेरे ।।

(४१७)

मैं तौ रावरे हाथ बिकानो ।
भव जलनिधि सौं अब न डरौंगी, सत्य कहौं हठ ठानी ।
रहौ कि जाहु सोच नहिं मेरे, लोक लाज कुल कानी ।।

संजम व्रत श्रुति साधन जेते, तिन सब कौं दियौ पानी ।
भोरी सब विधि अधम उधारण, अलबेली ठकुरानी ।।

(४१८)

तेरी ह्वै अब कौन सौं डरि हौं ।
नर्कन की न कछू मोहि चिन्ता, रुचि ऐहै सोई करिहौं ।
डर न कछू इन्द्रिन कौ मन कौ, अब स्वच्छन्द विचरिहौं ।।
सोच न पोच कहाये जग में, यम की भीति न धरिहौं ।
जानत हौं तुम आइ कबहुँ हठ, भोरी बाँह पकरिहौं ।।

(४१९)

भाग्य हीन खोटी को लैहै ।
को नित लाड़ लड़ाय राखि है, नित मुँह माँगौ दैहै ।।
को सब दोष मेटिहै पल में, हृदय प्रेम सरसैहै ।
भुज दै अंस कुंज को चलि है, करुणा कोर चितैहै ।।
को भव-ताप सहज हँसि हरिहै, रोवत आइ हँसैहै ।
को दयाल महि परत विकल तनु, भुज गहि आइ उठैहै ।।
को भव-भँवर बहत करुणानिधि, कर गहि पार लगैहै ।
सुर मुनि दुर्लभ सहज सुगति दै, को नित सुबस वसैहै ।।
सुनहु कृपालु क़िशोरी ऐसी, आसा कौन पुजैहै ।
तुम बिन कौन कृपानिधि भोरी, बाँह पकरि अपनैहै ।।

(४२०)

भाग अभाग न जानत अपने ।
तन मन अकुलत जब सुधि आवत, पातक पुंज घने ।।
सहज कृपालु बान की आसा, धीरज होत मनै ।
मेरी बिगरी जद्यपि बिगरत, तेरी बनाई बनै ।।
यह वर देहु कृपालु किशोरी, मति रस-रीति सनै ।
तुम बिन और बान यह काकी, जो अवगुन न गनै ।।

कोटिक दोष मेटि अपनावें, देखि अधीन जनै ।
भोरी के हिय बसहु निरन्तर, जगत-नींद-सपने ।।

(४२१)

श्री राधा इक आस हमारी ।
सबल सबै बल के बल गाजत, अबलनि कौ बल तैं सुकुमारी ।।
समरथ तैर चले भव सागर, पोचन कौ तोहि सोच सदारी ।
पर के उड़ चले व्याध विलोकत, बेपर की तू राखिबे हारी ।।
भाग्यवान निज भाग्य सराहत, भाग्य हीन कौं आस तिहारी ।
पुण्य करत सो शुभ फल पावत, पतितन कौं तू पावन प्यारी ।।
सब विधि सौ अवलम्ब न जाकै, तू नित ताहि निबाहन हारी ।
भोरी भाग्य हीन अति खोटी, सबल स्वामिनी सिर पर प्यारी ।।

(४२२)

जेहि विधि तोहि अति प्यारी लागौं ।
तैसी मोहि कीजिये प्यारी, बार-बार यह माँगौं ।।
और नहीं कछु काज काहु सौं, तुम ही सौं अनुरागौं ।
भोरी तेरी रीझ लहन कौं, त्रिभुवन तृन सम त्यागौं ।।

(४२३)

जेहि विधि तोहि अति लागौं प्यारी ।
सो गुण तैसी रहन दीजिये, करुणा कोर निहारी ।।
हौं तौ तेरे हाथ बिकानी, तू इक राखन हारी ।
तेरी सहज रीझ नित चाहौं, और सौं काज कहारी ।।
कोटि प्राण तेरे पग पर वारौं, छिन हू देखि छटारी ।
भोरी दृग भरि दरसन दीजे, माँगौं गोद पसारी ।।

(४२४)

कोटि-कोटि ब्रह्माण्ड न लैहौं ।
बिन पद कंज छटा दृग देखे, बार-बार पछितैहौं ।।
धन गृह कुटुम्ब राज सुख सम्पति, कहा संग लजैहौं ।

योग सिद्धि नवनिधि जग गाई, सपनेहु चित्त न लैहौं ॥
मुक्ति स्वर्ग ब्रह्मादिक पदवी, लै-लै कहौ कहा पैहौं ।
चरन सरोज नैन बिनु देखे, नाहक जनम गँवैहौं ॥
यह तजि और कछू नहिं चाहौं, आरत टेरि सुनैहौं ।
भोरी छिन इक भरि दृग देखे, प्राण निछावर दैहौं ॥

(४२५)

सब विधि शरण गही अब तोरी ।
कब की टेरत द्वार रावरे, क्यों सहि जात किशोरी ?
उठिहौ उमगि कभू करुणानिधि, देखि दीनता मोरी ।
अबगुण कोटि समुझि नहिं रुकिहौ,उमड़त कृपा अथोरी ॥
हौं जानत तोहि मेरी स्वामिनि, करुणा मृदुल हियौरी ।
जो पै प्रीति हिये नहिं तौहू, आस न छाँड़त भोरी ॥

(४२६)

हौं तौ और कछू नहिं चाहौं ।
ऐसौ मन मेरौ करौ कृपा निधि, तेरे द्वार पै नित्य कराहौं ॥
सम्पति सुख कछु और न चहिये, याही सुख निज भाग सराहौं ।
भोरी सहज किशोरी राधे, कुगति-सुगति कछू सोचत नाहौं ॥

(४२७)

काहू भाँति रीझिये प्यारी ।
जो चाहौ सौ करहु कृपानिधि, हौं तौ शरण तिहारी ।
जो दुख चाहौ सबहि सहावौ, हौं सहिहौं सुकुँवारी ॥
नर्क-स्वर्ग गति-कुगति न सोचौं, तुम हिय बसौ सदारी ।
कीर्ति हानि धन हानि कृपानिधि,प्राण हानि दुख भारी ॥
सब ही देहु कृपाल किशोरी, जो रुचि होइ तुम्हारी ।
कोटि प्राण तेरे पर वारौं, कबहुँ दिखाउ छटारी ॥

(४२८)

निठुर कहौं न कठोर कहौं री, कोमल चित चितचोर कहौं री ।
जो भटकावौ बन-बन व्याकुल, दीन्हि बंध सौं छोर कहौं री ॥

जो दृग बाण करौ हिय घायल, लखी कृपा की कोर कहौं री ।
जो सब सौं सम्बन्ध छुड़ावौ, गही बाँह बरजोर कहौं री ।।
जो सब भाँति मिलाऔ धूरि में, करी भाँवती मोर कहौं री ।
दृग-जल-धार नहाइ उठौं जो, दीन्ही मोहि रँग बोर कहौं री ।।
तलफत विरह-ताप तनु त्यागूं, दीन्ही कीर्ति अथोर कहौं री ।
भोरी टेर सुनौं न दयानिधि, तौ निज भाग की खोट कहौं री ।।

(४२९)

या द्वारे सौं नातौ हमारौ ।
खोटे पतित निबाहन कारन, प्रगट रावरौ द्वारौ ।
कितहू ठौर न ठीक दयानिधि, इक अवलम्ब तिहारौ ।।
साधन और कछू नहिं सूझत, दृग लागत अंधियारौ ।
भोरी की अलबेली स्वामिनि, चरण शरण प्रतिपारौ ।।

(४३०)

मैं हूँ कभू अभिमान करौंगी ।
सिर पर सबल स्वामिनी राधा, तिहि बल भय बिसरौंगी ।
तृन सम मुक्ति-स्वर्ग सुख गिनहौं, श्रुति साधन निदरौंगी ।।
पातक पुंज अपार भूलि हौं, सुगति-कुगति न डरौंगी ।
मत्त मुदित रस छकी खुमारी, राधा नाम ररौंगी ।।
श्रीबन नवल निकुञ्ज-निकुञ्जनि, गरजि-गरजि बिचरौंगी ।
भोरी हित स्वामिनि सौं मचलत, हठ करि द्वार अरौंगी ।।

(४३१)

गरजत मैं हूँ फिरौंगी प्यारी ।
तुम्हरे बल न गिनौंगी काहू, फिरिहौं संक बिसारी ।।
निगम नीति कुलकानि मेटि तजि, लोक लीक सौं न्यारी ।
श्रीबन मत्त मुदित बिचरौंगी, प्रिया रूप मतवारी ।।
सिर पर हँसत स्वामिनी राधा, समरथ राखन हारी ।
भोरी पोच पतित अति पामर, तदपि हौंस हिय भारी ।।

श्रीराधा-नाम

अहो लड़ैती इतनी मोपै, कृपा करौ बलि जाऊँ ।
जागत सोवत रटौं निरन्तर राधा-राधा नाऊँ ॥
हिय जिय रसना स्वास-स्वास प्रति रोम-रोम रट लाऊँ ।
जौलौं नाम सांस तब ही लौं, एक मेक ह्वै जाऊँ ॥
नाम रूप मय, रूप नाम मय, विवि मग्न ह्वै दुलराऊँ ।
पियत छको मतवारी प्यासी, प्यास पियत न अघाऊँ ॥
जान परै नहि सांझ सबेरौ, ऐसे जनम गमाऊँ ।
श्री हित बेगि ढरौ भोरी पै, हुलसि-हुलसि जस गाऊँ ॥

कुंडलियाँ

भाग अभाग लिख्यौ जु विधि, ताकौ मोहि न ख्याल ।
अपने कर लिख लेत हौं, नाम तिहारौ भाल ॥
नाम तिहारौ भाल, भाग निजु याकौं मानौं ।
याही की नित आस, आन सपने नहिं जानौं ॥
विषयन सौं न बिराग चित, नहिं चरणन अनुराग ।
तदपि भाल राधा प्रगट, हित भोरी कौ भाग ॥

(४३४)

मेरौ जिय घबरात रहत नित, ऐसै तौ मन धीर न आवै ।
नाम-स्वास दोउ विलग चलत हैं, इनकौ भेद न मोकौं भावै ॥
स्वासहि नाम, नाम ही स्वासा, नाम-स्वास कौ भेद मिटावै ।
रोम-रोम रग-रग जब बोलै, तब कछु स्वाद नाम कौ पावै ॥
इन्द्रिय मन सब होइ नाम जब, सकल विषय फुरना जु नसावै ।
बाहिर कछु न कछू तब भीतर, जिय और नाम एक ह्वै जावै ॥

तब निज रूप नाम कौ प्रगटै, तन में श्रीबन सहज दिखावै ।
ह्वै मृदु भूमि चरण तल चूमै, जमुना ह्वै जु ललित लहरावै ।।
जल-थल विविध कुसुम ह्वै फूलै, सीतल पवन सुरभि लै धावै ।
अंबर ह्वै अँग अंगनि लिपटै, विविध अनिल हठि ताहि उड़ावै ।।
प्रफुलित लता लपटि भई कुंजो, पुहुप सेज ह्वै तहँ जु सुहावै ।
तापै हित उमगीली जोरी, तन मन उमगि-उमगि उमगावै ।।
तन हित, मन हित, प्रान तहाँ हित, हित में ह्वै हित रूप समावै ।
हित कौ कोक कला सब हित की, हित पानिप, हित रंग चुचावै ।।
हित अनखान भौंह कौ चढिवौ, हित मिठास मृदु मुसिकन भावै ।
हित नीवी-बंध खोलत, हित भुज गौर-श्याम हित कलह मचावै ।।
हित कौ खेत, जुरे भट हित के, हित कौ खेल अधिक अधिकावै ।
हित उमगीली हित उमगीलौ, हित उमगै हित ही उमगावै ।।
हित जु विवस, हित चेतत छिन-छिन, हित पानी हित प्यास कहावै ।
बिच-बिच मृदु-मृदु बोलनि की, हित पसेव हित आनन छावै ।।
हित पौंछै हित बिजन डुलावै, हित समीर ह्वै सुख जु बढ़ावै ।
हित नख-छत ह्वै लसत कुचन पै, हित रद-छद अधरनि दरसावै ।।
हित चुंवन हित ही परिरंभन, भुजनि कसनि हित, हित लपटावै ।
हित जु झरत कुसुमावलि टूटी, हित लट छुटी कपोलन दावै ।।
हित कौ रूप उमँग कौ सागर, क्षुभित अनन्त लहर अकुलावै ।
तामें बूँद मिली हित भोरी, सो कहि कौन भाँति ठहरावै ।।

सोहनी-महिमा

।। दोहा ।।

रे मन नवल निकुंज की, सुमिर सोहनी प्रात ।
लपटी प्यारी चरण रज, लसत सहचरी हाथ ।।१।।
अहो सोहनी सोहनी, यह मति मौकों देहु ।
अति अधीनता दीनता, पद-रज सौं नित नेहु ।।२।।

तो समान कब सहचरी, मोहू कौं अपनाय ।
नव निकुँज रति माधुरी, प्रात सुनावैं गाय ।।३।।
विरमि-विरमि हा सोहनी, देखि प्रिया पद अंक ।
प्रियतम मन अटक्यौ जहाँ, मेटत तिन्हैं निसंक ।।४।।
श्री प्यारी पद रैंनु में, उमगत लोटत लाल ।
कोमल कर चुटकीनु लै, तिलक बनावत भाल ।।५।।
कण-कण में जा रेणु के, बसत लाल के प्रान ।
हाय सोहनी ताहि यों, साधारण मत मान ।।६।।
अहो सोहनी सोहिनी, यह न सोहनी रीति ।
मो प्राणन की प्राण रज, ता सँग करत अनीति ।।७।।
कण - कण पै वारौं यहाँ, कोटिन तन-मन-प्रान ।
सो रज दूर न डार तू, नेकु निहारौ मान ।।८।।
अवसि झारि जो डारिबौ, यह रज प्राण अधार ।
तौ मो तन-मन-प्राण में, हिय में, जिय में डार ।।९।।
कोटि विश्ब ऐश्वर्य सुख, नहिं जु एक कण तूल ।
सो रज तोकौं खेल है, मेरी जीवन मूल ।।१०।।
हरि-हर विधि ललकत रहत, लहत नहीं कण एक ।
ताहि झारि यौं फैंकिबौ, तुम्हें कौन यह टेक ।।११।।
इतने हू पर सोहनी, लागौ प्यारी मोहि ।
अहो कौन यह मोहिनी, लेत जु प्राणन मोहि ।।१२।।
मो प्राणन की प्राण रज, तासन करत अनीति ।
तदपि सोहनी तोहि में, बाढ़त मेरी प्रीति ।।१३।।
रसिक सहचरी करन कौ, पायौ तुमने प्यार ।
तेहि मद माती चलत हौ, नीति-अनीति बिसार ।।१४।।
याही सों प्यारी लगौ, जदपि करत विपरीत ।
छकन छकी रति केलि की, सुन सहचरि मुख गीत ।।१५।।
अहो सोहनी मोहिनी, सर्वोपरि यह प्रीति ।
यह रस मादक है जहाँ, तहाँ न नीति-अनीति ।।१६।।

यह रज, यह गति, यह रहनि, यह सुहाग यह भाग ।
देहु सोहनी करि कृपा, यह अपनौ अनुराग ।।१७।।
तुम मेरे हाथन परौ, मो मन तुम तन माँहि ।
एकमेक ह्वै सोहनी, चरण-रेणु बिलसाँहि ।।१८।।
मैं रज मिलि रज होउँगी, तुम जु बुहारौ आय ।
तुम मोहि ठेलत चलोगी, मैं तुम सौं लपटाय ।।१९।।
प्यारी प्रीतम चरण-रज, दुर्लभ देहु मिलाय ।
धन्य-धन्य वे रसिक जन, मन तन कुञ्जन आय ।।२०।।
अहो सोहनी मम हृदय, रहै तोहि लपटाय ।
तुम्हैं हाथ लै सोहनी, भवन बुहारत गाय ।।२१।।
या तनहू में प्रीति सों, तुम ही कों दुलरात ।
श्री बन वीथिनु रमत हैं, लिये सोहनी हाथ ।।२२।।
तिन चरणन में सोहनी, देहु प्रीति अति मोहि ।
हित भोरी यह आस धरि, दिन-दिन सुमिरों तोहि ।।२३।।

हितोत्सव की बधाईयाँ

आवहु ललिता आजु बधाई जु गाईयै,
मेरे प्रान के प्रान लड़ेती लड़ाईयै ।
लावहु साजि समाज सखी सब सोहनी,
बलि-बलि प्रीतम लेहु मुरलिया मोहिनी ।।
यह मो जीवन मूरि सखी हित-रूपिणी,
सकल सार कौ सार अधार स्वरूपिणी ।
यह मो अँखियन ज्योति हृदय संपुट मनी,
सुख सम्पति सर्वस्व हमारे धन-धनी ।।
यह ह्वै वंशी लेत अधर पिय स्वाद कौं,
धुनि ह्वै मम श्रुति पैठि करत उन्माद कौं ।

पोषत वृन्दा रूप लता तरु-बेलि कौं,
हवै हित सजनी हमें सिखावत केलि कौं ।
कोटि प्राण यह एक अनेकन वपु धरै,
परम प्रेम सौं तोषि-पोषि हियरा हरै ।
याके गुण जु अपार, कोटि मुख क्यों कहौं,
मींन जलधि की थाह दीन कैसे लहौं ।
याके बल हम जियें, जिवाबनहार ये,
याही कौ सब खेल खिलावनहार ये ।
याकी सकल विभूति अनूपम धाम ये,
याकी सब रस-केलि परम विश्राम ये ।
याके बल सब रास विलासन हम करैं,
याकी भुज अवलंबि सुरत-सागर तरैं ।
यही डुबावै प्रेम, उछारै केलि में,
आप एक रस रहै उभय रस झेल में ।
यह जल हम हैं मीन सदा ज्याये जियैं,
यही प्यास यह नीर पिवावै ज्यौं पियैं ।
याही कौ ब्रत एक हमारैं जानिये,
दोउन हिय की सार परम निधि मानिये ।
हम याके आधीन सदा रुख लै रहैं,
जाकौं यह दै देइ सु ताके हवै रहैं ।
जहँ याकौ सम्बन्ध रंच हू देखिये,
तहँ पहिले आधीन जुगल हम लेखिये ।
याके तन-मन-प्राण, प्राण की प्राण हौं,
यह मो तन-मन-प्राण सखी साँचो कहौं ।
मेरे हित अवतार अवनि इनने लियौ,
मोसों लै निज-मन्त्र प्रकाशित जग कियौ ।
धन्य-धन्य बलि जाउँ द्यौस यह चन्द कौ,
उदय आज हरिवंश रसिक रस कन्द कौ ।

धन्य-धन्य यह मास गहो हित टेक ही,
राधा माधव नाम युगल वपु एक ही ।
बलि-बलि ग्रह-तिथि-पक्ष-ऋक्ष औ पलघरी,
मेरे मन की साध सबै पूरन करी ।
छिन-छिन बाढ़ै उमंग हृदय नहिं माय री,
रोम-रोम रस-सिंधु अधिक अकुलाय री ।
तुंग तरंगन परचौ न चित ठहराय री,
प्रेम-प्रवाह अथाह बह्यौ सो जाइ री ।
कहत-कहत तनु कंप पुलक गद्-गद् भई,
स्नेह-सलिल दृग दौरि सखी भुज भरि लई ।
काहे होत अधीर कहौ बलि हीय की,
तुम जु प्रिया अवलम्ब हमारे जीय की ।
बढ़तौ जान्यौ सोच भुजा ललिता गही,
कहा अनमनी होत आजु, हँसि कै कही ।
श्री हरिवंश सु जन्म द्यौस उत्साह सौं,
अपने हिय की बात कहौ जु उमाह सौं ।
सत्य-सत्य सुन सखी बात तोसौं कहौं,
लेय जु याकौ नाम ऋणी ताकी रहौं ।
याकी तन की वायु परसि जाकौं करै,
बलि-बलि ताकी जाउँ जु पद-रज सिर धरै ।
जिनकौ यासौं हेत मोल मोहि तिन लई,
जाकौं चाहैं दैय जु तिन कर बिक गई ।
ता मुख की बलि जाउँ जु नाम सुनावही,
सर्वस ता पर दैउँ जु हित गुण गावही ।
याके भजतन भजै, भजै पुनि ताहि जो,
सर्वोपरि सब भाँति हमारै आहि सो ।

ज्यौं-ज्यौं सरिता नीर जु नीचौ जावही,
त्यौं-त्यौं गहरौ होय पार को पावही ।
तैसे यह हित-हेत सदा बढ़तौ रहै,
बलि-बलि ताकी जाउँ सरण हित की गहै ।
हम दोऊ तन-मन-प्राण एक ही जानिये,
दुहुँन प्राण कौ प्राण व्याससुत मानिये ।
छाँड़ि खेल कौ भाव प्रगट जब यौं कही,
तब प्रियतम हू उमगि साखि कीन्ही सही ।
हाँ ललिता यह सत्य-सत्य उर आनिये,
हम तन मन हिय जीय यही निधि जानिये ।
हम अधनी धन-धनी यही दातार हैं,
अति उदार रिझवार खुले दरबार हैं ।
जहाँ नाम हरिवंश प्रिया तहँ देखिये,
प्यारी हू ते प्रथम मोहि तहँ लेखिये ।
दै जु अचल विश्वास दृढ़ाऊँ प्रीति मैं,
अपने बल लै आउँ खैंचि रस-रीति में ।
भूलि स्वप्न हूँ माँहि शरण हित की गहै,
झूठी साँचो होय सु दुर्लभ गति लहै ।
सुनि फूलीं ललितादि बलैयाँ लेत हैं,
चिरजीवौ हरिवंश असीसें देत हैं ।
अटल होय तुव राज जगत सब उद्धरौ,
भोरी हू से महा पतित पावन करौ ।
जय-जय ध्वनि ह्वै रही,सकल लोकन छई,
सुनि हित भोरी दौरि, शरण हित की लई ।
प्यारी जू की प्रीति कही क्यों जावही,
बूँद दिखाये सिंधु न हियरे आवही ।

बधाई

अहो चलि देखौ री रसिकन नैन लाल रँगीलौ व्यास कौ ।
अहो तन मन आनन्द दैन, लाल रँगीलौ व्यास कौ ।।
सार रूप के रूप कौ, यह रस के रस कौ सार ।
दम्पति हिय सुख-सार कोई यह अद्भुत प्रगट्यौ प्यार ।।लाल०।।
मो अँखियन की आँख यह, हिय के हिय कौ सार ।
तन मन कोटिन प्राण बलि, जाके देउँ नाम पै वार ।।लाल०।।
नेह सलिल दृग डहडहे, जाके बरसत प्यारी-पीय ।
रोम-रोम अमृत झरं, मेरौ सहज जिवावें जीय ।।लाल०।।
गोरी की सब गौरता, अरु श्याम श्यामता सार ।
दोउन हिये के हेत की, निधि प्रगटी मेरे लार ।।लाल०।।
प्यारी कौ जु सुहाग पिय, प्यारी पिय कौ भाग ।
दुहुँन भाग कौ भाग मेरे, जगमग सीस सुहाग ।।लाल०।।
छिनु-छिनु में रस सिंधु की, लहरिनु उमड़त रङ्ग ।
दम्पति जीय जिवाबनी, सुधासार सब अङ्ग ।।लाल०।।
देखत ही देखत दृगन, लगत और ही और ।
उलहत छवि सौं छवि नई, ललित मनोहर गौर ।।लाल०।।
कोटि विश्व की माधुरी, महा सार कौ सार ।
सार—सार में नित नयौ, नैन न पावें पार ।।लाल०।।
देखत अन देखौ लगै, हेरत हियौ हिराय ।
मधु मादक मूरलि मधुर, झलकन मति बौराय ।।लाल०।।
मृदुता पग चूमत डरै, छवि दूरहि सौं बलि जाय ।
सरस सुदीठ सनेह की, परसत जीय डराय ।।लाल०।।
सुन्दरता सब विश्व की, करि कोटि गुनी अनुमान ।
नहिं जोग निछावर रोम की, कहँ तुच्छ जु मेरे प्रान ।।लाल०।।
मो मन मोहै सीस सुठि, अरुण जरकसी पाग ।
पर्यौ पेच में पेच मन, पिय प्यारी अनुराग ।।लाल०।।

कुञ्चित कोमल कुटिल लट, रुचिर मनोहर श्याम ।
अलि कुल व्याकुल ह्वै चल्यौ, पद -पंकज तकि ठाम ।।लाल०।।
उन्नत भाल विशाल पर, सोहत तिलक ललाम ।
ता मधि नाम जु राधिका, सेवत बैंदी श्याम ।।लाल०।।
ललित भौंह सोहै बनी, पत्रावली सुरंग ।
मानहुँ काम कमान ढिग, कुसुमन कौ जु निषंग ।।लाल०।।
अरुण श्याम सित चखन पै, पियौं जु पानी वार ।
हित पिय-प्यारी सहज ही, मिले रहत अति प्यार ।।लाल०।।
जलधि सरस उमड़े रहैं, करुणा तुङ्ग तरङ्ग ।
जलधर लौं बरसैं सदा, गौर श्याम विवि रङ्ग ।।लाल०।।
इन नैनन सौं होय जब, जिन नैनन कौ मेलि ।
तब सूझै वृन्दा विपिन, कुंज माधुरी केलि ।।लाल०।।
एकमेक ह्वै कै रहौ, इन नैनन मो नैन ।
(श्री) वृन्दावन हित माधुरी, अवलोकौं दिन रैन ।।लाल०।।
विलग जो इन ते ह्वै रहैं, ते अँखियाँ जरि जाँय ।
वस्तु न देखैं आँधरी, नित भव-पीर पिराँय ।।लाल०।।
वारौं रुचिर कपोल पर, कोटि आरसी मंजु ।
अति अद्भुत झलकत जहाँ, नील-पीत विवि कंजु ।।लाल०।।
अलक लड़े हित लाड़िले, दुहुँ दिस लिये उछंग ।
प्रिया दाहिनी, वाम पिय, छबि बरसत अँग अंग ।।लाल०।।
गौर-श्याम छबि सिंधु दुहुँ, अति अगाध लहराहिं ।
प्रतिबिंबित मिलि परस्पर, हित अँग-अंगनि माँहि ।।लाल०।।
कै राजैं हित गोद यह, कै हित हियरे माँहि ।
हित दृग हित को दीठ बिनु, देखि सकै कोऊ नाँहि ।।लाल०।।
बेसर में, मोती नचैं, सो कैसै ठहराँय ।
विवि विधु मुख छबि रँग रँगे, ललकि-ललकि लुभियाँय ।।लाल०।।

अरुण अधर की ज्योति मिलि, उज्वल हाँसि सुहात ।
विवि मुख कमलन पं छई, रवि किरणें जनु प्रात ॥लाल०॥
चारु अंस ग्रीवा ललित, गौर श्याम तहाँ वाहि ।
नील पीत कमलन मई, माला पहिरी आहि ॥लाल०॥
भुज विसाल जु मृणाल जुग, सोहत ललित ललाम ।
जिन बिच फूले कमल द्वय, गौर श्याम अभिराम ॥लाल०॥
बलि-बलि हित के हृदय की, प्रेम पयोधि अपार ।
भीतर बाहर लसत जहाँ, हित जोरी सुकुमार ॥लाल०॥
त्रिभुवन में उपमा जिती, लौटत उलटे पाँय ।
परम सूक्ष्म कटि-भाग लौं, कोऊ पहुँचत नाँय ॥लाल०॥
पृथु नितंब रंभा जघन, पद-अम्बुज गज चाल ।
कोटि मदन मन मोहिनी, वैस किशोर रसाल ॥लाल०॥
प्यारी पिय अनुहार सब, रूप रङ्ग अँग अङ्ग ।
उमड़त रोमनि रोम में, पिय प्यारी को रङ्ग ॥लाल०॥
श्री हित-सिंधु अथाह है, पिय प्यारी जु तरङ्ग ।
रोमनि रोम झरे परैं, उमँगि युगल इक सङ्ग ॥लाल०॥
अति जु सूक्ष्म रोमावली, उपमा क्यों कहि जाय ।
जनु निज हित की सूक्ष्मता, प्रगट विराजी आय ॥लाल०॥
नख-सिख लौं यह माधुरी, रमौ जु मो दृग माहिं ।
या छबि सौं बिलगाइकैं, मो दृग अनत न जाहिं ॥लाल०॥
इन नैनन नैना मिलौ, हिय में हिय रहौ भोइ ।
भीतर बाहर एक रस, हित गौर-श्याम तहाँ दोइ ॥लाल०॥
तब लौं जीवन जिन गनौ, बीतत काल वृथाहिं ।
हित चरनन की सरन में, जब लगि आवत नाहिं ॥लाल०॥
दृग सोहै देखौं सदा, लिये गोद दोऊ लाल ।
कै हित दृग हित हृदय में, देखौं केलि रसाल ॥लाल०॥

जियौं तौ ऐसे ही जियौं, देखत निमिष विसारि ।
मरौं तौ या छवि पै मरौं, प्राण निछावर वारि ।।लाल०।।
बरस-गाँठ रीझन यही, जाँचों गोद पसार ।
भोरी हित बलि बकसियौ, हित रिझबार उदार ।।लाल०।।

❀ गजल बधाई ❀

अनूठा आज मङ्गल है चलौ मिलि व्यास घर आली ।
कुंवरि कीरति औ नँदलाला, हुए हितरूप धरि आली ।।
मिटी अब मैंड़ वेदों की बही सब लोक की लज्जा ।
चढ़ा है प्रेम का दरिया, उमड़ता जोर पर आली ।।
अजब वह चाँद सा मुखड़ा, गजब मुसिकन जुन्हैया सी ।
कि तन-मन होवै मतवाला, जु देखै भर नजर आली ।।
जुगल मन हित के साँचे में ढलो कञ्चन सी यह मूरति ।
कि हौं कन्दर्प न्यौछावर चरण-रज चूम कर आली ।।
उमड़ता रोम-रोमों में अजब दरिया है लावन का ।
बरसता प्रेम का झरना लगो करुणा की झर आली ।।
हमें यह राधिकाबल्लभ सदा देने को आया है ।
करम का, काल का, मेटा सभी माया का डर आली ।।
जु रोमनि रोम हौं अँखियाँ जु देखैं एक टक कोई ।
न हो इक रोम, छबि पूरी हजारों कल्प भर आली ।।
अभी कुछ और फिर कुछ और, फिर कुछ और छिन-छिन में ।
जभी देखौ नई मूरत, नया लावन का भर आली ।।
ये धनि-धनि मास माधव की उजारी धन्य ग्यारस है ।
ये धनि-धनि जन्म का उत्सव, सभी रसिकों के घर आली ।।
पड़ी द्वारे पै हित भोरी नजर भर देख लो मुझ को ।
यही दो रीझि, तन-मन-प्राण वारूँ पाँव पर आली ।।

हुआ है जग में उजियाला, हुआ रसिकों का भूपाला ।
यही वृषभानु की बाला, यही है नन्द का लाला ॥
यही मोहन की बंशी है, यही राधा प्रसंसी है ।
यही रस-सर की हंसी है, यही दम्पति की उरमाला ॥
यही नव कुञ्ज की केली, यही अनुराग की बेली ।
यही राधा की निज चेरी, यही मोहन की प्रतिपाला ॥
रसिक रस प्राण भी ये ही, मनावें मान भी ये ही ।
करें हित दान भी ये ही, सदा निज दीन जन पाला ॥
खिलारो खेल मतवारे, खिलौना खेल के प्यारे ।
यही है खेल श्री बन का, खिलाने खेलने वाला ॥
यही हित प्यास का सागर, यही हित प्रेम का पानी ।
यही हित प्रेम का दाता, यही हित प्रेम मतवाला ॥
रसिक घर - घर बधाई है, भली तिथि आज आई है ।
छटा हित प्रेम की छाई, कि कलि-कलमष को धो डाला ॥
रसिक जन भाग जागा है, जुगल अनुराग पागा है ।
ये माँगें रीझि हित भोरी, कि मेटो मोह-जंजाला ॥

(४३९)

सुन्दर अनूप छबि है श्री व्यास जू कौ लाला ।
नख चन्द्र जिसकी चाँदनी, त्रिभुवन हुआ उजाला ॥
नव कुंज नित बिहारी दोनों का हित अपारा ।
उमड़ा प्रवाह आली सँभला नहीं सँभारा ॥
दोनों के हिय में भरि कैं सखियों को रँग में बोरा ।
(स)माया न कुञ्ज बन में वह भूमि पर हिलोरा ॥
अवनी का भाग जागा घर - घर बजी बधाई ।
सो वर्षगाँठ आली हित जू की आज आई ॥
हित से बरसि बहा फिर, होकर के हित की वाणी ।
चौरासी अरु सुधानिधि, फुटकर सुनौं प्रमानी ॥

मही बोरता चला सो रस की हिलोरैं खाता ।
रसिकों को दे रसिकता, साधन का गुण डुबाता ।।
त्वै नाद-बिंदु धारा द्वै रूप में बहा है ।
हित सो प्रभाव अब भी जग में छा रहा है ।।
है आज ही का वो दिन रस रीति जग में आई ।
अद्भुत सु आज मङ्गल, तिहुँ लोक धूम छाई ।।
रसिकों की शुभ सभा है, आनन्द उमँग फूली ।
हित माधुरी की मूरति हित के सनेह झूली ।।
हित भोरी यों असीसैं रस रीति यह अचल हो ।
जग तारने को हित के, दोनों ही कुल अटल हौं ।।

होली

हिलमिल एकहि भाय, रसिक रस होरी खेलें ।
दोऊ रँग दोऊ पिचकारी, दोऊ मेलत धाय ।
दोऊ बरसैं दोऊ भीजैं, दोऊ तन पुलकि चुचाँय ।।
दोऊ मादक दोऊ घूमं, पी-पी मन न अघाँय ।
दोऊ रीझि-रीझि हित भोरी, दोउन पै वलि जाँय ।।

धमार

मम द्रग बरसत रंग, उमगि दोऊ होरी खेलैं ।
गौर श्याम मिलि अंग, उमगि हित फागुन खेलैं ।।
सागर रस लहराय, उमगि । पलकनि में न समाय, उमगि ।
श्री हित सेज सुदेस, उमगि । भरे प्रेम आवेश, उमगि ।
बरसत लोचन कोर, उमगि । दोउ में दोउ सरबोर, उमगि ।
भरन भुजन अति गाढ़, उमगि । छिन-छिन रस की बाढ़, उमगि ।
पानिप पानी रंग, उमगि । पिचकारी अँग - अँग, उमगि ।
कुच कुम-कुम की मार, उमगि । मची मदन रन रारि, उमगि ।
नहिं तन बसन सँभार, उमगि । विलुलित छूटे बार, उमगि ।
मत्त रसासव स्वाद, उमगि । चढ्यौ प्रेम उन्माद, उमगि ।
नहिं तहँ श्याम न गौर, उमगि । छिन-छिन औरहि और, उमगि ।

छिनहि एक छिन दोय, उमगि। हित निधि मथत विलोय, उमगि।
हित सागर मित नाँय, उमगि। महा मत्स्य न समाँय, उमगि।
उरझि-उरझि उरझात, उमगि। अदल बदल ह्वै जाय, उमगि।
अंगनि - अंग सिंगार, उमगि। अंगनि - अंग अहार, उमगि।
झलकनि हित की बूँद, उमगि। पुलकि पलक दृग मूँदि, उमगि।
उर सौं उर मिलि पेलि, उमगि। रस की ठेलम ठेल, उमगि।
अधर-अधर मिलि जोत, उमगि। दामिनि दसन उदोत, उमगि।
मोती मूंगन संग, उमगि। बिलसत अपने रंग, उमगि।
उरज कमल पर आय, उमगि। रहे कमल पर छाय, उमगि।
दोऊ दिसि कमलनि माहि, उमगि। नख ससि दीसत नाहिं, उमगि।
अंग-अंग अद्भुत जोति, उमगि। मिलि-मिलि करत उदोत, उमगि।
ज्योति-ज्योति सौं मेल, उमगि। ज्योति-ज्योति सौं खेल, उमगि।
रस में रस की रेल, उमगि। रस की रस सौं झेल, उमगि।
झूलत सुरत हिंडोर, उमगि। मचकत जोवन जोर, उमगि।
झोटा तरल झकोर, उमगि। बढ़त उरप दुहुँ ओर, उमगि।
विरम-विरम मुख बात, उमगि। पुलकि-पुलकि लपटाय, उमगि।
जल में जल एकमेक, उमगि। को करि सकै विवेक, उमगि।
श्यामल गौर तरंग, उमगि। प्रेम जलधि एक रंक, उमगि।
घुमड़ि-घुमड़ि इक भाइ, उमगि। स्वेद फेन झलकाय, उमगि।
नीलम कनक खचाइ, उमगि। जनु मोती दिये छाय, उमगि।
तन मन प्राननि प्रान, उमगि। डूबि - डूबि उछरान, उमगि।
एक होय अकुलाँय, उमगि। विलगि होय पछिताँय, उमगि।
मिले रहैं दिन रात, उमगि। मिलिवे कौं अकुलात, उमगि।
मिले मिलन ललकाहिं, उमगि। मनहुँ मिले ही नाहिं, उमगि।
बीते कल्प अपार, उमगि। इक रस करत बिहार, उमगि।
भई न तौहू चिन्हार, उमगि। अद्भुत मूरति प्यार, उमगि।
नित नव दुलहिनि बाल, उमगि। नित नव दूलह लाल, उमगि।

नित नव संग कराय, उमगि। अंगनि अंग मिलाइ, उमगि।
लाड़त हित लै हीय, उमगि। तदपि चैन नहिं जीय, उमगि।
पानी प्यासौ होय, उमगि। सो कहँ पीवै तोय, उमगि।
प्यास ललकि जल होय, उमगि। पियत प्यास ही सोय, उमगि।
दोऊ सागर रंग, उमगि। नहिं जल तहँ न तरंग, उमगि।
उमड़नि-घुमड़नि क्षोभ, उमगि। दोऊ लोभ ही लोभ, उमगि।
सो इक घुमड़ उमंग, उमगि। गौरश्याम विव रंग, उमगि।
प्यारी प्रियतम रूप, उमगि। प्यारौ प्रिया स्वरूप, उमगि।
प्यारी पीय न कोय, उमगि। हित विलसत वपु दोय, उमगि।
तामें सहज मिलाप, उमगि। सहज विरह की ताप, उमगि।
पान छकन रस स्वाद, उमगि। चाह ताप उन्माद, उमगि।
काल क्रिया क्रम नाँय, उमगि। कहत कह्यौ नहिं जाय, उमगि।
सकल अंग भये नैंन, उमगि। देखत पलक परैं न, उमगि।
गये कलप यों बीति, उमगि। नहिं दरसन परतीति, उमगि।
ललकि-ललकि अकुलाँय, उमगि। मनहुँ मिले ही नाँय, उमगि।
अँग-अँग की यह रीति, उमगि। विरह मिलन परतीति, उमगि।
प्यासे पियें न अघाहिं, उमगि। प्यासे रहत सदाहिं, उमगि।
पियत प्यास कौं प्यास, उमगि। कहा तृप्ति की आस, उमगि।
हित मादक उन्माद, उमगि। अति अद्भुत रस स्वाद, उमगि।
अति तीखौ अति मिष्ट, उमगि। अति पैनौं अति इष्ट, उमगि।
किरचि-किरचि करि हीय, उमगि। अतिहि जुड़ावत जीय, उमगि।
बढ़त फूल में फूल, उमगि। तन-मन की तहँ भूल, उमगि।
भूल फूल कौ खेल, उमगि। फूलि-फूलि रस झेल, उमगि।
यह हित अँखियन खेल, उमगि। नहीं काम-रस केलि, उमगि।
नहीं वर वधू न कोय, उमगि। हित दृग तारे दोय, उमगि।
हित दृग सागर रंग, उमगि। उमड़त तुंग तरंग, उमगि।

हित के हिय कौ प्यार, उमगि । हित कौ लाड़ अपार, उमगि ।
हित के हित कौ प्यार, उमगि । हित कौ लाड़ अपार, उमगि ।
हित ललकन हित प्यास, उमगि । हित कौ सुरत विलास, उमगि ।
हित सिज्या हित धाम, उमगि । हित के आठौं याम, उमगि ।
हित आतमा हित प्रान, उमगि । हित बिनु तहँ नहिं आन, उमगि ।
हित कौ हित आवेश, उमगि । नहीं प्राकृत कौ लेश, उमगि ।
श्रीहित कृपा जु होय यह, उमगि । यह रस समझै सोय, उमगि ।
हित ही के दृग होय, उमगि । और न परसै कोय, उमगि ।
विधि हरि-हर ललचाहिं, उमगि । तिन उर आवत नाहिं, उमगि ।
निगम अगोचर रीति, उमगि । सर्वोपरि हित प्रीति, उमगि ।
सो हित भोरी गाइ, उमगि । कृपा कोर बलि जाइ, उमगि ।

❀ स्फुट-पद ❀

श्री वृन्दावन तोहि करूँ परनाम ।
रँग भरी केलि करत जहाँ नित-नित, रँग भरे श्यामा श्याम ।
रँग भरौ यमुना तीर सुहायौ, रँग भरे राजत धाम ।।
रँग भरे कुञ्ज लता तरु पल्लव, शोभा अति अभिराम ।
रँग भरे खग रँग भरे द्रुमन पै, टेरत राधा नाम ।।
रँग भरी ललित रागनी गावत, रँग भरी सहचरि वाम ।
भोरी हृदय रंग में बोरौ, देहु प्रीति निष्काम ।।

।। दोहा ।।

मृदुल मूर्ति सुकुमार अति, दीठ छुअत कुम्हलाय ।
देखें बिना न जी सकौं, देखत जीय डराय ।।१।।
सुख अपनौ चाहै नहीं, यही प्रीति की रीति ।
पै बिच लोचन लालची, बरबस करत अनीति ।।२।।
बीतत जो मो जीय पै, सुनि दुख पैहौ हाय ।
कह न सकौं ना सह सकौं, चुप हू रहौ न जाय ।।३।।

श्री यमुना के नीर लौं, दिन-दिन आपहि आप ।
थिर न रहौं व्याकुल बहौं, सूखत हौं चुपचाप ।।४।।
अङ्गन अङ्ग मिलाइ कैं, इकठौं बैठिय जोय ।
पै हिय सौं हिय बिनु मिले, शत योजन बिच होय ।।५।।
ना काहू सों बोलिबो, ना कोई व्यवहार ।
अपनी कुँवरि कृपालु कौं, जियत निहार-निहार ।।६।।

(४४४)

राजी रहौ हँसौ ही मुख छवि नहिं तुमसों कछु चहिये ।
जी देकर जी के सुख दुख की चरचा किस मुख कहिये ।
हिय कौ दरद छिपाये हिय में मुख मूँदै सब सहिये ।।
जहँ कोऊ देखै सुनै न जानै तहँ कहुँ बैठि करहिये ।
हित भोरी मुख कमल माधुरी, सदा सराहत रहिये ।।

(४४५)

ह्वै है कब चैन, जब देखौं भरि नैन ।
जब राखौं भरि नैन, कैधौं नैन करि राखौंरी ।।
ह्वै हैं दोऊ नैन, तब पै हौं क्यौं चैन ।
तब देखे बिनु नैन,तृषित व्याकुल अभिलाखौंरी ।।
जब ही बिलगाऊँ, तब मिलिबे अकुलाउँ ।
जब रसही ह्वै जाउँ कहा स्वाद जाहि चाखौंरी ।।
मिलेहू मिलत ना पलहू बिलगात नहीं ।
बलि भोरी हित रूप, जापै बारि प्राण नाखौंरी ।।

(४४६)

कबहुँ-कबहुँ मन में यों आवै क्यों अभिमान न करिये ।
अपने प्रभु की ओर देखि टुक त्रिभुवन क्यों न निदरिये ।।
नहिं गुण नहि बल भागन वैभव सान संक उर धरिये ।
आप समान आन नहिं देखौं फूली गरब जु मरिये ।।

गुण मेरी हरिवंश लाड़िलौ जाकी ज्योतिन बरिये ।
बलि मेरो हरिवंश लाड़िलौ गरजत काहु न डरिये ।।
जगमगात हरिवंश भाग मम सकल सोच परिहरिये ।
वैभव अति अपार हित दम्पति बिलसि बिलसि मुद भरिये ।।
फिर आवत हिय यों नहिं बकिये निपट गरीबी ढरिये ।
हित भोरी हित बपु जु दीनता सपनेहु सो न बिसरिये ।।

(४४७)

कौन प्यास तृप्ति रूप, कौन तृप्ति प्यास मई ।
प्रेम कौ अनूठौ खेल कैसें हियें लाईये ।।
कौन विरह मिलन रूप, विरह रूप मिलन कौन ।
विरह मिलन एक जहाँ कौन स्वाद पाईये ।।
कौन प्रिया पीय रूप, प्रिया रूप पीय कहाँ ।
प्रिया-पीय एकमेक कैसे कै मिलाईये ।।
जुगल हीय कुञ्ज जहाँ जुगल केलि होत तहाँ ।
जुगल हृदय वृत्ति होय कैसे कै लड़ाईये ।।
मनहू न आवै जौन बुद्धि हू न पहुँचै जहाँ ।
अद्भुत हित रूप हहा भोरी कैसे पाईये ।।

(४४८)

कौन रूप कौन रङ्ग कौन शोभा अङ्ग-अङ्ग,
माधुरी अपार ताहि रञ्चकौऊ जानैना ।
लाड़िली कौ रूप लाल प्यारो नित्य देखै ताहि,
बीते किते कल्प तऊ देख्यौ नेकु मानैना ।।
लाड़िले कौ रूप त्योंही लाड़िली न पावै थाह,
कुञ्ज की निकाई भूले दोऊ कोऊ छानैना ।।
हित कौ स्वरूप जहाँ देखिये न पार कहूँ,
देखै भरि नैन सोतौ काहू कौं पिछानैना ।
भोरी बलिहार मोपै कीजिये कृपा की कोर,
यही सोच नैन यहाँ आजु लौं हिरानेना ।।

प्यारी हौं तेरी भौंहैं देखि डरात ।
सहज सुभाव सामुहे देखत, बिनु कारण सतरात ।
कुटिल कटाच्छ बाण तीच्छन जुत, ज्यों कमान झुकि जात ।।
मेरे हिय के सन्मुख हा - हा, विकट तकत हैं घात ।
मन मेरौ भय बिकल पखेरू, दखि निपट घबरात ।।
उड़न चहत उड़ जाय न डरसों, चैन नहीं दिन रात ।
तबहीं तौ कछु धीरज आवै, जब तैं मृदु मुसिकात ।।
यह रस सुधा पान कौं ललकत, मेरौ मन अकुलात ।
हा हरिवंश कृपा कब करिहौ, हित भोरी बलि जात ।।

(४५०)

छूटी लट अब तैं न सम्हार ।
जैहैं उरझि अरी दृग तेरे अद्‌भुत रूप निहार ।।
इनके फंद परचौ क्यों निकसै श्याम सरीख बार ।
तासों विनय मानि लै मेरी तोपै पियों जल वार ।।
तैं अति भोरी लाड़ लड़ैती यातै अति रिझवार ।
हौं अति सुभग बनाऊँ इनकौं रचि-रचि गूँथि सँभार ।।
कब यह भाँति कहौं कछु बातैं नव-नव युक्ति बिचार ।
हँसि-हँसि सेवा देहु किशोरी नव निकुञ्ज सरकार ।।
तन-मन अति अकुलात लाड़िली हौंसन मरत गँवार ।
भोरी हित अब आस रावरी ठाड़ी गोद पसार ।।

।। कुँडलियाँ ।।

रैन अँधेरी श्याम घन ढूँढ़त श्यामा श्याम ।
कौन भाग भटकत फिरौं श्री वृन्दावन धाम ।।
श्री वृन्दावन धाम चुबत दृग अँसुवन धारा ।
खगमृग पुलकित वृक्ष उमगि जब करहुँ पुकारा ।।
खगमृग पुलकित वृक्ष उमगि ढिग लैहैं टेरी ।
भोरी हित केहि भाग सघन बन रैन अँधेरी ।।

(४५२)

रैन अँधेरी मेह झर पवन चलत झकझोर ।
नौका टूटी राखियौ हित हरिवंश किशोर ।।
हित हरिवंश किशोर बोझ पापन कौ भारी ।
भवनिधि ओर न छोर परी अब तौ मँझधारी ।।
भवनिधि ओर न छोर शरण करुणानिधि तेरी ।
भोरी हित तट दूर मेह अरु रैन अँधेरी ।।

(४५३)

सब कोउ हँसत हमें हित प्यारे ।
तुम किन हँसौ छिनक ह्वै सनमुख रसिक सभा रखवारे ।।
इन्द्रिय हँसत हँसत पुनि देही विषय देत दुख भारे ।
मन खल हँसत हँसावत चहुँदिशि दया न नेक विचारे ।।
मीच हँसत लखि विषय भुलानौ जम हँसि बाँह पसारे ।
सब जन हँसत निलजता देखत कुल की मेड़ बिसारे ।।
तियगन हँसत चलावत भौंहन भरि अभिमान निहारे ।
जनु यह कहत जगत हम जीतौ यह खल कौन उबारे ।।
त्रिभुवन विजयी सुभट कुसुम सर हँसत चाँप टंकारे ।
हारेहू पग परत न मानत तकि-तकि बानन मारे ।।
डूबत भव जग जुरौ तमाशौ सब कोउ हँसि किलकारे ।
तरसत तऊ तुमहिं देखन कौं हँसि बरसात सुधारे ।।
सब जग हँसत देखि हिय फाटौ प्रफुलित हँसत तुम्हारे ।
सो मृदु हास स्वप्नहू दुर्लभ ऐसे भाग्य हमारे ।।
ऐहो परम कृपाल लाड़िले पोच निवाहन हारे ।
भोरी हित क्यों ना अब उमगत व्यास भवन उजियारे ।।

(४५४)

जब जब ऐसी बात सुनत हौं तब तब हियरा अधिक डरावै ।
कनक कामिनी में मन जौलौं तौलौं श्याम न हिय में आवै ।
मैं मन बैठि बहुत सोचत हौं कनक कामिनी कौन छुड़ावै ।

जो यह बात बनैं ना तुम सों तौ हम पै कैसै बनि आवै ।
कनक कामिनी ग्राह ग्रसित गज माया सर बूड़त घबरावै ।।
निज उद्यम जो छूटि सकै तौ शरण - शरण क्यों टेर बुलावै ।
निबल मन्दमति पामर पापी अति भयभीत जु टेरि लगावै ।।
कनक कामिनी जीति कौन विधि कहौ नाथ सो तुमहिं रिझावै ।
डूबत मध्य भौंर सो कैसें सिंधु पैर तुम ढिग तट धावै ।।
जदपि दवार चहुँ दिशि व्यापी बिनु पर पंछी क्यों जु उड़ावै ।
तुम राखौ तौ मारि सकै को तुम त्यागौ तौ कौन जिवावै ।।
तुम सिरमौर सबल सर्वोपर तुमसौं बड़ौ न कोऊ दिखावै ।
तुम आवौ हिय को बलि रोकै तुम पकरौ भुज को छुटकावै ।।
कनक कामिनी कहा बिगारै जो कृपाल जनकों अपनावै ।
माया कौन अभाग कहाँ कौ कौन नियति को कर्म कहावै ।।
तनक कृपा कोरनि अवलोकनि छिन में कोटि विश्व तरिजावै ।
तुम जु रुकौ डरपौ सकुचावौ तौ अब कौन जु पार लगावै ।।
तुम समरथ हरिवंश शीश पै हित भोरी सब भय बिसरावै ।
परी रहत द्वारैं धरि आसा डरत न कोउ कितौ डरपावै ।।

(४५५)

श्रीहित दम्पति रंग रँगीले रसिकनि की बलिहारी हौं ।
श्रीहित चरण उपासक जन के चरण कमल पर वारी हौं ।।
हित हरिवंश नाम जे सुमिरत तिन दासन की दासी हौं ।
हित भोरी हित बिन्दु नाद कुल कृपा कोर की प्यासी हौं ।।

(४५६)

जे हित गिरा माधुरी छाके प्रेम सुधा मतवारे हैं ।
जे हित कृपा कोर पै बारे तन मन जीवन हारे हैं ।।
जे हित धर्म सुनावत समुझत उपदेशत ब्रत धारे हैं ।
भोरी हित बलिहारी उनकी जे हित के हितवारे हैं ।।

एकबार छबि देखी तिनकों त्रिभुवन तृन सा लागै है ।
इस दर का जु भिखारी उससे सब जग भिक्षा मागै है ।।
जो ह्याँ का फिर सो न अनत का दंपति पानिप पागै है ।
हित भोरी मतबारा बेसुध सोता सा जग जागै है ।।

(४५८)

श्रीहित नाम बिचारा जबही हियरे हुआ उजाला है ।
अब किसके मुंह मांगे याचक हुआ प्रेम मतवाला है ।।
आँखों भरें लरी मुतियों की तन पर पुलकि निराला है ।
भोरी हित लखि तन-मन भूला पियाजु पानिप प्याला है ।।

(४५९)

अब तो क्या इस छबि पर वारौं यही सोच उर आवै है ।
पल-पल रोम-रोम पर तन मन कोटिनु तुच्छ दिखावै है ।।
कोटि विश्व इक रोम निछावर तउ संतोष न आवै है ।
करना दूर, बनै न मनोरथ भोरी मन पछतावै है ।।

(४६०)

कृपा की कोर टुक हेरौं बधाई जन्म की प्यारे ।
न अब जाचक से मुंह फेरौ बधाई जन्म की प्यारे ।।
न मांगू राजपदवी को न चाहूं स्वर्ग मुक्ति को ।
न जांचू द्रव्य बहुतेरौ बधाई जन्म की प्यारे ।।
जरा दृग सामने आना जरा आँखों में मुसिकाना ।
जरा हँसि अपना कहि टेरौ बधाई जन्म की प्यारे ।।
ये कहदो अब कि तुम मेरे ये कहदो हँस कि हम तेरे ।
अभय कर शीष पर फेरौ बधाई जन्म की प्यारे ।।
सदा का अब यह नाता है यही भोरी को भाता है ।
न आवै इसमें झकझेरौ बधाई जन्म की प्यारे ।।

(४६१)

कृपा की कोर हित करना बधाई जन्म की तेरे ।
मुझे है द्वार पर अरना बधाई जन्म की तेरे ।।

निछावर प्राण धन वारू पलक छवि देख जो पाऊँ ।
बकस दे देखते मरना बधाई जन्म की तेरे ।।
उमगतीं आँख की कोरें हिलोरें प्रेम की लेकर ।
बरसते रोम छवि झरना बधाई जन्म की तेरे ।।
ललित ओठों की लाली पर निराली दाँत की चमकन ।
जरा मुस्काके मन हरना बधाई जन्म की तेरे ।।
पड़ी हूँ खाक सी होकर तेरे कूचे में आशा से ।
कभी आँखों में पग धरना बधाई जन्म की तेरे ।।
सुधा पानिप पिया देना मृतक देही जिया लेना ।
कहूँ क्या रीझ भुज भरना बधाई जन्म की तेरे ।।
न इस लायक हूँ हा प्यारे कि चरणों लो लगा प्यारे ।
ढरन अपनी मगर ढुरना बधाई जन्म की तेरे ।।
बना लेना जु बन पाऊँ न बन पाऊँ निभा लेना ।
मगर निज प्रण से मत टरना बधाई जन्म की तेरे ।।
मिटादो जग का सुख सपना फिराओ मस्त कर अपना ।
उमग दो नाम का रटना बधाई जन्म की तेरे ।।
न मेरे पार पापों का न नर्कों तक में गुंजायश ।
तेरे द्वारे दिया धरना बधाई जन्म की तेरे ।।
न जानों भाग गति मुक्ति बना कुछ भी न बनता है ।
न समझूँ डूबना तरना बधाई जन्म की तेरे ।।
तेरे द्वारे की दासी हूँ तेरे पानिप की प्यासी हूँ ।
पिला छवि चाहे जो करना बधाई जन्म की तेरे ।।
तुही बल भाग है मेरा कहाता दीन क्यों वानी ।
बहुत सुन ली उमँग परना बधाई जन्म की तेरे ।।
बरस की गाँठ है तेरी पसारे गोद हूँ कह दे ।
कि हित भोरी न अब डरना बधाई जन्म की तेरे ।।